एक कहानी कई रंग–4 ः

छह हंस जैसी कहानियॉ

संकलन और अनुवाद
सुषमा गुप्ता

2022

Book Title: Chhah Hans JaIsi Kahaniyan (Six Swans Like Stories)
Cover Page picture : A Swan Swimmimg in Water
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World

विंडसर, कैनेडा
2022

Contents

एक कहानी कई रंग 5
छह हंस जैसी कहानियॉ 7
1 छह हंस 9
2 सात रैवन 22
3 बारह भाई 29
4 बारह बैल 40
5 सात साल तक चुप 49
6 जंगली हंस 61
7 बारह जंगली हंस 96
8 बारह जंगली बतखें 108
9 सात बच्चों का शाप 123
10 उडीया और उसके सात भाई 133
11 जादुई हंसिनी 155
12 सात फाख्ताऐं 163

एक कहानी कई रंग

लोक कथाओं के महत्व को ध्यान में रखते हुए कुछ समय पहले हमने संसार के सब देशों से कुछ लोक कथाऐं संकलित की थीं। उनको हमने "देश विदेश की लोक कथाऐं" सीरीज़ में प्रकाशित किया था। वे कथाऐं जब काफी संख्या में इकट्ठी हो गयीं, करीब करीब **2000,** तो उनमें एक तस्वीर देखी गयी। वह थी कि उनमें से कुछ कहानियॉ एक सी थीं और आपस में बहुत मिलती जुलती थीं।

तो लोक कथाओं की एक और सीरीज़ शुरू की गयी और वह है "एक कहानी कई रंग"। कितना अच्छा लगता है जब एक ही कहानी के हमें कई रूप पढ़ने को मिलते हैं। इन पुस्तकों में कुछ इसी तरह की कहानियॉ दी गयी हैं। सबसे पहले इसमें सबसे ज़्यादा लोकप्रिय कहानी दी गयी है और उसके बाद ही उसके जैसी दूसरी कहानियॉ दी गयी हैं जो दूसरी जगहों पर पायी जाती हैं। हम यह दावा तो नहीं करते कि हम वैसी सारी कहानियॉ यहॉ दे रहे हैं पर हमारी कोशिश यही रहेगी कि हम वैसी ज़्यादा से ज़्यादा कहानियॉ एक जगह इकट्ठा कर दें।

इस सीरीज़ में बहुत सारी पुस्तकें हैं जो यह बताती हैं कि केवल **2–4** कहानियॉ ही ऐसी नहीं हैं जो सारे संसार में कई जगह पायी जाती हों बल्कि बहुत सारी कहानियॉ ऐसी हैं जो अपने अपने तरीके से भिन्न भिन्न जगहों पर कही सुनी जाती हैं। इनमें सिन्डरैला, टाम थम्ब, बिल्ला और चुहिया, सोती हुई सुन्दरी, छह हंस[1] आदि मशहूर कहानियॉ दी गयी हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहॉ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में यह जानने की प्रेरणा भी देंगी कि एक ही तरह की कहानी किस तरह से दूसरे देशों में पहुँची। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

[1] Cinderella, Tom Thumb, Cat and Rat, Sleeping Beauty, Six Swans etc stories

छह हंस जैसी कहानियॉ

हमने एक नयी सीरीज़ शुरू की है "एक कहानी कई रंग"। इसमें वे कथाऐं शामिल की गयीं हैं जो सुनने में एक सी लगती हैं पर अलग अलग जगहों पर अलग अलग तरीके से कही सुनी जाती हैं। बच्चों जैसे तुम लोग कहानियॉ सुनते हो वैसे ही दूसरे देशों में भी वहॉ के बच्चे कहानियॉ सुनते हैं। क्योंकि कहानियॉ हर समाज की अलग अलग होती हैं इसलिये उन बच्चों की कहानियॉ भी तुम्हारी कहानियों से अलग हैं।

पर कुछ कहानियॉ ऐसी भी हैं जो भिन्न भिन्न देशों में कही सुनी जाती हैं पर सुनने में एक सी लगती हैं। यहॉ कुछ ऐसी ही कहानियॉ दी जा रही हैं। ये सब कहानियॉ कुछ इस तरह से चुनी गयी हैं कि ये सब कहानियॉ एक सी कहानियों की श्रेणी में रखी जा सकती हैं। ऐसी बहुत सी कहानियॉ हैं। ऐसी कहानियॉ हम "एक कहानी कई रंग" की सीरीज़ के अन्तर्गत प्रकाशित कर रहे हैं। अगर इन कहानियों के अलावा भी तुम और कोई ऐसी कहानी जानते हो तो हमें जरूर लिखना। हम उसको इसके अगले आने वाले संस्करण में शामिल करने का प्रयास करेंगे। इन सभी पुस्तकों में सबसे पहले मूल कहानी दी गयी है फिर उसके बाद वैसी ही दूसरे देशों में कही जाने वाली कहानियॉ कही गयीं हैं। इस सीरीज़ में़ यानी "एक कहानी कई रंग" की सीरीज़ में़ इससे पहले हम सात पुस्तकें प्रकाशित कर चुके हैं।

इन कहानियों की सीरीज़ में सबसे पहली पुस्तक थी "बिल्ला और चुहिया जैसी कहानियॉ"। इस पुस्तक में कुछ ऐसी कहानियॉ हैं जिनमें कोई एक किसी से कोई काम कराना चाहता है पर वह दूसरा उस काम को तब तक नहीं करता जब तक उसकी अपनी शर्त पूरी नहीं हो जाती सो उसको उसकी शर्त पूरी करने के लिये काम करने वाले को कहीं और जाना पड़ता है। और यह कड़ी तब तक चलती रहती है जब तक उसका अपना काम नहीं हो जाता। इसकी तीसरी पुस्तक में "टौम थम्ब जैसी कहानियॉ" दी गयीं हैं। इसमें बहुत छोटे बच्चे की करामातों की कथाऐं हैं।

इस सीरीज़ की यह चौथी पुस्तक है "छह हंस जैसी कहानियॉ" जिसमें कुछ ऐसी कहानियों का संग्रह है जिसकी कहानियों की हीरोइन एक छोटी लड़की साधारणतया सबसे छोटी बहिऩ होती है जो अपने दो या चार या सात भाइयों को पक्षी या जानवर बन जाने के शाप से छुटकारा दिलाती है। ये सब कहानियॉ बहिन भाई के प्यार की कहानियॉ हैं।

1 छह हंस[2]

छह हंस जैसी कहानियों के संग्रह की यह पहली कहानी हम "छह हंस" से ही शुरू करते हैं। छोटी बहिन की यह कथा हमने यूरोप महाद्वीप के जर्मनी देश की लोक कथाओं से ली है। यह कहानी वहॉ बहुत प्रसिद्ध है।

एक बार की बात है कि एक राजा जंगल में शिकार खेलने गया। वहॉ उसको एक जंगली जानवर दिखायी दे गया तो वह उसका पीछा करने लगा।

वह उसका पीछा करने में इतना मग्न हो गया कि उसको अपने साथ आये लोगों का ख्याल ही नहीं रहा। वे सब पीछे छूट गये।

उस जानवर का पीछा करते करते उसको शाम हो गयी। जानवर तो उसके हाथ नहीं लगा पर अब उसको लगा कि वह तो रास्ता भूल गया था। उसने रास्ता ढूँढने की बहुत कोशिश की पर उसको वापस जाने का रास्ता भी नहीं मिला।

तभी उसको एक बुढिया दिखायी दी जो लगातार अपना सिर ऊपर नीचे हिलाती हुई चली आ रही थी। वह उसी की तरफ आ रही थी। वह एक जादूगरनी थी।

---

[2] The Six Swans – a fairy tale from Germany, Europe. Taken from the Web Site : https://sites.pitt.edu/~dash/grimm049.html Collected by Brothers Grimm.
[Andrew Lang has included a variant of this tale in the "Yellow Fairy Book".]
Other tales of this type include "The Magic Swan Geese", "The Seven Ravens", "The Twelve Wild Ducks", "Udea and Her Seven Brothers", "The Wild Swans", and "The Twelve Brothers" etc.

राजा ने उससे पूछा — "मैम, क्या आप मुझे इस जंगल में से बाहर निकलने का रास्ता बता सकती हैं?"

"हॉ हॉ क्यों नहीं राजा साहब। मैं ज़रूर बता सकती हूॅ पर एक शर्त पर। और अगर आप वह शर्त नहीं मानेंगे तो फिर आप कभी इस जंगल में से नहीं निकल पायेंगे और इसी जंगल में भूख से मर जायेंगे।"

राजा ने पूछा — "वह क्या शर्त है?"

बुढ़िया बोली — "मेरी एक बेटी है जो बहुत सुन्दर है। वह आपकी पत्नी बनने लायक भी है। अगर आप उसको अपनी रानी बना लें तो मैं आपको इस जंगल में से निकलने का रास्ता बता सकती हूॅ।"

राजा बहुत दुखी और परेशान था सो वह उसकी बेटी को अपनी रानी बनाने पर राजी हो गया। वह बुढ़िया उसको अपनी छोटी सी झोंपड़ी की तरफ ले चली।

उस झोंपड़ी में उसकी बेटी आग के पास बैठी थी। उसने राजा का इस तरह स्वागत किया जैसे वह उसके आने की उम्मीद में ही बैठी थी।

राजा ने देखा कि वह बहुत सुन्दर थी पर पता नहीं क्यों वह उसको कुछ बहुत अच्छी नहीं लगी। उसको देख कर राजा को मन में कुछ डर सा भी लगा।

पर वह कुछ नहीं कर सकता था सो उसने उस लड़की को अपने घोड़े पर बिठा लिया। बुढ़िया ने उसको रास्ता दिखा दिया और वह उस बुढ़िया कै बेटी को साथ लिये अपने महल आ पहॅुचा। और उस लड़की से उसने शादी कर ली।

राजा की एक रानी पहले से ही थी। उस पत्नी से उसके सात बच्चे थे – छह बेटे और एक बेटी। उसकी वह रानी मर चुकी थी। राजा अपने बच्चों को दुनियॉ की किसी भी चीज़ से ज़्यादा प्यार करता था।

उस लड़की को अपने घर लाने पर राजा को लगा कि शायद सौतेली मॉ उसके बच्चों को ठीक से प्यार न करे और बल्कि शायद उनको तंग भी करे सो उसने अपने बच्चों को एक जंगल में बने अकेले किले में रख दिया।

वह किला जंगल में इतना छिपा हुआ था कि किसी को भी उस किले तक जाने का रास्ता नहीं मिल सकता था यहॉ तक कि राजा को खुद को भी वहॉ तक जाने में मुश्किल होती अगर एक अक्लमन्द स्त्री ने उसको धागे का एक जादुई गोला न दे दिया होता।

जब वह उस धागे के गोले को अपने सामने फेंकता तो वह अपने आप ही खुलता जाता और उसको वहॉ तक जाने का रास्ता दिखाता।

राजा अपने बच्चों को उस किले में रखने के बाद वहॉ इतनी जल्दी जल्दी उनसे मिलने के लिये जाता कि उसकी दूसरी रानी को उसकी गैरहाज़िरी खलने लगी। उसकी यह जानने की उत्सुकता बढ़ी कि राजा जब जंगल में अकेला होता है तो वहॉ क्या करता है।

इस बात को जानने के लिये उसने राजा के नौकरों को बहुत सारे पैसे दिये तो उन्होंने राजा को धोखा दे दिया – उन्होंने रानी को सब कुछ बता दिया।

उन्होंने उसको यह भी बताया कि राजा के पास धागे का एक गोला था जो उसको उस किले तक जाने का रास्ता दिखाता था। अब तो रानी बहुत बेचैन रही जब तक कि उसने यह पता नहीं कर लिया कि धागे का वह जादुई गोला कहॉ रखा था।

फिर उसने कुछ रेशमी कमीजें बनायीं। अपनी मॉ से कुछ जादू सीखा और हर कमीज में एक जादू का टोटका लगा दिया।
एक दिन जब राजा शिकार खेलने जंगल गया तो उसने जादू के टोटके लगी वे कमीजें लीं और धागे का जादुई गोला लिया और जंगल के किले की तरफ चल दी।

उसने वह धागे का गोला अपने आगे फेंक दिया और वह गोला अपने आप खुलता हुआ उसको उस किले का रास्ता दिखाते हुए चल दिया।

बच्चों ने देखा कि कोई उनकी तरफ आ रहा है तो उन्होंने सोचा कि उनके पिता आ रहे होंगे। वे खुशी खुशी उनसे मिलने चल

दिये। रानी ने दूर से ही एक एक कमीज उन सभी बच्चों के ऊपर फेंक दी। जैसे ही वे कमीजें बच्चों के शरीर से छुईं वे सब बच्चे हंस बन कर जंगल में उड़ गये।

यह सब कर के रानी बहुत खुश हुई कि अब उसे सौतेले बच्चों से छुटकारा मिल गया। इत्तफाक से लड़की अपने पिता से मिलने के लिये नहीं भागी थी सो वह हंस बनने से बच गयी पर रानी को यह पता ही नहीं था।

अगले दिन राजा अपने बच्चों से मिलने गया तो वहॉ उसने केवल अपनी बेटी को ही पाया। राजा ने बेटी से पूछा — "बेटी तुम्हारे भाई कहॉ हैं?"

वह बोली — "पिता जी वे लोग तो चले गये और मुझे यहॉ अकेला छोड़ गये।"

फिर उसने राजा को बताया कि किस तरह से उसने अपनी खिड़की में से देखा कि वे हंस बने और जंगल में उड़ कर चले गये। उसने राजा को उनके कुछ पंख भी दिखाये जो वे उस किले के ऑगन में गिरा गये थे और वे उसने उठा लिये थे।

राजा को यह सब सुन कर बहुत दुख हुआ पर वह यह नहीं सोच सका कि यह नीच काम उसकी रानी का है। उसको डर लगा कि कोई उससे उसकी बेटी भी छीन लेगा सो वह उसको अपने साथ ले जाना चाहता था।

पर वह लड़की अब अपनी सौतेली मॉ से इतनी डरी हुई थी कि उसने अपने पिता से प्रार्थना की कि वह उसको उस जंगल वाले किले में एक रात और रुकने दे।

वह बेचारी सोच रही थी कि अब मैं यहॉ और नहीं रुक सकती मुझको अब अपने भाइयों को ढूँढना ही होगा। राजा ने उसकी बात मान ली और वहॉ से चला गया।

जब रात हुई तो वह लड़की किले में से निकल कर जंगल में भाग गयी। वह रात भर जंगल में लगातार चलती रही। और अगले सारे दिन भी जब तक कि वह चलते चलते इतना नहीं थक गयी कि अब वह और नहीं चल सकती थी।

तभी उसको एक शिकारी की झोंपड़ी दिखायी दी। वह उसमें अन्दर चली गयी। वहॉ उसको छह छोटे छोटे पलंग दिखायी दिये पर उसकी हिम्मत नहीं हुई कि वह उनमें किसी एक पर भी लेट जाये। सो वह रात गुजारने के लिये एक पलंग के नीचे नंगी जमीन पर ही लेट गयी।

शाम होने पर उसको किसी के दौड़ने की आवाज सुनायी दी।उसने देखा कि उस झोंपड़ी की खिड़की से छह हंस उड़ कर अन्दर आ रहे थे। वे अन्दर आ कर जमीन पर बैठ गये और एक दूसरे के ऊपर हवा फेंकने लगे जिससे उन सबके सारे पंख नीचे गिर पड़े जैसे उन्होंने अपनी कमीजें उतार दीं हों।

लड़की ने उनकी तरफ देखा तो उसने अपने भाइयों को पहचान लिया। लड़की उनको देख कर बहुत खुश हो गयी और पलंग के नीचे से निकल आयी। उसके भाई भी अपनी बहिन को देख कर बहुत खुश हुए पर वे बहुत देर तक खुश नहीं रहे।

वे अपनी बहिन से बोले — "बहिन, तुम यहॉ नहीं रह सकतीं। यह डाकुओं का घर है। जब वे यहॉ आयेंगे और अगर वे तुमको यहॉ देख लेंगे तो वे तुमको मार देंगे।"

छोटी बहिन ने पूछा — "क्या तुम लोग मेरी रक्षा नहीं कर सकते?"

भाई बोले — "नहीं। हम लोग अपने पंख हर शाम को केवल पन्द्रह मिनट के लिये ही उतार सकते हैं और आदमी की शक्ल में आ सकते हैं। उसके बाद हम फिर हंस की शक्ल में आ जाते हैं।"

लड़की ने रोते हुए पूछा — "क्या कोई ऐसा तरीका नहीं है जिससे तुम लोग फिर से आदमी बन सको।"

भाई बोले — "हमें अफसोस है कि नहीं। बात यह है कि उसकी शर्तें बहुत मुश्किल हैं। हमको हंस की इस शक्ल से आजाद करने के लिये तुमको बिना हॅसे और बिना बात किये छह साल गुजारने होंगे।

और इस बीच तुमको ऐस्टर[3] के फूलों से हमारे लिये छह कमीजें बनानी होंगी। और इस बीच अगर तुम बोली या हॅसी तो तुम्हारी सारी मेहनत बेकार हो जायेगी।"

यह सब बात करते करते ही उनके पन्द्रह मिनट पूरे हो गये थे सो वे फिर से हंस बने और उसी खिड़की से बाहर उड़ गये। लड़की ने सोच लिया कि वह अपने भाइयों को आदमी की शक्ल में ला कर ही रहेगी चाहे इसके लिये उसको अपनी जान ही क्यों न देनी पड़े।

वह उस शिकारी की झोंपड़ी से निकल कर जंगल में चली गयी और रात एक पेड़ के नीचे गुजारी। अगले दिन उसने बहुत सारे ऐस्टर के फूल इकट्ठे किये और उनको सिलना शुरू कर दिया। वह बस वहॉ बैठी बैठी अपना काम ही देखती रहती थी।

अब वह किसी से बोल नहीं सकती थी और हॅसने की तो उसकी कोई इच्छा ही नहीं थी। वहॉ बैठे बैठे उसको काफी समय गुजर गया।

एक दिन वहॉ का राजा उस जंगल में शिकार के लिये आ निकला। उसके साथी उस पेड़ की तरफ आ निकले जहॉ वह लड़की अपने भाइयों के लिये कमीजें बना रही थी।

[3] Aster is a kind of flower. See its picture above

उन्होंने उसको आवाज लगा कर पूछा — "तुम कौन हो?" पर उसने कोई जवाब नहीं दिया।

वे फिर बोले — "नीचे उतर आओ हम तुमको कोई नुकसान नहीं पहुॅचायेंगे।" लड़की ने ना में सिर हिला दिया।

जब उन्होंने उससे कई सवाल पूछे और उससे नीचे उतर आने की जिद की तो उसने यह सोचते हुए कि शायद इससे ये लोग सन्तुष्ट हो जायेंगे उसने अपना सोने का हार नीचे फेंक दिया।

पर वे लोग इस से सन्तुष्ट नहीं हुए तो उसने अपनी कमर की सोने की पेटी नीचे फेंक दी। वे लोग इससे भी सन्तुष्ट नहीं हुए तो फिर उसने अपनी और दूसरी चीजें भी नीचे फेंक दीं जिनके बिना वह रह सकती थी। अब उसके शरीर पर केवल उसकी बनियान ही रह गयी थी।

शिकारी भी उसको छोड़ने वाले नहीं थे। वे पेड़ के ऊपर चढ़े और उस लड़की को उठा कर नीचे ले आये और उसको राजा के पास ले गये।

राजा ने पूछा — "तुम कौन हो और वहॉ उस पेड़ के ऊपर बैठी क्या कर रही थीं?" पर लड़की ने उसकी इस बात का कोई जवाब नहीं दिया।

राजा को जितनी भी भाषाऐं आती थी उसने उन सबमें उससे यह सवाल पूछा पर वह कुछ नहीं बोली। वह इतनी सुन्दर और

भोली लग रही थी कि राजा उसकी सुन्दरता और भोलेपन पर रीझ गया और उससे प्यार करने लगा।

उसने उसको अपना शाल ओढ़ाया उठा कर अपने घोड़े पर अपने सामने बिठाया और अपने किले में ले गया। वहॉ ले जा कर उसने उसे कीमती कपड़े पहनाये तो वह दिन के उजाले जैसी चमक उठी। पर कोई भी उससे एक शब्द भी नहीं कहलवा सका।

जब सब खाना खाने बैठे तो राजा ने उसे अपने पास बिठाया। उसके हर तरह के तौर तरीके ने राजा को इतना मोहित कर लिया कि वह बोल पड़ा "मैं तो इसी लड़की से शादी करूॅगा और किसी से भी नहीं।" कुछ दिनों के बाद उन दोनों की शादी हो गयी।

राजा की मॉ बहुत बुरी थी। वह इस शादी से खुश नहीं थी वह रानी की हर समय बुराई करती रहती थी। वह कहती — "पता नहीं ऐसी रानी हमारे घर में कहॉ से आ गयी है जो बोलती ही नहीं है। यह लड़की राजा के लायक नहीं है।"

एक साल बाद रानी के पहला बच्चा हुआ जब रानी सो रही थी तो राजा की मॉ ने उसको चुरा लिया और रानी के मुॅह पर खून लगा दिया। फिर वह राजा के पास गयी और उससे कहा कि रानी तो अपने बच्चे को ही खा गयी।

राजा को इस बात पर विश्वास ही नहीं हुआ पर वह किसी को अपनी रानी को कोई नुकसान भी नहीं पहुॅचाने देना चाहता था। वह

बेचारी अभी कुछ बोल नहीं सकती थी केवल सारा दिन बैठी बैठी अपने भाइयों के लिये कमीजें सिलती रहती थी।

कुछ समय बाद रानी के एक और बच्चा हुआ – एक बेटा। पर राजा की मॉ ने उसके साथ फिर पहले की तरह से बरताव किया और राजा से फिर से वही शिकायत की कि रानी अपनी बच्चे को खा गयी। राजा को फिर से विश्वास नहीं हुआ।
वह बोला — "यह सब करने के लिये वह बहुत ज़्यादा अच्छी और पवित्र है। वह किसी भी हालत में ऐसा नहीं कर सकती। अगर वह बोल सकती होती और अपने बचाव में कुछ कह सकती होती तो पता चलता कि वह बेकुसूर है।"

पर जब राजा की मॉ ने उसके तीसरे बच्चे के साथ भी ऐसा ही किया और रानी के ऊपर अपने ही बच्चे को खाने का इलजाम लगाया तो रानी फिर अपने बचाव में कुछ न कह सकी क्योंकि उसको बिना बोले ही छह साल गुजारने थे।

पर इस बार राजा की मॉ ने उसको इस जुर्म की सजा में राजा से कह कर आग से जलवा कर मरवाने का इन्तजाम कर लिया। पर इस बीच वह अपने भाइयों के लिये कमीजें बनाती रही।

जिस दिन उसको यह सजा मिलने वाली थी वह छह साल का आखिरी दिन था। अब तक वह न बोली थी और न हॅसी थी। इस तरह से उसने अपने भाइयों को आदमी के रूप में लाने का समय सफलता के साथ बिता दिया था।

उसने अपने भाइयों के लिये अपनी बनायी हुई सारी कमीजें भी खत्म कर ली थीं केवल एक कमीज की बॉयी बॉह जोड़नी रह गयी थी।

जब उसको सजा देने की जगह ले कर आया गया तो वह सारी कमीजें अपने हाथ पर ले कर चली आ रही थी।

उधर आग जलायी जा थी तो उसने चारों तरफ देखा तभी उस को छह हंस वहॉ उड़ते हुए नज़र आये। उनको देख कर वह बहुत खुश हुई कि अब उसके भाई आदमी की शक्ल में आ जायेंगे।

हंस भी अपनी बहिन की तरफ उड़े और उनकी बहिन ने उनके ऊपर वे सब कमीजें डाल दीं। कमीजों के डालते ही उनके पंख नीचे गिर पड़े और वे सब सुन्दर राजकुमार बन गये।

जिस कमीज की बॉयी बॉह नहीं थी वह उसके सबसे छोटे भाई के ऊपर पड़ी सो उसकी बॉयी बॉह वापस नहीं आयी। उसकी जगह हॅस का पंख ही रहा। सब भाइयों ने अपनी बहिन को गले लगाया।

अब वह लड़की बोल सकती थी। सो वह राजा के पास गयी और बोली — "प्रिय, अब मैं बोल सकती हूॅ और अपने ऊपर लगाये गये इलजामों से अपना बचाव कर सकती हूॅ। मैं बिल्कुल बेकुसूर हूॅ और मुझ पर लगाये गये सब इलजाम झूठे हैं।"

फिर उसने राजा को उसकी मॉ के किये गये अत्याचारों की बात बतायी तो राजा की मॉ ने उससे चुराये हुए बच्चे उसको ला कर वापस कर दिये।

सजा के तौर पर राजा ने अपनी मॉ को खम्भे से बॉध कर आग से जलवा दिया। राजा अपनी रानी और उसके छहों भाइयों के साथ आराम से रहने लगे।

2 सात रैवन[4]

एक बहिन और सात भाइयों जैसी यह कथा यूरोप महाद्वीप के जर्मनी देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि एक किसान था जिसके सात बेटे थे पर उसके कोई बेटी नहीं थी। आखिर उसकी पत्नी के एक और बच्चा होने की आशा हुई। जब वह बच्चा पैदा हुआ तो वह एक बेटी थी। बेटी पा कर वह किसान बहुत खुश हुआ।

यह बच्ची बहुत ही छोटी थी और बीमार सी रहती थी। अपनी इसी बीमारी की वजह से किसान को उसका बैप्टाइज़ेशन[5] जल्दी कराना पड़ा।

सो पिता ने अपने एक बेटे को अपनी बेटी के बैप्टाइज़ेशन के लिये पानी लाने[6] के लिये भेजा। उसके दूसरे छह बेटे भी उसके पीछे पीछे भागे।

---

[4] The Seven Ravens – a fairy tale from Germany, Europe. Taken from the Web Site : http://www.sites.pitt.edu/~dash/grimm025.html Collected by Brothers Grimm. Translated by DL Ashliman (2002)
--Georgio A Megas has collected another Greek variant in "Folklales of Greece". In the original oral version, there were three, not seven ravens; one study of German folk tales found that of 31 variants collected after the publication of *Grimms' Fairy Tales*, and only two versions have followed the Grimms in having seven ravens.

[5] Baptization is a religious ceremony for Christians by which they make their children Christian.

[6] In the German version it is to be Baptized and in Greek version it is bringing water from a healing spring

अब क्योंकि हर बेटा यह चाहता था कि वह सबसे पहले अपनी बहिन के बैप्टाइज़ेशन के लिये पानी ले कर जाये तो वह जग जिसमें वे पानी लाने गये थे उनसे कुॅए में गिर पड़ा।

वे सब वहीं के वहीं खड़े रह गये। वे नहीं जानते थे कि अब वे क्या करें। और किसी की यह भी हिम्मत नहीं पड़ रही थी कि वह घर लौट कर जाये।

जब वे बहुत देर तक नहीं लौटे तो पिता का धीरज छूट गया। उसने सोचा कि लगता है कि वे यह भी भूल गये हैं कि वे वहॉ गये किसलिये हैं। उसने सोचा कि वे अधार्मिक बच्चों के साथ खेलने चले गये होंगे।

इस डर से कि कही वह बच्ची बिना बैप्टाइज़ेशन के ही न मर जाये वह गुस्से में भर कर चिल्लाया — "भगवान करे वे सब रैवन[7] बन जायें।"

उसके मुॅह से ये शब्द निकले ही थे कि उसने अपने सिर के ऊपर आसमान में घुर्र घुर्र की आवाज सुनी और ऊपर देखा तो सात काले रैवन आसमान में उड़े जा रहे थे। उसके वे सातों बेटे रैवन बन गये थे।

पिता अपना शाप वापस नहीं ले सकता था। वह अपने सातों बेटों के रैवन बन जाने पर बहुत दुखी था। अब माता पिता को बस अपनी बेटी का ही सहारा था।

[7] Raven is a crow like bird. See the picture above

उनकी बेटी धीरे धीरे बड़ी और ताकतवर होती जा रही थी और सुन्दर भी होती जा रही थी। पहले तो बेटी को पता ही नहीं था कि उसके भाई भी हैं क्योंकि माता पिता उसके सामने कभी उनकी बात ही नहीं करते थे।

पर एक दिन अचानक उसने लोगों को अपने बारे में बात करते सुना। वे कह रहे थे — "यह लड़की सुन्दर तो है पर यह अपने भाइयों के लिये बड़ी बदकिस्मती ले कर आयी है।" यह सुन कर वह बहुत परेशान हो गयी।

वह अपने माता पिता के पास गयी और उसने उनसे अपने भाइयों के बारे में पूछा कि क्या वाकई उसके कोई भाई थे? और अगर थे तो उनका क्या हुआ। वे कहॉ हैं।

अब उसके माता पिता उससे यह भेद और नहीं छिपा सके पर फिर भी बस उन्होंने उससे यही कहा कि यह सब भगवान की इच्छा थी। उसका जन्म तो एक बहाना था उनके जाने का।

यह जान कर कि उसके पिता ने उसके भाइयों को उसकी वजह से शाप दिया था न तो उसके मन में शान्ति थी और न ही चैन। यह बात उस लड़की की आत्मा को कचोटती रही।

उसने सोचा कि वह उनको ढूँढ लेगी और फिर उनको रैवन की ज़िन्दगी से आज़ाद करा लेगी। इसके लिये फिर उसे चाहे कुछ भी क्यों न करना पड़े। सोचते सोचते वह छिप कर अपने भाइयों की तलाश में निकल पड़ी।

उसने अपने घर से कुछ भी नहीं लिया सिवाय एक अॅगूठी के क्योंकि वह उसके माता पिता की याद थी एक डबल रोटी के अपनी भूख मिटाने के लिये एक जग पानी का रास्ते में प्यास बुझाने के लिये और एक छोटी कुरसी अगर वह रास्ते में थक जाये तो बैठने के लिये।

वह चलती गयी चलती गयी धरती के आखीर तक। वहॉ जा कर उसको सूरज मिला पर वह तो बहुत गरम और भयानक था और वह तो छोटे छोटे बच्चों को भी खा जाता था।

वह वहॉ से जल्दी जल्दी भाग ली और फिर चॉद के पास आयी। चॉद बहुत ठंडा था और डरावना और नीच था। वह जब भी किसी बच्चे को देखता तो कहता — "ओह, मुझे तो आदमी के मॉस की खुशबू आ रही है।"

वह वहॉ से भी भाग ली और तारों के पास आ गयी। वे सब उसके लिये बहुत अच्छे थे और उसके साथ ठीक से बरताव कर रहे थे। हर तारा अपनी छोटी सी कुरसी पर बैठा हुआ था।

जब सुबह का तारा[8] निकला तो उसने लड़की को मुर्गे की एक हड्डी दी और कहा — "तम्हारे भाई शीशे के पहाड़ में रहते हैं और बिना इस हड्डी के तुम "शीशे का पहाड़" नहीं खोल सकतीं।"

[8] Shukra Taaraa or Venus Star, also called Morning Star

लड़की ने वह मुर्गे की हड्डी ली और उसको एक कपड़े में सॅभाल कर लपेट लिया। वह फिर आगे चली और जब तक चलती रही जब तक वह शीशे के पहाड़ तक नहीं आ गयी।

उसने देखा कि शीशे के पहाड़ का दरवाजा तो बन्द है सो वह कपड़े में लिपटी हुई मुर्गे की हड्डी निकालने लगी। पर जब उसने कपड़े को खोला तो वह तो खाली था। उसमें तो मुर्गे की हड्डी नहीं थी। तारे ने जो भेंट उसको दी थी वह कहीं खो गयी थी।[9]

अब वह क्या करे। वह अपने भाइयों को बचाना चाहती थी पर शीशे के पहाड़ की चाभी तो उससे खो गयी थी। अब वह उसका दरवाजा कैसे खोले।

उसने एक काम किया। उसने एक चाकू लिया अपनी सबसे छोटी उॅगली काटी और अपनी उॅगली उस शीशे के पहाड़ में बने ताले के छेद में घुसा दी। लो दरवाजा तो तुरन्त ही खुल गया।

वह उस पहाड़ के अन्दर चली गयी। पहाड़ के अन्दर जा कर उसको एक बौना मिला। बौना बोला — "मेरी बच्ची, तुम यहॉ क्या ढूॅढ रही हो?"

लड़की बोली — "मैं यहॉ अपने भाइयों को ढूॅढ रही हूॅ – सात रैवन।

[9] In the Greek vrrsion she had lost her bat's foot. She chops off her one finger and used it as a key.

बौना बोला — "मालिक रैवन तो अभी यहॉ नहीं हैं पर अगर तुम उनके लिये उनके वापस आने तक इन्तजार करना चाहती हो तो अन्दर आ जाओ।" सो वह लड़की अन्दर जा कर बैठ गयी।

इसके बाद वह बौना रैवन के लिये सात छोटी छोटी प्लेटों और सात छोटे छोटे प्यालों मे खाना लेगया। रैवन की बहिन ने उन सातों रैवन के प्लेट प्यालों मे से थोड़ा थोड़ा खाना खाया और फिर सातवें प्याले में अपनी वह ऑगूठी छोड़ दी जो वह अपने साथ ले कर आयी थी। खा पी कर वह दरवाजे के पीछे छिप गयी।

अचानक उसने हवा में घुर्र घुर्र की आवाज सुनी तो बौना बोला — "मालिक रैवन आ गये हैं।"

वे घर वापस आये थे और खाना खाना चाहते थे। उन्होंने अपने प्लेट प्यालों की तरफ देखा तो एक के बाद एक बोला — "हमारी प्लेटों में से किसने खाया है? हमारे प्यालों में से किसने पिया है? यह तो किसी आदमी का मुॅह लगता है।"

जब सबसे छोटे भाई ने अपने प्याले में से पीना खत्म किया तो उसमें उसने एक ऑगूठी पड़ी देखी। उसने उसको देखा तो वह उसको पहचान गया कि वह तो उनके माता पिता की ऑगूठी है।

उसके मुॅह से निकला — "भगवान करे हमारी बहिन यहॉ हो तो हम लोग इस रैवन की ज़िन्दगी से आजाद हो जायेंगे।"

यह सुन कर बहिन अपनी छिपी हुई जगह से बाहर निकल आयी। बहिन को देखते ही वे सब आदमी के रूप में आ गये और फिर वे सब लोग खुशी खुशी घर लौट आये।

इस तरह से बहिन ने अपने सात भाइयों को रैवन की ज़िन्दगी से आज़ाद किया।

3 बारह भाई[10]

छह हंस जैसी यह लोक कथा यूरोप के जर्मनी देश की लोक कथाओं से ले गयी है।

एक बार की बात है कि एक राजा और एक रानी थे। उनके बारह बेटे थे और वे सब बहुत खुशी खुशी रहते थे।

एक दिन राजा ने अपनी रानी से कहा — "अगर हमारा तेरहवॉ बच्चा जो बहुत जल्दी ही इस दुनियॉ में आने वाला है लड़की हुई तो हमारे बारह बेटे मर जायेंगे। इससे हमारी उस बेटी की धन दौलत बहुत बढ़ जायेगी और उसको राज्य भी मिल जायेगा।"

इसी प्लान के अनुसार राजा ने बारह ताबूत[11] बनवा लिये और हर ताबूत को उसने लकड़ी की छीलन से भर कर उसमें एक एक तकिया भी रखवा दिया।

फिर उसने उनको एक कमरे में रख कर उस कमरे का ताला लगा दिया और उस कमरे के ताले की चाभी उसने रानी को दे दी। और रानी से कहा कि वह उसके बारे में किसी को कुछ न बताये।

---

[10] The Twelve Brothers – a fairy tale from Germany, Europe.
Written by Jacob and Wilhelm Grimm in Brothers Grimms' book – "Grimms' Fairy Tales", 1857.
This story taken from the Web Site : http://www.sites.pitt.edu/~dash/grimm009.html .
--Andrew Lang has also collected it in his "Red Fairy Book" as "The brothers Who Were Turned In To Birds".

[11] Translated for the word "Coffin". See its picture above.

रानी सारे दिन दुखी बैठी रही। तभी उसके सबसे छोटे बेटे ने उससे पूछा — "मॉ क्या बात है तुम इतनी दुखी क्यों हो?"

उसके इस सबसे छोटे बेटे का नाम बैन्जैमिन[12] था और वह हमेशा अपनी मॉ के साथ ही रहता था। मॉ बोली — "मेरे प्यारे बेटे, मैं यह बात तुमको नहीं बता सकती।"

पर उसका वह बेटा तो उसको चैन से बैठने देने वाला था नहीं और रानी को उसे उस कमरे का दरवाजा खोल कर उसमें रखे ताबूत दिखाने ही पड़े जो लकड़ी की छीलन से भरे हुए थे।

फिर वह रोते रोते बोली — "मेरे प्यारे बैन्जैमिन, तुम्हारे पिता ने ये ताबूत तुम्हारे और तुम्हारे ग्यारह भाइयों के लिये बनवाये हैं। अगर मेरे एक बेटी हुई तो तुम सबको मार कर इनमें दफ़ना दिया जायेगा।"

यह सुन कर उसका बेटा मॉ को तसल्ली देता हुआ बोला — "मॉ तुम रोओ नहीं। हम अपना ख्याल अपने आप रख लेंगे और यहॉ से भाग जायेंगे।"

मॉ बोली — "जाओ बेटा जाओ तुम अपने ग्यारह भाइयों के साथ जंगल में चले जाओ। वहॉ जा कर तुममें से एक को जो सबसे ऊॅचा पेड़ दिखायी दे उस पर चढ़ जाना। वहॉ चढ़ कर इस किले की मीनार की तरफ देखते रहना।

[12] Benjamin – name of the youngest son the King

अगर मेरे बेटा होगा तो मैं एक सफेद झंडा फहरा दूँगी। और अगर मेरे एक बेटी हुई तो मैं एक लाल झंडा फहरा दूँगी। उसको देख कर तुम वहॉ से जल्दी से जल्दी बच कर कहीं दूर भाग जाना।

भगवान तुम्हारी रक्षा करे। मैं हर रात उठ कर तुम्हारे लिये प्रार्थना करूँगी कि जाड़ों में वह तुमको आग के पास रखे ताकि तुम लोग गरम रह सको और गरमियों में तुमको गरमी न सताये।"

जब मॉ ने उनको ऐसा आशीर्वाद दे दिया तो वे सब भाई जंगल में चले गये। वहॉ जा कर बारी बारी से एक के बाद एक भाई एक बड़े से ओक के पेड़ पर चढ़ कर किले की मीनार को देखता रहा।

ग्यारह दिन बाद बैन्जैमिन की बारी आयी तो उसने देखा कि किले की मीनार पर झंडा तो फहरा रहा था पर वह सफेद नहीं था बल्कि लाल था। इसका मतलब यह था कि अब उन सबको मरना था।

दूसरे भाइयों ने यह सुना तो वे बहुत गुस्सा हुए। रोते हुए वे बोले — "क्या हमको केवल एक लड़की की वजह से इतना सब दुख सहना पड़ेगा। हम कसम खाते हैं कि हम इसका बदला जरूर लेंगे। जहॉ भी हमको कोई भी लड़की मिलेगी हम उसका खून बहा देंगे।"

यह कह कर वे और गहरे जंगल में चले गये। वहॉ उस जंगल के बीच में बहुत अँधेरा था। वहीं उनको एक जादुई घर मिल गया जो खाली पड़ा था वे जा कर उसी घर में रहने लगे।

वे बोले — "हम लोग यहीं रहेंगे। और तुम बैन्जैमिन, तुम सब से छोटे हो और सबसे कमजोर हो तुम घर पर ही रहोगे और घर की देखभाल करोगे। हम सब बाहर जायेंगे और खाना ले कर आयेंगे।"

सो इसी इन्तजाम के साथ वे वहॉ रहने लगे। बड़े भाई बाहर जाते तो खरगोश, जंगली हिरन, चिड़ियें, फाख्ता और जो कुछ भी वे खा सकते थे वह सभी कुछ मार कर घर ले आते। वे सब चीज़ें ला कर बैन्जैमिन को दे देते और वह उनको खाने के लिये तैयार करता।

इस तरह से वे उस घर में दस साल तक रहे पर यह समय उनके लिये जल्दी ही बीत गया। उनको पता ही नहीं चला कि उस घर में रहते रहते कब उनको दस साल गुजर गये।

उधर रानी की वह छोटी बेटी भी अब बड़ी हो गयी थी। वह बहुत सुन्दर थी। उसका दिल भी बहुत दयावान था और उसके माथे पर एक सितारा था।

एक बार जब बहुत सारे कपड़े धुल रहे थे तो उसने बारह कमीजें देखीं तो उसने अपनी मॉ से पूछा — "मॉ ये बारह कमीजें किसकी हैं? ये पिता जी की तो नहीं हैं क्योंकि उनके लिये तो ये बहुत छोटी हैं।"

यह सुन कर रानी का दिल भर आया। वह भारी दिल से बोली — "बेटी यह कमीजें तुम्हारे बारह भाइयों की हैं।"

लड़की ने पूछा — "पर मेरे वे बारह भाई हैं कहॉ? मैंने तो कभी उनके बारे सुना भी नहीं।"

रानी बोली — "भगवान ही जानता है वे कहॉ हैं बेटी। वे दुनियॉ में कही घूम रहे होंगे।"

कह कर वह लड़की को उस कमरे की तरफ ले गयी जिसमें दस साल पहले राजा ने बारह ताबूत रखवाये थे। उसने कमरे का ताला खोला और वे बारह ताबूत उसको दिखाये जिनमें लकड़ी की छीलन भरी हुई थी और एक एक तकिया रखा हुआ था।

और बोली — "ये ताबूत तुम्हारे भाइयों के लिये बनवाये गये थे पर तुम्हारे जन्म से पहले ही वे छिपे रूप से यहॉ से भाग गये।" फिर उसने लडकी को सब कुछ बता दिया कि क्या कैसे हुआ था।

लड़की बोली — "मॉ, तुम रोओ नहीं। मैं अपने भाइयों को ढूँढ कर लाऊँगी।" कह कर उसने वे बारह कमीजें उठायीं और जंगल की तरफ चल दी।

सारा दिन चलने के बाद वह घने जंगल में बने उस जादुई मकान के पास आ गयी जिस मकान में उसके भाई रहते थे। वह उस मकान के अन्दर चली गयी। वहॉ उसको एक नौजवान लड़का मिला।

उस लड़की को देख कर उस लड़के को बड़ा आश्चर्य हुआ कि वह कितनी सुन्दर थी। वह शाही कपड़े पहने थी और उसके माथे पर एक सितारा भी था।

लड़की बोली — "मैं एक राजकुमारी हूॅ और मैं अपने बारह भाइयों को ढूॅढ रही हूॅ। मैं उनको ढूॅढने के लिये वहॉ तक चलती रहूॅगी जहॉ तक यह नीला आसमान जाता है।"

फिर उसने उसको वे बारह कमीजें दिखायीं जो उन्हीं की थीं। बैन्जैमिन पहचान गया कि वह उनकी बहिन थी। वह बोला — "मैं बैन्जैमिन हूॅ तुम्हारा सबसे छोटा भाई।"

लड़की यह सुन कर खुशी से रो पड़ी। उसको रोता देख कर बैन्जैमिन भी रो पड़ा। दोनों खुशी से एक दूसरे से लिपट गये। फिर जब बैन्जैमिन सॅभला तो वह बोला — "मैं तुम्हें पहले से ही बता दूॅ कि हम लोगों ने यह फैसला किया था कि हमको जो कोई भी लड़की मिलेगी हम उसको मार देंगे।"

लड़की बोली — "मैं खुशी से मरने के लिये तैयार हूॅ अगर मेरे मरने से मेरे बारह भाई घर लौट आयें तो।"

बैन्जैमिन बोला — "नहीं तुम नहीं मरोगी। तुम इस टब के नीचे बैठ जाओ जब तक हमारे ग्यारह भाई लौट कर आते हैं। फिर मैं उनको सॅभाल लूॅगा।"

सो वह लड़की टब के नीचे बैठ गयी। रात को उनके ग्यारह भाई शिकार पर से वापस आये। जब वे खाना खाने के लिये मेज पर बैठे तो उन्होंने बैन्जैमिन से पूछा — "आज की कोई नयी खबर?"

बैन्जैमिन बोला — "तुमको नहीं पता?"

"नहीं।"

"तुम लोग तो जंगल चले जाते हो और मैं घर में रहता हूँ पर फिर भी मैं तुम लोगों से ज्यादा जानता हूँ।"

वे चिल्लाये — "पर कुछ बताओ भी तो।"

"अगर तुम यह वायदा करो कि जो भी अगली लड़की तुमको मिलेगी तुम उसको मारोगे नहीं तब मैं तुम्हें बता सकता हूँ।"

"अच्छा अच्छा हम उसको नहीं मारेंगे। अब तो बताओ।"

"हमारी बहिन यहॉ है।" और उसने अपनी बहिन के ऊपर से टब उठा दिया। राजकुमारी अपनी शाही पोशाक पहने और अपने माथे पर सितारा लिये उस टब के नीचे से निकल आयी – सुन्दर और कोमल।

उसको देख कर उसके सब भाई बहुत खुश हुए और उसके चारों तरफ नाचने लगे। अब वह घर पर रहती थी और घर के कामों में बैन्जैमिन की सहायता करती थी।

उनके ग्यारह बड़े भाई अभी भी रोज की तरह शिकार के लिये जंगल जाते थे और बैन्जैमिन और उनकी बहिन उस शिकार को सब के लिये पकाते थे।

वे दोनों आग जलाने के लिये लकड़ी इकट्ठा करते, खाना पकाने के लिये मसाले और पत्ते इकट्ठा करते और अपने ग्यारह भाइयों के आने से पहले पहले खाना बना कर रखते।

लड़की घर के दूसरी चीज़ों की देखभाल रखती और सबके बिस्तर ठीक रखती। सब भाई सन्तुष्ट थे और अपनी बहिन से बहुत खुश थे।

एक दिन दोनों भाई बहिनों ने बहुत ही स्वादिष्ट खाना बनाया और सब उसे खुशी खुशी खाते। इत्तफाक से उनके घर के पास में एक छोटा सा बागीचा था जिसमें बारह लिली खिली हुई थीं।

वे लिली लड़की को बहुत अच्छी लगीं सो अपने भाइयों को खुश करने के लिये उसने उस दिन उस बागीचे से वे बारह लिली के फूल चुन लिये ताकि वह एक एक फूल अपने सब भाइयों को उस समय दे सके जब वे खाना खा रहे हों।

पर जब वह वह फूल चुन रही थी तो उसके भाई रैवन में बदल गये और जंगल में ऊपर उड़ गये और वह मकान और बागीचा भी वहॉ से गायब हो गये। वह लड़की वहॉ जंगल में अकेली खड़ी रह गयी।

उसने अपने चारों तरफ देखा तो अपने पास ही एक बुढ़िया को खड़े पाया। वह बुढ़िया उससे बोली — "बेटी, यह तुमने क्या किया? तुमने ये फूल वहीं क्यों नहीं छोड़ दिये? वे तो तुम्हारे भाई थे और उन फूलों के तोड़ने से अब वे हमेशा के लिये रैवन बन गये हैं।"

लड़की यह सुन कर रो पड़ी। रोते रोते बोली — "क्या अब कोई ऐसा रास्ता नहीं है कि वे वापस मेरे भाई बन जायें?"

"नहीं। पर हॉ एक रास्ता है। पर वह इतना मुश्किल है कि तुम वह कभी नहीं कर पाओगी और इसी लिये तुम उनको कभी अपने भाइयों के रूप में नहीं ला पाओगी।

उसके लिये तुमको पूरे सात साल तक बिल्कुल चुप रहना होगा – न तो बोलना ही होगा और न ही हॅसना होगा। अगर तुम्हारे इन सात सालों में एक घंटा भी कम रह गया तो तुम्हारे उस एक शब्द बोलने से तुम्हारे भाई मारे जायेंगे।"

लड़की ने सोच लिया कि वह अपने भाइयों को जरूर वापस ले कर आयेगी। बस वह चल दी और एक ऊॅचा सा पेड़ ढूॅढ कर उस पर चढ. कर बैठ गयी – बिना हॅसे और बिना बोले।

अब हुआ यह कि एक राजा उस जंगल में शिकार के लिये आया हुआ था। उसके पास एक बहुत बड़ा शिकारी कुत्ता था जो लड़की की खुशबू पा कर उसी पेड़ की तरफ दौड़ गया जिस पर वह लड़की बैठी हुई थी।

वहॉ जा कर वह उस पेड़ के चारों तरफ घूमने लगा और ज़ोर ज़ोर से भौंकने लगा। कुत्ते का भौंकना सुन कर राजा उधर आया और उसने ऊपर देखा तो उसको वहॉ एक बहुत सुन्दर सी लड़की बैठी दिखायी दी जिसके माथे पर एक सुनहरा सितारा चमक रहा था।

वह उस लड़की की सुन्दरता से इतना प्रभावित हुआ कि उसने उससे वहीं से चिल्ला कर पूछा — "क्या तुम मुझसे शादी करोगी?"

उस लड़की ने कोई जवाब तो नहीं दिया पर हॉ में अपना सिर हिला दिया।

राजा फिर अपने आप ही उस पेड़ पर चढ़ा और उस लड़की को नीचे उतार कर लाया। उसको अपने घोड़े पर बिठाया और अपने घर ले गया। घर जा कर राजा ने बड़ी धूमधाम से उससे शादी कर ली पर बहू न तो कुछ बोली और न ही हॅसी।

कुछ सालों तक तो वे दोनों खुशी खुशी रहे पर फिर राजा की नीच मॉ ने नयी रानी को बहुत तंग करना शुरू कर दिया।

उसने राजा से कहा — "तुम एक बहुत ही मामूली भिखारिन को घर ले आये हो बेटा। कौन जानता है कि वह चुपचाप हमारे खिलाफ क्या क्या टोने टोटके करती रहती है।

क्योंकि अगर वह गूॅगी भी है और बोल नहीं सकती है तो कम से कम हॅस तो सकती है। और जो कोई हॅस भी नहीं सकता तो इस का मतलब है कि उसकी नीयत खराब है।"

पहले तो राजा को इस बात पर विश्वास नहीं हुआ पर राजा की मॉ ने जब यह बार बार कहा तो फिर राजा को विश्वास करना ही पड़ा और उसने रानी को मौत की सजा सुना दी।

ऑगन में एक बहुत बड़ी आग जलायी गयी जिसमें उसको जला कर मारा जाने वाला था। राजा ऊपर अपनी खिड़की में खड़ा था और यह सब देख देख कर रो रहा था क्योंकि वह अभी भी उस लड़की को बहुत प्यार करता था।

रानी को एक खम्भे से बॉध दिया गया था आग जला दी गयी थी और उसकी लपटें उठ उठ कर रानी के कपड़ों तक आ रहीं थीं।

तभी सात सालों का आखिरी पल बीत गया और आसमान में पंखों के फड़फड़ाने की आवाज सुनायी दी। सबने ऊपर देखा तो बारह रैवन धरती पर एक साथ उतर रहे थे।

जैसे ही वे धरती पर उतरे वे रैवन से रानी के भाई बन गये। रानी ने अपनी मेहनत से उनको रैवन से अपने भाइयों में बदल लिया था।

उन्होंने तुरन्त ही उस आग को बुझा दिया और अपनी बहिन को खोल दिया। अब वह बोल सकती थी। सो अब उसने राजा को बताया कि वह क्यों नहीं बोली थी और क्यों नहीं हॅसी थी।
राजा यह जान कर बहुत खुश हुआ कि वह बिल्कुल बेगुनाह थी।
उसके बाद वे जब तक जिन्दा रहे सब खुशी खुशी रहे।

राजा की नीच मॉ को राजा के दरबार में लाया गया और उसको उबलते हुए तेल और जहरीले सॉपों के एक बैरल[13] में डाल दिया गया। इस तरह वह बहुत बुरी मौत मारी गयी।

[13] Barrel – a cylindrical wooden container with slightly bulging sides made of wooden stripes hooped together, and with flat, parallel ends. There are some standard quantities it can hold : for most liquids – 31 1/2 US Gallons (119 L) for petroleum it is 42 US Gallons (159 L) etc – see the picture above

4 बारह बैल[14]

छह हंस जैसी कहानियों के इस संग्रह की यह कहानी यूरोप के इटली देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार बारह भाई थे जिनकी एक बार अपने माता पिता से लड़ाई हो गयी और वे घर छोड़ कर चले गये। उन्होंने जंगल में जा कर अपना एक घर बना लिया और वहॉ रह कर बढ़ई का काम कर के अपनी ज़िन्दगी गुजारने लगे।

इस बीच में उनके माता पिता के एक बेटी हो गयी। अपने बारह भाइयों के जाने के बाद वह अपने माता पिता के लिये बहुत खुशी ले कर आयी। बच्ची बिना अपने भाइयों को देखे हुए ही बड़ी होती रही।

वह उनके बारे में केवल सुनती ही थी। अब क्योंकि उसने उनको देखा नहीं था इसलिये उसकी उनको देखने की बहुत इच्छा थी।

एक दिन वह एक फव्वारे में नहाने गयी तो सबसे पहले उसने अपने मूँगे का हार[15] उतार कर वहॉ पास के एक पेड़ की एक डंडी

[14] The Twelve Oxen. A folktale from Italy from its Monteferrat area. Taken from the Book "Folktales of Italy" by Italo Calvino, selected by George Martin. 1980.

[15] Coral necklace. Coral is precious gem and comes in many colors.

पर टॉग दिया। तभी वहॉ एक रैवन[16] आया और उस हार को उठा कर ले उड़ा।

लड़की अपना हार लेने के लिये उसके पीछे पीछे जंगल में दौड़ी तो वह अपने भाइयों के मकान में पहुॅच गयी।

वह जब वहॉ पहुॅची तो उस समय उस घर में कोई नहीं था। सो उसने वहॉ नूडिल्स[17] बनाये और चमचे से अपने भाइयों की प्लेट में रख दिये। नूडिल्स उनकी प्लेट में रख कर वह एक पलंग के नीचे छिप गयी।

जब उसके भाई लौटे तो उन्होंने देखा कि उनके खाने की मेज पर उनकी प्लेटों में नूडिल्स बने रखे थे। वे सब मेज पर बैठ गये और उन्होंने वे नूडिल्स बड़े स्वाद ले ले कर खाये।

पर उनको खा कर वे बेचैन हो गये और शक करने लगे कि कहीं किसी जादूगरनी ने तो उनके ऊपर कोई जादू न कर दिया हो क्योंकि उस जंगल में बहुत सारी जादूगरनियॉ रहतीं थीं। या फिर किसी ने उनके साथ कोई मजाक तो नहीं किया।

अगले दिन उन भाइयों ने अपने में से एक भाई यह देखने के लिये घर में ही छोड़ दिया कि यह काम किसने किया था।

---

[16] Raven is a crow like bird mostly found in USA, Canada and even in Europe. Read many stories about Raven in the books – “Raven Ki Lok Kathayen-1”, and “Raven Ki Lok Kathayen” both written by Sushma Gupta in Hindi language, published by Indra Publishers in 2016 and Prabhat Prakashan in 2020 respectively.

[17] Noodles – Noodles is a Chinese food which is like Sinwaee (or Semiyan or vermicilli) of North India. It is available in many shapes. See its one type in the picture above.

वह भाई देखता रहा कि यह काम किसने किया तो उसने देखा कि एक लड़की एक पलंग के नीचे से बाहर आयी और वह रसोईघर की तरफ खाना बनाने चली तो उसने उसको पकड़ लिया। पूछने पर उसको पता चला कि वह लड़की तो उनकी बहिन है।

शाम को जब उसके भाई आये तो उसने उनको बताया कि वह तो उनकी बहिन है तो उन्होंने उसके साथ दोस्ती कर ली और उससे कहा कि वह उनके साथ ही रहे।

पर वे उसको बार बार यही कहते रहे कि वह जंगल में किसी से न बोले क्योंकि वहॉ बहुत सारी जादूगरनियॉ रहती हैं।

एक शाम जब वह लड़की शाम के खाने की तैयारी कर रही थी तो उसने देखा कि उसकी आग बुझ गयी। समय बचाने के लिये वह पास के मकान से आग लेने के लिये गयी।

उस मकान में एक बुढ़िया रहती थी। उसने दया कर के उसको आग तो दे दी पर बोली कि इस आग देने के बदले में अगले दिन वह उसके पास आयेगी और उसकी एक उॅगली में से उसका थोड़ा सा खून चूस लेगी।

लड़की बोली — "मैं किसी को अपने घर में नहीं घुसा सकती क्योंकि मेरे भाइयों ने मना किया है।"

वह बुढ़िया बोली — "तुमको दरवाजा खोलने की जरूरत नहीं है। जब मैं दरवाजा खटखटाऊॅ तो बस तुम अपनी छोटी उॅगली

उसकी चाभी वाले छेद में से बाहर निकाल देना और मैं उस उॅगली में से तुम्हारा खून चूस लूॅगी।"

सो वह बुढ़िया अब हर शाम उस लड़की का खून चूसने के लिये उसके घर आने लगी। उधर वह लड़की उस खून चूसने की वजह से पीली और और ज़्यादा पीली पड़ती चली गयी।

उसके भाइयों ने यह देखा तो उन्होंने उससे कई सवाल पूछे। पहले तो डर के मारे उसने उनको बताया नहीं पर फिर उसने मान लिया कि वह बराबर के मकान में रहने वाली बुढ़िया के घर आग मॉगने गयी थी और उसके बदले में अपना खून देने का वायदा किया था। अब वह बुढ़िया रोज वहॉ आ कर उसका खून चूस जाती थी।

भाइयों ने सोचा कि हमको अपनी बहिन की देखभाल करनी चाहिये। उस शाम को जब वह बुढ़िया उनके घर आयी और उनका दरवाजा खटखटाया तो उस लड़की ने अपनी उॅगली उस चाभी के छेद में से बाहर नहीं निकाली।

यह देख कर उस बुढ़िया ने बिल्ली के घर में आने वाले रास्ते से अपना सिर उस घर के अन्दर घुसाया तो एक भाई ने जिसके पास एक घास काटने वाला बड़ा सा चाकू था उस चाकू से उसका सिर काट डाला। उसके बाद उसने उसका मरा हुआ शरीर एक घाटी में डाल दिया।

कुछ दिन बाद एक दिन जब वह लड़की फव्वारे पर गयी थी तो वहॉ वह एक और बुढ़िया से मिली। वह बुढ़िया सफेद कटोरे बेच रही थी। वे कटोरे उसको बहुत सुन्दर लगे।

जब उस बुढ़िया ने उस लड़की से वे सफेद कटोरे खरीदने के लिये कहा तो लड़की ने कहा — "अफसोस मेरे पास पैसे नहीं हैं मैं आपके ये कटोरे नहीं खरीद सकती।"

इस पर वह बुढ़िया बोली — "तब मैं तुमको यह कटोरे मुफ्त में ही दे देती हूॅ।" और उसने वे बारह कटोरे उस लड़की को मुफ्त में ही दे दिये। वह लड़की उनको ले कर घर आ गयी।

जब उसके भाई शाम को काम से प्यासे लौटे तो उन्होंने बारह नये कटोरों में पानी भरा देखा। वे प्यासे तो थे ही तुरन्त ही उन कटोरों में से पानी पी गये। वे कटोरे जादुई कटोरे थे उनमें से पानी पी कर तुरन्त ही वे सब बैल[18] बन गये।

उसका बारहवॉ भाई कम प्यासा था सो उसने बस पानी को केवल मुॅह ही लगाया था पिया नहीं था इसलिये वह बैल नहीं बना वह केवल एक मेंमने[19] में बदल गया।

अब वह लड़की वहॉ अकेली रह गयी – उसके ग्यारह भाई बैल बन गये थे और एक भाई मेमना बन गया था। अब वह उन सबको खिलाती पिलाती थी और उनकी देख भाल करती थी।

[18] Translated for the word "Ox"

[19] Translated for the word "Lamb"

एक बार एक राजकुमार शिकार खेलते खेलते उस जंगल में रास्ता भूल गया और इधर उधर भटकता हुआ उस लड़की के घर तक आ पहुँचा। वहॉ उसको देख कर वह उससे प्रेम करने लगा।

उसने उससे शादी करने के लिये कहा तो उस लड़की ने कहा कि उसको अपने भाइयों की देखभाल करनी है और वह उनको इस तरह अकेला नहीं छोड़ सकती थी।

राजकुमार समझ गया सो वह उस लड़की को उन ग्यारह बैलों को और एक मेंमने सबको अपने महल में ले गया। वहॉ जा कर उसने लड़की को तो अपनी राजकुमारी पत्नी बना लिया और ग्यारह बैलों और एक मेमने को एक संगमरमर के बड़े से कमरे में रख दिया। वहॉ उनके लिये खाने के लिये सोने के बरतन थे।

पर जंगल की जादूगरनियों ने भी अपनी कोशिशें नहीं छोड़ीं। एक दिन राजकुमारी अपने मेमने भाई के साथ अंगूर के बागीचे में टहल रही थी। वह उस मेमने को हमेशा ही साथ रखती थी कि एक बुढ़िया उसके पास आयी और बोली — "ओ मेरी अच्छी राजकुमारी क्या तुम मुझे तुम थोड़े से अंगूर दोगी?"

"हॉ हॉ क्यों नहीं। वह उधर हैं अंगूर के पेड़ आप अपने आप तोड़ लें।"

"मैं उतने ऊँचे तक नहीं पहुँच सकती। तुम ही तोड़ दो न थोड़े से अंगूर मेरे लिये।"

"ठीक है। अभी तोड़ती हूॅ।" कह कर उसने अंगूर के एक गुच्छे की तरफ हाथ बढ़ाया और वह वह गुच्छा तोड़ने ही वाली थी कि एक दूसरे गुच्छे की तरफ इशारा करते हुए वह बुढ़िया बोली — "यह नहीं वह वाला तोड़ दो। वह मुझे ज़्यादा पका लग रहा है।"

यह गुच्छा एक तालाब के ऊपर की तरफ लगा हुआ था सो उसको तोड़ने के लिये राजकुमारी को उस तालाब की दीवार पर चढ़ना पड़ता।

वह उस गुच्छे को तोड़ने के लिये उस तालाब की दीवार पर चढ़ी तो उस बुढ़िया ने उसे धक्का दे दिया और वह उस तालाब में गिर पड़ी। लड़की उस तालाब में गिरते ही चिल्लाने लगी पर उसकी वह आवाज बहुत ही घुटी घुटी थी।

यह देख कर उस मेमने ने चिल्लाना शुरू कर दिया और उस तालाब के चारों तरफ घूमने लगा। पर किसी को भी यह समझ में नहीं आया कि वह क्या कहना चाह रहा था और न ही किसी को राजकुमारी की घुटी घुटी आवाजें सुनायी दीं।

इस बीच जादूगरनी ने राजकुमारी का रूप रख लिया और राजकुमारी के बिस्तर में जा लेटी। जब राजकुमार घर आया तो उसने राजकुमारी से पूछा — "अरे तुम यहॉ बिस्तर में? इस समय तुम यहॉ बिस्तर में क्या कर रही हो? तुम्हारी तबियत तो ठीक है न?"

वह नकली राजकुमारी बोली — "नहीं आज मेरी तबियत ठीक नहीं है मुझे आज मेमने का थोड़ा सा मॉस खाना है। मेरे लिये उस मेंमने को मार दो जो बाहर चिल्लाता घूम रहा है।"

राजकुमार बोला — "क्या? क्या तुमने मुझसे कुछ दिन पहले ही यह नहीं कहा था कि यह मेमना तुम्हारा भाई है और अब तुम उसको खाना चाहती हो?"

जादूगरनी तो अपने ये शब्द कह कर पछतायी पर अब वह कुछ और नहीं कह सकती थी। राजकुमार को भी लगा कि कहीं कोई गड़बड़ है सो वह तुरन्त ही बागीचे में गया।

वहॉ उसने उस चिल्लाते हुए मेमने को देखा तो उसके पीछे पीछे चल दिया। वह मेमना उसको तालाब तक ले गया। तब राजकुमार ने वहॉ राजकुमारी की रोने की आवाज सुनी।

वह चिल्ला कर बोला — "अब तुम यहॉ तालाब में क्या कर रही हो तुमको तो मैं अभी अभी बिस्तर में छोड़ कर आया हूँ।"

"पर मैं तो इस तालाब में सुबह से ही पड़ी हुई हूँ। एक जादूगरनी ने मुझे इस तालाब में धकेल दिया था।"

राजकुमार ने राजकुमारी को तालाब में से तुरन्त ही निकाल लिया। वह जादूगरनी पकड़ी गयी तो राजकुमार ने उसको जलवा दिया। जब वह उस आग में जल रही थी तो वे बैल और मेमना धीरे धीरे आदमियों में बदलते जा रहे थे।

तभी राजकुमार के महल को बहुत सारे बड़े साइज के लोगों[20] ने घेर लिया। असल में वे सब वे राजकुमार थे जिनको उस जादूगरनी ने बड़े साइज़ के लोगों में बदल दिया था। जादूगरनी के मरने के बाद वे सब वहॉ आ गये थे और अब वे सभी राजकुमारों के रूप में बदलते जा रहे थे।

इसके बाद उस लड़की की शादी उस राजकुमार से हो गयी और वे सब खुशी खुशी रहने लगे।

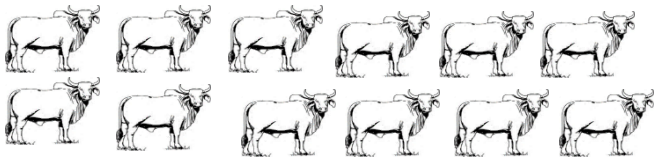

[20] Translated for the word “Giants”

5 सात साल तक चुप[21]

छह हंस जैसी कहानियों के इस संग्रह की यह कथा भी यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार एक माता पिता थे जिनके दो बेटे और एक बेटी थी। पिता अक्सर घर से बाहर रहता था क्योंकि उसको अपने काम से बाहर आना जाना पड़ता था।

एक दिन जब वह बाहर गया हुआ था तो उसके दोनों छोटे बेटों ने अपनी मॉ से कहा — "मॉ, हम अपने पिता जी से मिलने जा रहे हैं।"

उनकी मॉ ने कहा — "ठीक है जाओ।"

सो वे अपने पिता से मिलने चल दिये। जब वे जंगल में पहुँचे तो वे वहॉ खेलने के लिये रुक गये। कुछ देर बाद ही उन्होंने देखा कि उनका पिता तो उन्हीं की तरफ आ रहा था।

वे उसकी तरफ भागे और जा कर उसकी टॉगों से लिपट गये "पिता जी, पिता जी।"

पर उनका पिता उस दिन कुछ खराब मूड में था सो बोला — "मुझे परेशान मत करो, जाओ यहॉ से।"

[21] Silent for Seven Years. A folktale from Venice, Italy. Taken from the Book "Folktales of Italy" by Italo Calvino, selected by George Martin. 1980.

पर बच्चों ने उसकी इस बात पर कोई ध्यान नहीं दिया और उसकी टॉगों से लिपटे ही रहे। पिता जब बहुत परेशान हो गया तो वह ज़ोर से बोला — "शैतान तुम दोनों को उठा कर ले जाये तुम लोग सुनते नहीं हो।"

इत्तफाक से शैतान उस समय वहीं से गुजर रहा था सो इससे पहले कि पिता जान पाता कि क्या हो रहा था वह उन दोनों बच्चों को वहॉ से उठा कर ले गया।

पिता बेचारा तो देखता ही रह गया और कुछ जान ही न सका कि क्या हो गया। वह पछताता सा घर आ गया क्योंकि उसको तो आशा ही नहीं थी कि जो वह कहेगा वह इस तरह सच हो जायेगा।

जब मॉ ने देखा कि पिता बिना बच्चों के चला आ रहा है तो वह बहुत चिन्ता करने लगी और उसने अपने बच्चों के लिये रोना शुरू कर दिया।

उसके पति ने पहले तो यही कहा कि उसको मालूम नहीं था कि वे कहॉ हैं पर फिर बाद में उसने मान लिया कि उसने उनको शाप दिया और फिर वे उसकी ऑखों के सामने से गायब हो गये।

इस पर उनकी छोटी बेटी बोली — "मॉ और पिता जी आप दुखी न हों। अगर मेरी अपनी ज़िन्दगी चली भी जाये तो भी मैं अपने भाइयों को ढूँढने जरूर जाऊँगी।"

उसके माता पिता ने उसको उनको ढूँढने जाने के लिये बहुत मना किया पर उसने उनकी एक न सुनी। उसने अपने लिये थोड़ा सा खाना लिया और अपने भाइयों को ढूँढने चल दी।

चलते चलते वह एक महल के सामने आ गयी। उस महल का लोहे का दरवाजा था। वह उसमें से हो कर उस महल के अन्दर चली गयी।

उस महल में एक नौजवान बैठा था। उसने उस नौजवान से पूछा — "क्या तुमने इत्तफाक से मेरे भाइयों को देखा है? उनको एक शैतान उठा कर ले गया है।"

वह नौजवान बोला — "मैं नहीं कह सकता कि मैंने उनको देखा है पर तुम उस दरवाजे से हो कर उस कमरे में चली जाओ। वहॉ चौबीस बिस्तर लगे हुए हैं। वहॉ देख लो अगर तुम्हारे भाई वहॉ हों तो।"

उस लड़की को वहॉ उसके भाई मिल गये। वह तो उनको देख कर बहुत खुश हो गयी। वह बोली — "तो तुम लोग यहॉ हो। मुझे खुशी है कि कम से कम तुम लोग यहॉ सुरक्षित तो हो।"

भाइयों ने कहा — "तुम ज़रा हमको पास से देखो कि क्या हम सुरक्षित हैं?"

बहिन ने उनके बिस्तर के नीचे झॉका तो देखा कि उनके बिस्तरों के नीचे तो बहुत सारी आग जल रही थी। वह डर के मारे

चिल्लायी — "ओह भैया, मैं तुम लोगों को बचाने के लिये क्या करूँ?"

वे बोले — "अगर तुम सात साल तक चुप रहो तभी तुम हमको बचा सकती हो। पर इस बीच तुमको बहुत तकलीफें उठानी पड़ेंगी।"

बहिन बोली — "तुम चिन्ता न करो भैया। तुम मेरे ऊपर विश्वास रखो मैं सब देख लूँगी।"

उसने उनको वहीं छोड़ा और वापस उसी कमरे में चली आयी जहॉ वह नौजवान बैठा था। उसने उस लड़की को अपने पास आने का इशारा किया पर उस लड़की ने ना में अपना सिर हिलाया, क्रास का निशान बनाया और वहॉ से चली गयी।

उसके सात सालों का चुप रहना वहीं से शुरू हो चुका था। चलते चलते वह एक जंगल में आ पहुँची। वह बहुत थक गयी थी सो वह एक पेड़ के नीचे लेट गयी और सो गयी।

उसी जंगल में एक राजा शिकार करने के लिये निकला हुआ था। वह उधर से गुजरा और उस बच्ची को सोते हुए देखा तो उसके मुँह से निकला — "ओह कितनी सुन्दर लड़की है।"

उसने उसे जगाया और उससे पूछा कि वह इस जंगल में कैसे आयी। अब वह बोल तो सकती नहीं थी सो उसने अपना केवल सिर हिला कर उसको बताया कि वह वहॉ अपनी मरजी से नहीं आयी थी।

राजा ने उससे पूछा कि क्या वह उसके साथ चलना पसन्द करेगी। उसने सिर हिला कर बताया कि हॉ वह उसके साथ जायेगी।

राजा ने सोचा कि वह शायद सुन नहीं सकती होगी सो वह उस से ज़ोर से बोला पर जल्दी ही उसको पता चल गया कि वह तो फुसफुसाहट भी सुन सकती थी।

वह उसको घर ले आया और उसको गाड़ी से बाहर निकाला। घर में अन्दर ला कर उसने अपनी मॉ को बताया कि वह एक न बोलने वाली लड़की को ले आया है। वह जंगल में अकेली सो रही थी और अब वह उससे शादी करना चाहता है।

मॉ बोली — "मैं इस बात के लिये कभी राजी नहीं होऊॅगी कि तुम एक बिना बोलने वाली लड़की से शादी करो।"

वह बीच में ही बोला — "पर यहॉ मैं बताऊॅगा कि क्या करना है इसलिये हमारी शादी होगी।" और उन दोनों की शादी हो गयी।

राजा की मॉ बहुत ही बुरी थी और अपनी बहू को बहुत ही बुरे तरीके से रखती थी पर बहू बेचारी सब कुछ शान्ति से सहती रही। इस बीच में उसको बच्चे की आशा भी हो गयी।

एक दिन राजा की मॉ ने अपने बेटे को कहा कि वह एक शहर में जाये और उस शहर की देखभाल करे जहॉ उसको धोखा दिया जाने वाला था। राजा ने अपनी पत्नी को विदा कहा और उस शहर को चल दिया।

राजा के पीछे रानी ने एक बेटे को जन्म दिया पर राजा की मॉ ने दाई[22] की सहायता से उसके बिस्तर में यह दिखाने के लिये एक कुत्ता रखवा दिया कि उसने एक कुत्ते को जन्म दिया है और उसके बेटे को एक बक्से में बन्द कर के महल की छत पर रखवा दिया।

वह बेचारी लड़की परेशान सी इधर उधर देखती रही पर अपने भाइयों की परेशानी याद कर के केवल मन मसोस कर रह गयी। कुछ भी न कह सकी।

राजा की मॉ ने अपने बेटे को लिखा कि उसकी पत्नी ने एक कुत्ते को जन्म दिया है।

राजा ने जवाब दिया कि वह अब अपनी पत्नी के बारे में कुछ सुनना नहीं चाहता था। उसने अपने आने से पहले ही अपनी पत्नी के लिये यह भी कहा कि उसको खाने के लिये थोड़ा सा पैसा दे कर घर के बाहर निकाल दिया जाये।

पर राजा की मॉ ने एक नौकर के साथ बहू को बाहर भेज दिया और नौकर से कहा कि वह उसको मार कर उसकी लाश समुद्र में फेंक दे और उसके कपड़े वापस ले आये।

जब वे दोनों समुद्र के किनारे पहुॅचे तो नौकर ने कहा — "मैम, मेहरबानी कर के आप अपना सिर झुकाइये। मुझे आपको मारने का हुक्म मिला है।

[22] Translated for the word "Midwife" who helps the mother to deliver the child

ऑखों में ऑसू भर कर वह लड़की घुटनों के बल बैठ गयी और अपने हाथ जोड़ दिये।

उस नौकर को दया आ गयी तो उसने बस उसके बाल काट लिये और कपड़े उतार लिये। उसने अपनी कमीज और पैन्ट उसके पहनने के लिये छोड़ दी और वापस आ गया।

अब वह लड़की उस नौकर के कपड़े पहन कर वहॉ समुद्र के किनारे पर अकेली ही इधर उधर घूमती रही। आखिर उसको एक जहाज़ दिखायी दे गया तो उसने उसको इशारा किया।

वह जहाज़ सिपाही ले कर जा रहा था। उन सिपाहियों ने उससे पूछा कि वह कौन था क्योंकि उनको ज़रा सा भी शक नहीं हुआ कि वह कोई लड़की हो सकती थी।

इशारों से उसने उनको बताया कि वह एक नाविक थी उसका जहाज़ टूट गया था और वह उस जहाज़ में से अकेली ही बची थी।

सिपाहियों ने कहा — "अगर तुम नहीं भी बोल सकती हो तो कोई बात नहीं फिर भी तुम लड़ाई में हमारी सहायता कर सकती हो।"

लड़ाई में उस लड़की ने भी तोपें चलायीं। उसकी बहादुरी से खुश हो कर उन लोगों ने उसको तुरन्त ही कौरपोरल बना दिया। जब लड़ाई खत्म हो गयी तो उसने उनसे प्रार्थना की अब उसको छोड़ दिया जाये और उसको छोड़ दिया गया।

जब वह जमीन पर आ गयी तो उसको पता नहीं था कि वह अब कहॉ जाये। घूमते घूमते रात को उसको एक टूटा फूटा घर मिल गया तो वह उसी में चली गयी और वहॉ जा कर छिप गयी।

कुछ देर बाद ही उसको किसी के कदमों के चलने की आवाज सुनायी दी तो उसने बाहर झॉक कर देखा तो तेरह खूनी घर के पिछले दरवाजे से बाहर जा रहे थे।

जब वे उसकी ऑखों से काफी दूर चले गये। तो वह घर के पीछे के हिस्से की तरफ गयी। वहॉ उसने तेरह आदमियों के लिये बहुत बढ़िया खाने की एक मेज लगी देखी।

वह मेज के चारों तरफ घूमी और उन सब प्लेटों में से उसने थोड़ा थोड़ा चखा ताकि वे खूनी जब वापस आयें तो उन खूनियों को कोई चीज़ कम न लगे।

फिर वह अपनी छिपने की जगह वापस आ गयी पर वहॉ से चलने से पहले वह एक प्लेट में से अपनी चम्मच निकाल कर बाहर रखना भूल गयी।

जब वे खूनी वापस लौट कर आये तो उनमें से एक ने उस चम्मच को तुरन्त ही देख लिया तो अपने साथियों से बोला — "ऐसा लगता है कि यहॉ कोई आया है।"

दूसरा बोला — "चलो फिर से हम सब थोड़ी देर के लिये बाहर चलते हैं और एक आदमी यहॉ देखभाल करता रहेगा।" सो सब बाहर चले गये और एक आदमी को वहॉ छोड़ गये।

यह सोचते हुए कि अब सब चले गये हैं वह लड़की अपने बिस्तर से उठी। जैसे ही वह बाहर आयी तो उस खूनी ने उसको पकड़ लिया और बोला — "अब मैंने तुझको पकड़ लिया है ओ चोर। ज़रा रुक जा।"

वह लड़की यह देख कर बहुत डर गयी और उसने इशारों से उसको बताया कि वह बोल नहीं सकती थी और वह यहॉ इसलिये चली आयी थी क्योंकि वह रास्ता भूल गयी थी।

यह सुन कर उस खूनी ने उसको तसल्ली दी और फिर खाना खिलाया। दूसरे लोग भी कुछ देर में वहॉ आ गये।

उन्होंने उसकी कहानी सुन कर कहा — "क्योंकि अब तुम यहॉ हो तो हमारे ही साथ रहो वरना हम तुमको मार देंगे।"

उसने हॉ में सिर हिलाया और फिर वह वहीं रहने लगी। पर उन खूनियों ने उसको फिर वहॉ कभी अकेला नहीं छोड़ा।

एक दिन उन खूनियों का सरदार उससे बोला — "कल हम लोग फलॉ राजा के महल पर जायेंगे और उसकी सब कीमती चीज़ें ले कर आयेंगे। तुमको हमारे साथ चलना पड़ेगा।"

जब उसने उस राजा का नाम बताया तो वह तो उसका अपना पति था। सो उसने अपने पति को लिख कर उसके महल में होने वाली चोरी की चेतावनी भेजी और आने वाले खतरे के बारे में बताया।

इसका नतीजा यह हुआ कि जब वे खूनी आधी रात को महल के सामने वाले दरवाजे से घुसने लगे तो वहॉ छिपे हुए सिपाहियों ने निकल कर उनको एक एक कर के मार डाला।

इस मारने में उनका सरदार और पॉच खूनी तो मारे गये पर बाकी बच कर भाग गये। वह उस लड़की को वहीं छोड़ गये जो खूनियों के वेश में थी।

सिपाहियों ने उसको पकड़ लिया और उसके हाथ पैर बॉध कर उसको जेल में डाल दिया। जेल के कमरे से वह लोगों को शहर के चौराहे पर फॉसी चढ़ाने की तैयारी करते देख सकती थी।

यह सब होते होते अब उसके चुप रहने के सात साल पूरे होने को आ रहे थे। केवल एक दिन ही बाकी रह गया था। अपने इशारों से उसने उन लोगों से बहुत प्रार्थना की कि वह उसकी फॉसी की सजा को कल तक के लिये बढ़ा दें।

बस एक दिन और फिर उसकी यह चुप खत्म हो जायेगी। राजा ने इसकी इजाज़त दे दी।

अगले दिन वे उसको फॉसी के तख्ते तक ले चले। जब वह पहली सीढ़ी पर चढ़ी तो उसने उनसे पूछा कि क्या वे उसको तीन बजे फॉसी चढ़ाने की बजाय चार बजे फॉसी चढ़ा सकते हैं। बस वह एक घंटा और चाहती है।

राजा इस बात पर भी राजी हो गया। जब चार बजे का घंटा बजा और वह एक और कदम आगे बढ़ी तो दो लोग राजा के पास

आये, उसको सिर झुकाया और राजा से बात करने की इजाज़त मॉगी।

राजा ने कहा — "बोलो।"

उन्होंने पूछा — "इस नौजवान को आप फॉसी क्यों चढ़ा रहे हैं?"

राजा ने उनको बताया कि वह ऐसा क्यों कर रहा था तो वे बोले — "वह कोई नौजवान नहीं है बल्कि हमारी बहिन है।" और फिर उन्होंने राजा को बताया कि वह सात साल तक चुप क्यों रही और इस सबके बारे में उसने सात साल तक एक शब्द भी क्यों नहीं कहा।

फिर वे अपनी बहिन से बोले — "बोल बहिन बोल। अब हम खतरे से बाहर हैं। हम सुरक्षित हैं।"

फिर उन दोनों ने उसकी हथकड़ी और बेड़ी खोली। सारे शहर के सामने उस लड़की ने कहा — "मैं राजा की पत्नी हूॅ और मेरी नीच सास ने मेरे बच्चे को मार दिया।

महल की छत पर जा कर देखो तो तुमको वहॉ इसका सबूत मिल जायेगा। वहॉ एक बक्सा है। उसको खोल कर देखो तो तुम्हें पता चलेगा कि मैंने एक कुत्ते को जन्म दिया था या एक बेटे को।"

राजा ने तुरन्त ही अपने नौकरों को महल की छत पर वह बक्सा लाने के लिये भेजा। जब वे बक्सा ले कर आये और उसको खोला गया तो उस बक्से में वाकई एक बच्चे का ढॉचा निकला।

इस पर सारा शहर चिल्लाया — "इस लड़की की बजाय रानी और दाई को फॉसी पर चढ़ा दो।"

राजा ने ऐसा ही किया और दोनों बुढ़ियों को फॉसी पर लटका दिया गया। राजा की पत्नी को इज़्ज़त के साथ घर वापस ले आया गया। राजा ने रानी से माफी मॉगी और रानी के दोनों भाइयों को राजा ने अपना प्रधान मन्त्री बना लिया।

उसके बाद सब खुशी खुशी रहने लगे।

6 जंगली हंस[23]

बहुत दूर जहॉ ठंड में चिड़ियें उड़ती हैं उस देश में एक राजा रहता था। उसके ग्यारह बेटे थे और एक बेटी थी जिसका नाम था ऐलीसा[24]।

राजा के ग्यारह बेटे अपनी कमर में तलवार लटका कर और अपनी छाती पर एक तारा लगा कर स्कूल जाते थे। वे हीरे की कलम से सोने की स्लेट पर लिखते थे।

उनको अपने पाठ ऐसे जबानी याद थे जैसे वे उसको किताब से पढ़ रहे हों। तुम उनको देख कर ही यह कह सकते थे कि वे कितने राजकुमार जैसे लगते थे।

उनकी बहिन ऐलीसा एक साफ सुथरे शीशे के नीचे स्टूल पर बैठती थी। उसके पास तस्वीरों की एक किताब थी जिसकी कीमत राजा के आधे राज्य के बराबर थी।

सब बच्चे बहुत खुशी खुशी रह रहे थे पर उनकी यह खुशी बहुत दिनों तक नहीं रही।

---

[23] The Wild Swans – a fairy tale from Denmark, Europe. Taken from the Web Site : http://www.andersen.sdu.dk/vaerk/hersholt/TheWildSwans_e.html
Collected by Hans Christian Andersen. Translated in English by Jean Hersholt

[24] Elisa – name of the youngest sister of eleven Princes

एक दिन उनके पिता ने एक बड़ी बुरी स्त्री से शादी कर ली जो उसके बच्चों को ठीक से नहीं रखती थी। बच्चों ने यह बात पहले दिन से ही जान ली थी।

सारे महल में खूब खाना पीना चल रहा था। बच्चे भी मेहमानों के स्वागत में लगे हुए थे। पर उनको केक और बेक[25] किये गये सेब के मिलने की बजाय जो उनको अक्सर मिला करता था उनकी नयी सौतेली मॉ ने उनको प्याले में रेत भर कर दे दिया। और उनसे कहा कि वे उसको खास खाना समझ कर खायें।

अगले हफ्ते रानी ने ऐलीसा को एक गॉव में कुछ किसानों के साथ रहने के लिये भेज दिया। और इस बीच उसने राजा को बच्चों के बारे में कुछ झूठी बातें कह कर उसका मन ऐसा कर दिया कि राजा का मन अपने बच्चों से फिर गया।

एक दिन रानी ने राजकुमारों से कहा — "जाओ, तुम लोग बड़ी चिड़िया बन कर उड़ जाओ जिसकी आवाज नहीं होती और जा कर अपनी रोजी रोटी अपने आप कमाओ।"

पर वह राजकुमारों को इतना नुकसान नहीं पहुॅचा सकी जितना कि वह चाहती थी। क्योंकि उसके यह कहते ही वे बहुत ही खूबसूरत ग्यारह सफेद हंसों में बदल गये और एक अजीब सी

[25] Baking is a process in which the raw material is cooked under fire kept around it. It is cooked with its heat only. Now a days where this type of food is cooked it is called oven. This type of cooking is very common in western countries. Bread, cookies, buiscuits, bread etc items are cooked in this way only.

आवाज के साथ महल की खिड़की से बाहर बागीचे के पार जंगल में उड़ गये।

अभी सुबह होने में देर थी और ऐलीसा अभी सो ही रही थी कि वे हंस उसकी झोंपड़ी के ऊपर से उड़े जहॉ वह रह रही थी। वे उसकी झोंपड़ी की छत पर उतर गये।

वहॉ उन्होंने अपनी लम्बी गरदन को इधर उधर घुमाया अपनी चोंचों से उस झोंपड़ी की छत को खुरचा, अपने पंख फड़फड़ाये पर न तो उनको किसी ने देखा और न ही उनको किसी ने सुना।

सो वे बेचारे फिर आसमान में ऊपर बादलों में उड़ गये और दुनियॉ में दूर चले गये। उड़ते उड़ते वे एक बड़े से घने जंगल में आ गये जो समुद्र तक फैला चला गया था।

ऐलीसा बेचारी वहीं किसान की झोंपड़ी में रहती और एक हरी पत्ती से पीकेबू[26] खेलती क्योंकि उसके पास खेलने के लिये वहॉ और कोई खिलौना ही नहीं था।

वह पत्ते में एक छेद बना लेती और उस छेद में से सूरज को देखती। उस छेद में से सूरज को देख कर उसको ऐसा लगता जैसे वह अपने भाइयों की चमकीली ऑखें देख रही हो। और जब भी सूरज की गरम किरनें उसके गालों को छूतीं तो उसको लगता जैसे उसके भाई उसको प्यार कर रहे हों।

[26] Pee-k-boo is a game, normally played with very young children. One person hides behind something and at time to time peeps out of that hiding place and calls Pee-k-boo to the other child. The child laughs as first he does not see anybody and then suddenly he sees the face of the person.

एक दिन हवा चली और उसने उस झोंपड़ी के चारों तरफ लगी गुलाब के पौधों की दीवार पर लगे गुलाबों को हिला दिया और उनके कान में फुसफुसायी — "तुमसे ज्यादा सुन्दर और कौन हो सकता है?"

फूल अपना सिर ना में हिला कर बोले "ऐलीसा।"

रविवार को जब उस किसान की पत्नी दरवाजे में बैठी साम्स की किताब[27] पढ़ रही थी तो हवाने उसकी किताब के पन्ने उड़ाये और उससे पूछा — "तुमसे बड़ा संत और कौन हो सकता है?"

वह किताब बोली "ऐलीसा।"

गुलाबों ने भी कहा कि किताब बिल्कुल सच कह रही है।

ऐलीसा को जब वह पन्द्रह साल की हो जाती तब घर वापस जाना था पर रानी ने देखा कि वह तो बहुत ही सुन्दर राजकुमारी होती जा रही थी तो उसके मन में राजकुमारी के लिये नफरत पैदा होगयी।

उसको उस बच्ची को भी हंस में बदलने में कोई हिचक नहीं हुई जैसे कि उसने उसके भाइयों को बदला था। पर वह यह काम उसी समय नहीं कर सकती थी क्योंकि राजा अपनी बेटी को देखना चाहता था।

[27] Psalms is one of the several books of Bible.

सो सुबह सवेरे ही रानी अपने संगमरमर के बने कमरे में नहाने के लिये गयी जिसमें बहुत कीमती कालीन बिछा हुआ था और गद्दियॉ पड़ी हुई थीं।

वह वहॉ तीन मेंढक[28] ले गयी और उनको चूम कर उनमें से एक मेंढक से बोली — "जब ऐलीसा नहाये तो तुम उसके सिर पर बैठ जाना जिससे वह तुम्हारे जैसी आलसी हो जाये।"

फिर वह दूसरे मेंढक से बोली — "तुम ऐलीसा के माथे पर बैठ जाना ताकि वह उतनी ही बदसूरत हो जाये जितने तुम खुद हो।"

फिर वह तीसरे मेंढक से बोली — "तुम उसके दिल के ऊपर बैठ जाना ताकि उसके मन में हमेशा बुरी बुरी इच्छाऐं उठती रहें।"

उसके बाद रानी ने वे तीनों मेंढक साफ पानी में छोड़ दिये। पानी में पड़ते ही वे हरे रंग के हो गये। फिर उसने ऐलीसा को बुलाया और उसको कपड़े उतार कर नहाने के लिये जाने को कहा।

जब ऐलीसा पानी में घुसी तो एक मेंढक उसके बालों से चिपक गया दूसरा मेंढक उसके माथे से चिपक गया और तीसरा मेंढक उसके दिल पर बैठ गया। पर ऐलीसा को इसका पता ही नहीं चला।

[28] There are two types of frogs – frogs and toads. Frogs are beautiful having smooth moist shiny bright green color skin; while toads are of dull green sandy color, with dry and warty skin. Frogs live on both land and water.

जब वह नहा कर खड़ी हुई तो तीन लाल रंग के पौपी फूल[29] पानी में तैर गये। अगर वे मेंढक जहरीले न हुए होते और उस जादूगरनी ने न चूमे होते तो वे लाल गुलाब बन गये होते। पर वे उसका माथा और दिल छू कर कम से कम फूलों में तो बदल गये।

ऐलीसा इतनी ज़्यादा भोली थी कि रानी की जादूगरी भी उसके ऊपर असर नहीं कर पायी।

जब रानी ने यह महसूस किया कि उसकी जादूगरी बेकार गयी तो उसने ऐलीसा के शरीर पर अखरोट का रंग मल दिया जिससे उस का शरीर गहरे कत्थई रंग का हो गया।

उसके चेहरे पर एक गन्दी सी क्रीम का लेप कर दिया और उसके बाल बिगाड़ दिये। अब सुन्दर ऐलीसा को कोई नहीं पहचान सकता था।

फिर वह उसको राजा के पास ले गयी तो राजा तो उसको देख कर दंग रह गया। उसने कहा कि यह मेरी बेटी नहीं हो सकती।

अब उसको पहरा देने वाले कुत्ते और चिड़ियों के अलावा और कोई नहीं पहचान सकता था। और वे सब बहुत ही नम्र थे सो वे कुछ कह नहीं सकते थे।

[29] Poppy flowers grow in quite a few colors but normally they are red. Its extract is called opium. See the picture above

यह सब देख कर बेचारी ऐलीसा रो पड़ी और अपने भाइयों को याद करने लगी जो अब सब बहुत दूर थे। भारी दिल से वह महल से बाहर निकल आयी और सारा दिन वह खेतों और मैदानों में घूमती रही।

घूमते घूमते वह एक बड़े जंगल में आ निकली। वह नहीं जानती थी कि अब वह कहॉ जाये। वह बहुत दुखी थी और बस उसकी यही इच्छा थी कि काश उसके भाई उसके पास होते।

उसको लगा कि लगता है वे भी उसी की तरह से महल से बाहर निकाल दिये गये होंगे सो उसने तय किया कि वह उनको ढूँढ कर ही रहेगी।

वह अभी कुछ ही देर जंगल में ठहरी थी कि रात होने लगी। उसको लगा कि वह रास्ता भूल गयी थी। सो उसने अपनी रात की प्रार्थना की और एक जगह मुलायम सी घास देख कर उस पर लेट गयी। उसने एक पेड़ की लकड़ी का तकिया बना लिया था।

सब कुछ शान्त था। हवा बहुत ही धीरे बह रही थी। बहुत सारे जुगनू या पटबीजने[30] इधर उधर घास में चमक रहे थे। वह जल्दी ही सो गयी। सारी रात वह अपने भाइयों के ही सपने देखती रही।

उसने देखा कि जैसे वे सब फिर से बच्चे बन गये हैं। आपस में खेल रहे हैं। अपनी हीरों की कलम से सोने की स्लेटों पर लिख रहे

[30] Translated for the word “Fireflies”

हैं। और वह अपनी तस्वीरों की किताब देख रही है। उसमें छपी हुई हर तस्वीर उसको जानदार दिखायी दी।

जब वह सुबह उठी तो सूरज बहुत देर का निकल आया था। पहले तो उसको साफ साफ दिखायी नहीं दिया क्योंकि पेड़ की शाखों का साया उसकी ऑखों पर पड़ रहा था। पर फिर बाद में ठीक होगया। चिड़ियें भी उसके पास आकर उसके कन्धे पर बैठ गयीं।

तभी उसको पानी में छपाकों की आवाज आयी। वह आवाज वहॉ के एक तालाब में से आ रही थी जिसमें कई झरनों से पानी गिर रहा था। उसकी तली में बहुत सुन्दर रेत पड़ी हुई थी।

हालॉकि उस तालाब के चारों तरफ घनी झाड़ियॉ लगी हुई थीं फिर भी किसी हिरन ने पानी के पास तक जाने के लिये छोटा सा रास्ता बना लिया था। ऐलीसा उसी रास्ते से हो कर पानी तक जा सकती थी।

उस तालाब का पानी इतना साफ था कि अगर हवा से पानी न हिल रहा हो तो उसमें पड़े पेड़ों के साये ऐसे लग रहे थे जैसे तालाब की तली में किसी ने कोई तस्वीर बना दी हो। उसमें पेड़ों की हर पत्ती का साया बहुत साफ था।

वह उस रास्ते से होकर तालाब तक गयी और पानी में अपना चेहरा देखा तो वह तो उसे देख कर डर ही गयी – कितना कत्थई और कितना बदसूरत।

पर जैसे ही उसने अपना पतला सा हाथ पानी में डाल कर उस पानी से अपनी भौंहें और ऑखें साफ कीं तो उसका गोरा रंग फिर से वापस आ गया। यह देख कर उसने अपने कपड़े उतारे और उस साफ पानी में कूद गयी।

सारी दुनियॉ में राजा की बेटी ऐलीसा जैसी सुन्दर और कोई लड़की नहीं थी। नहा धो कर वह पानी से बाहर आयी। उसने अपने कपड़े पहने। फिर अपने लम्बे बालों की चोटी बनायी। वहॉ से वह एक झरने पर गयी और दोनों हाथों से ले कर ठंडा पानी पिया।

वह फिर जंगल में इधर उधर बिना मतलब के घूमती रही। वह बस अपने भाइयों और भगवान के बारे में ही सोचती रही कि भगवान उसको ऐसे ही नहीं छोड़ देगा। वही तो है जो भूखों के लिये खट्टे सेब उगाता है।

फिर वह एक पेड़ की तरफ चली गयी जिसकी डालियॉ फलों से लदी नीचे को झुकी जा रही थीं। वहॉ से फल खा कर वह फिर जंगल की तरफ चल दी।

आगे चल कर वह एक बड़ी शान्त जगह पहुॅच गयी। वहॉ एक चिड़िया भी नहीं थी। सूरज की एक किरन भी जंगल के पेड़ों की घनी डालियों मे से होकर जमीन तक नहीं आ पा रही थी। बहुत जल्दी ही वहॉ रात हो गयी और वह भी बहुत अॅधेरी रात। रात को सो कर वह सुबह को फिर चल दी।

आगे जा कर राजकुमारी को एक बुढ़िया मिली जिसके पास बैरी[31] की एक टोकरी थी। उसने उसको कुछ बैरीज़ दीं तो उसने उस बुढ़िया से पूछा कि क्या उसने ग्यारह राजकुमारों को जंगल से जाते हुए देखा है।

बुढ़िया बोली — "मैंने ग्यारह राजकुमारों को तो नहीं देखा पर हॉ ग्यारह सफेद हंसों को जरूर देखा है जो सुनहरे ताज पहने हुए थे। वे एक नदी में तैर रहे थे। वह नदी यहॉ से पास में ही है।"

कह कर वह बुढ़िया ऐलीसा को एक छोटी सी पहाड़ी की चोटी पर ले गयी। वहॉ से फिर वे नीचे उतर गये। नीचे उतरते ही नदी थी और नदी के दोनों तरफ पेड़ लगे हुए थे।

वहॉ ऐलीसा ने बुढ़िया को गुड बाई कहा और वह नदी के नीचे की तरफ चल दी जिधर वह समुद्र की तरफ जा रही थी। ऐलीसा ने देखा कि उसके सामने बहुत बड़ा समुद्र पड़ा हुआ था पर उसमें एक भी नाव या जहाज नहीं था। वह उसको कैसे पार करे।

किनारे पर अनगिनत पत्थर और लोहे के छोटे छोटे टुकड़े पड़े थे जिनको समुद्र का पानी किनारे पर डाल गया था। उसने सोचा कि एक दिन यह समुद्र का पानी जैसे वे पत्थर यहॉ डाल गया है उसी तरह से वह उसको भी उसके भाइयों के पास ले जायेगा।

---

[31] Berry is a small fruit grown on bushes such as huckleberry, strawberry, blackberry, blueberry or hackberry etc. See their picture above.

वहॉ समुद्री घास भी उगी हुई थी। वहॉ उसको सफेद हंसों के कुछ पंख मिल गये तो वह उसने इकट्ठे कर लिये। उन पर अभी भी पानी की बूँदें थीं पर वे बूँदें पानी की थीं या फिर ऑसू की यह नहीं कहा जा सकता। ऐलीसा वहीं बैठ गयी और बहुत देर तक समुद्र को देखती रही।

शाम को उसको ग्यारह सफेद हंस दिखायी दिये जिनके सिर पर सुनहरे ताज रखे हुए थे। वे उड़ते हुए किनारे की तरफ ही आरहे थे। जब वे एक के पीछे एक उड़ रहे थे तो वे ऐसे लग रहे थे जैसे आसमान में कोई सफेद रिबन उड़ रहा हो।
ऐलीसा वहॉ से उठ कर एक झाड़ी के पीछे छिप गयी। हंस वहीं तक आ गये जहॉ ऐलीसा छिपी हुई थी।

जब सूरज समुद्र के नीचे जा रहा था तो उन हंसों ने अपने अपने पंख उतार दिये और अब वहॉ ग्यारह सुन्दर राजकुमार खड़े थे। वे उसके भाई थे। हालॉकि उनकी शक्लें काफी बदल गयी थीं पर फिर भी उसको पूरा विश्वास था कि वह उनको पहचानने में गलती नहीं कर सकती।

उनको देख कर वह रोती हुई अपनी जगह से निकली और अपने सारे भाइयों का अलग अलग नाम लेते हुए उनकी बॉहों में जा कर गिर गयी।

वे अपनी छोटी बहिन को देख कर बहुत खुश हुए। वे भी अपनी बहिन को पहचान गये थे हालाँकि वह भी अब पहले से कहीं ज़्यादा लम्बी और सुन्दर हो गयी थी।

वे रो रहे थे, वे हँस रहे थे। उनको तुरन्त ही पता चल गया कि उनकी सौतेली माँ ने उन सबके साथ बहुत बेरहमी से बरताव किया है।

बड़े भाई ने अपनी बहिन को बताया — "हम सब जब तक सूरज आसमान में है तब तक जंगली हंस के रूप में उड़ने के लिये मजबूर किये गये। और जब सूरज डूब जाता है तब हम आदमी के रूप में आ सकते हैं।

इसलिये जब सूरज डूबने वाला होता है तो हमको यह देखना पड़ता है कि हम किसी ऐसी जगह के आस पास हो जहाँ हम खड़े हो सकें। क्योंकि अगर उस समय हम आसमान में हुए तो हमारे नीचे गिर जाने का डर है।

हम लोग यहाँ इस किनारे पर नहीं रहते। इस समुद्र के उस पार एक और जमीन है जो इतनी ही अच्छी है वहाँ रहते हैं और वहाँ पहुँचने के लिये हमें इस समुद्र को पार करना पड़ता है।

हमारे इस रास्ते पर कोई ऐसा टापू नहीं है जहाँ हम रात बिता सकें। बस एक छोटी सी चट्टान है जो समुद्र के बीच में उठी हुई है। वह चट्टान भी इतनी बड़ी नहीं है जो हम सबको जगह दे सके।

हॉ अगर हम बहुत ही पास पास खड़े हों तब हम उसके ऊपर आराम कर सकते हैं। पर अगर समुद्र में तूफान आने लगे तब वहॉ बहुत मुश्किल हो जाती है पर फिर भी वह हमारे लिये एक सहारा तो है ही।

जब हम अपनी आदमी की शक्ल में होते हैं तब हम वहॉ आराम करते हैं। बिना उस चट्टान के हम अपने घर कभी नहीं आ सकते हैं क्योंकि हमको यहॉ आने के लिये साल के दो सबसे ज्यादा लम्बे दिन लगते हैं।

हमको यहॉ अपनी जमीन पर साल में केवल एक बार आने की और वहॉ केवल ग्यारह दिन रहने की ही इजाज़त है।

जब हम इस जंगल के ऊपर से उड़ते हैं तो अपना महल देख लेते है जहॉ हमारे पिता रहते हैं और जहॉ हम पैदा हुए थे। यहॉ से हम अपने चर्च की ऊॅची मीनार भी देख सकते हैं जहॉ हमारी मॉ सोयी हुई है।

यह बहुत अच्छा हुआ कि हमने तुमको यहॉ देख लिया। हम यहॉ दो दिन ज़्यादा रह सकते हैं पर उसके बाद हमको अपनी जमीन पर चले जाना चाहिये जो हमारी तो नहीं है पर ठीक है।

पर हम तुमको अपने साथ कैसे ले जायें क्योंकि न तो हमारे पास कोई जहाज है और न ही कोई नाव?”

ऐलीसा बोली — "पर मैं तुमको इस जादू से आजाद कैसे कराऊॅ?" और वे लोग सारी रात बातें करते रहे बस कुछ ही देर सोये।

सुबह को ऐलीसा की ऑख हंसों के पंख के फड़फड़ाने से खुली। उसके सब भाई सुबह होते ही हंस बन चुके थे और वे सब ऊपर आसमान में उड़ रहे थे। उसके बाकी सब भाई तो चले गये पर उसका सबसे छोटा भाई उसी के पास रह गया।

वह उसकी गोद में सिर रख कर लेटा हुआ था और वह उसके पंख सहला रही थी। उन दोनों ने सारा दिन साथ साथ बिताया। शाम को उसके दूसरे भाई भी वापस आगये। जब सूरज डूब गया तो उसके सभी भाई फिर से आदमी बन गये।

उसका एक भाई बोला — "कल हम लोग चले जायेंगे और फिर एक साल तक नहीं आयेंगे। पर हम तुमको यहॉ ऐसे भी नहीं छोड़ सकते। क्या तुम हमारे साथ चलने की हिम्मत रखती हो?

मेरी बॉह तो इतनी मजबूत है कि वह तुमको जंगल के उस पार तक ले जा सकती है। तो हमारे पंख भी इतने मजबूत होने चाहिये जो हम तुमको समुद्र पार ले जा सकें।"

ऐलीसा बोली — "हॉ हॉ क्यों नहीं। तुम मुझे अपने साथ ले चलो।" वह सारी रात उन सबने एक जाल बनाने में गुजार दी। उन्होंने वह जाल काफी बड़ा और मजबूत बनाया। ऐलीसा उस

जाल में लेट गयी और जब सुबह हो गयी तो उसके भाई फिर से हंस बन गये।

उन्होंने अपनी चोंचों में उस जाल को उठाया और अपनी बहिन को ले कर आसमान में उड़ चले जो अभी भी सो रही थी। जब सूरज की रोशनी उसकी ऑखों पर पड़ी तो एक हंस उसके ऊपर ऐसे उड़ा जिससे उसकी ऑखों पर सूरज की रोशनी न पड़े।

वे अभी किनारे से बहुत दूर ही थे कि ऐलीसा की ऑख खुल गयी। उसको लगा कि जैसे वह सपना देख रही है – समुद्र के ऊपर आसमान में उड़ना। उसके बराबर में ही उसके खाने के लिये पकी हुई बैरीज़ की एक शाख और कुछ मीठी जड़ें रखी हुई थी।

उसके सबसे छोटे भाई ने उसके लिये उनको इकट्ठा किया था और उनको उसके लिये वहॉ रख दिया था। उसको यह भी पता चल गया था कि वही उसकी ऑखों को सूरज की धूप से बचाने के लिये उसके सिर के ऊपर उड़ रहा था।

वे लोग हवा में सारा दिन तीर की तरह से उड़ते रहे। पर क्योंकि वे अपनी बहिन को ले जा रहे थे वे पहले के मुकाबले में बहुत धीरे उड़ रहे थे। रात होने वाली थी और तूफान आने वाला था।

ऐलीसा सूरज डूबता देख कर डर गयी क्योंकि वह समुद्र के बीच की चट्टान जिसका उसके भाइयों ने जिक्र किया था उसको कहीं दिखायी ही नहीं दे रही थी।

उसको ऐसा लगा कि हंसों के पंख और बहुत ज़ोर ज़ोर से चलने लगे हैं। उसको इस बात का भी बहुत अफसोस हुआ कि उसकी वजह से वे जल्दी नहीं उड़ पा रहे हैं।

सूरज जल्दी ही डूब जायेगा और वे हंस से फिर आदमी बन जायेंगे। और आदमी बन जायेंगे तो वे समुद्र में गिर जायेंगे और डूब जायेंगे।

उसने दिल से भगवान की प्रार्थना करनी शुरू कर दी पर फिर भी कोई भी चट्टान उसको कहीं भी नजर नहीं आ रही थी।

काले काले बादल घिरते चले आ रहे थे और चलती हुई तेज़ हवाऐं बता रहीं थीं कि तूफान जल्दी ही आने वाला है। बादल बहुत तेज़ी से इधर उधर दौड़ रहे थे। बिजली भी चमकना शुरू हो गयी थी। तभी सूरज समुद्र के किनारे को छूने वाला था।

उसी समय हंसों ने नीचे की तरफ बहुत ज़ोर से कूद मारी। ऐलीसा को लगा कि वे हंस नीचे गिर रहे हैं सो उसका दिल बहुत ज़ोर से धड़का। पर वे बीच में ही रुक गये।

सूरज समुद्र में आधा डूब गया था कि तभी ऐलीसा को समुद्र में वह चट्टान दिखायी दी। ऊपर से वह चट्टान पानी में से बाहर निकलते हुए एक सील मछली के सिर जितनी बड़ी दिखायी देरही थी।

सूरज बहुत तेज़ी से नीचे जा रहा था। वह अब एक सितारे जितना बड़ा दिखायी दे रहा था कि उसके पैरों ने जमीन छुई। उसने

देखा कि उसके भाई भी हाथ में हाथ डाले उसके पास ही खड़े हुए थे। उन लोगों के लिये बस वह ठीक जगह थी।

समुद्र की लहरें उस चट्टान से टकरा टकरा कर उनके ऊपर पानी डाल रही थीं। बार बार बिजली चमक जाती थी। तब भाई बहिन ने मिलकर एक साम्स गाया जिसने उनको काफी तसल्ली और हिम्मत दी।

अगले दिन सुबह हवा शान्त थी। जैसे ही सूरज निकला ऐलीसा के भाई फिर से हंस बन गये थे सो वे ऐलीसा को ले कर फिर उड़ चले। नीचे समुद्र में अभी भी ऊॅची ऊॅची लहरें उठ रही थीं और उन पर बहुत सारे हंस तैर रहे थे।

जब सूरज थोड़ा और ऊपर उठा तो ऐलीसा को एक पहाड़ी जगह दिखायी दी जिसकी चोटियॉ उसको हवा में तैरती नजर आरही थीं। वे चोटियॉ बरफ से ढकी हुई थीं और उनके बीच में एक किला था जो करीब करीब एक मील लम्बा था।

नीचे बहुत सारे पाम के पेड़[32] लगे हुए थे और किसी चक्की के पाट जितने बड़े बहुत सारे रंगों के बहुत सारे फूल खिले हुए थे। ऐलीसा ने अपने भाइयों से पूछा कि क्या यही वह जगह थी जहॉ उनको आना था। उन्होंने कहा "नहीं।"

[32] Palm trees are of many types. They normally grow on sea coastal areas. In India these rees are flound plentily in Tamilnadu and Keral. See its picture above.

वास्तव में उसने जो देखा वह फ़ैटा मौरगैना[33] का हमेशा जगह बदलता हुआ महल था। उसमें धरती का कोई भी आदमी जाने की हिम्मत नही कर सकता था।

ऐलीसा ने जब दोबारा उस तरफ देखा तो वह किला़ पाम के पेड़ फूल सभी कुछ उसको गायब होता नजर आया। उसकी जगह अब वहॉ बीस शानदार चर्च खड़े थे – सब एक से और सबकी खिड़कियॉ नुकीली।

जब वह उनके और पास आयी तो वे जहाजी बेड़ा[34] बन गये और जब उसने उनकी तरफ दोबारा देखा तो वहॉ कोहरे के अलावा और कुछ भी नहीं था।

इस तरह से नयी नयी चीजें देखते हुए आखिर में वे उस जमीन पर आ गये जहॉ उनको आना था। वहॉ नीले नीले सुन्दर पहाड़ खड़े हुए थे जिनपर सीडर के पेड[35] लगे हुए थे और वहॉ कई सारे शहर और महल थे।

वे लोग वहॉ शाम होने से बहुत पहले ही पहुॅच गये थे और एक पहाड़ के पास एक गुफा में बैठ गये थे जिसमें बड़ी बड़ी बेलें इतनी घनी फैली हुई थीं कि लगता था जैसे उस गुफा में हरा हरा कालीन बिछा हो।

[33] Fata Morgana – name of the witch who has been mentioned in “Three Oranges” story also, given in
[34] Translated for the words “Fleet of Ships”
[35] Cedar trees

ऐलीसा के सबसे छोटे भाई ने उसको उसके सोने की जगह दिखायी और बोला — "अब देखते है कि यहॉ तुम क्या सपने देखती हो।"

वह तुरन्त बोली — "काश मैं सपने में यह देख सकूॅ कि मैं तुम को कैसे आजाद कराऊॅ।" इस बारे में वह इतना ज्यादा सोचती रही और भगवान से प्रार्थना करती रही कि वह यह सब सपने में भी करती रही।

जब वह वहॉ सो गयी तो उसको लगा कि वह अकेली ही फ़ैटा मौरगैना के बादलों के महल के ऊपर उड़ रही है।

वहॉ उसको एक परी मिली जो बहुत गोरी और सुन्दर थी। फिर भी उसकी शक्ल उस बुढ़िया से मिलती थी जो उसको जंगल में मिली थी और जिसने उसको बैरीज़ दी थीं और उन हंसों के बारे में बताया था जो सोने का ताज पहने थे।

परी बोली — "तुम्हारे भाई आजाद हो सकते हैं पर उसके लिये क्या तुम्हारे पास हिम्मत हैऋ यह सच है कि वह समुद्र का पानी जो पत्थरों की शक्ल बदल सकता है तुम्हारे हाथों से ज्यादा मुलायम है पर तुम्हारे हाथ जो दर्द महसूस कर सकते हैं वह वह नहीं कर सकता। उसके दिल भी नहीं है जो वह गुस्सा या दिल में दर्द महसूस कर सके जो तुम कर सकती हो।

तुम मेरे हाथ में यह काटने वाला नैटिल[36] का पौधा देख रही हो? ऐसे बहुत सारे नैटिल के पौधे उस गुफा के आस पास उगे हुए हैं जहॉ तुम सोती हो।

पर याद रखना कि तुमको केवल वही पौधे इस्तेमाल करने हैं जो चर्च के कम्पाउंड में बनी कब्रों के ऊपर उगे हुए हैं। सो तुम उन्हीं को इकट्ठा करो। हालॉकि उससे तुम्हारे हाथ जलने लगेंगे और उनमें छाले पड़ जायेंगे।

उन नैटिल के पौधों को अपने पैरों से कुचलना तो उनमें से रुई जैसी चीज़ निकलेगी। उस रुई को तुम कातना और उसके धागे से लम्बी बॉह वाली ग्यारह शाही कमीजें बनाना। एक बार जब तुमने ये ग्यारह कमीजें बना कर उनके ऊपर फेंक दीं तो उनके ऊपर किया हुआ जादू टूट जायेगा।

यह बात तुम और ध्यान में रखना कि तुमको इस काम में चाहे कई साल लग जायें पर जब से भी तुम इस काम को शरू करो और जब तक खत्म करो तुम बोलना नहीं।

जैसे ही तुम एक शब्द बोली तो वह तुम्हारे भाइयों के दिल में चाकू की तरह से लगेगा। इस तरह उनकी जिन्दगी तुम्हारी जबान में है। जो भी मैंने तुमसे कहा है वह सब तुम याद रखना।"

[36] Stinging Nettle – a plant having several species, five of which have many hollow stinging hairs on their leaves and stems, which act like hypodermic needles,

फिर परी ने ऐलीसा के हाथ से नैटिल छुआयी तो उसने ऐलीसा के हाथ में जलन पैदा कर दी जिससे वह जाग गयी।

दिन निकले काफी देर हो चुकी थी। उसने देखा कि जैसे नैटिल के पौधे उसने सपने में देखे थे वैसे ही पौधे उसको चारों तरफ बहुतायत से लगे हुए थे जहॉ वह सो रही थी।

उसने घुटने के बल बैठ कर भगवान को धन्यवाद दिया और वहॉ से उठ कर अपना काम शुरू करने चल दी।

उसने अपने कोमल हाथों से वह कॉटों वाली नैटिल चुनी जिसने उसके हाथों पर बड़े बड़े छाले डाल दिये पर उसने वह सब इस आशा में सह लिया कि वह अपनी प्यारे भाइयों को अपनी सौतेली मॉ के जादू से आजाद करा सकेगी।

उसने नैटिल के हर पौधे को अपने नंगे पैरों से कुचला और उसकी हरी रुई को काता।

जब उसके भाई शाम को घर लौटे तो वे यह देख कर चिन्ता में पड़ गये कि उनकी बहिन तो बोल ही नहीं रही थी। उनको लगा कि यह कहीं उनकी सौतेली मॉ का डाला हुआ कोई नया जादू न हो।

पर जब उन्होंने उसके हाथ देखे तो वे समझ गये कि वह उनको आजाद कराने के लिये ही यह सब कर रही थी। सबसे छोटा भाई तो बहिन के हाथों को देख कर रो ही पड़ा।

पर आश्चर्य की बात ऐलीसा के शरीर पर जहॉ जहॉ उसके ऑसू गिरे वहॉ वहॉ से उसका दर्द भी खत्म हो गया और उसके छाले भी ठीक हो गये।

वह रात भर करवटें बदलती रही क्योंकि उसको चैन ही नहीं था जब तक वह अपने भाइयों को उस जादू से आजाद नहीं करा लेती।

अगले दिन जब उसके भाई वहॉ से चले गये तो वह सारा दिन अकेली बैठी रही पर समय इससे पहले कभी इतनी जल्दी नहीं भागा था।

उसकी एक कमीज बन गयी थी और अब वह दूसरी कमीज बनाने बैठी। तभी उसने पहाड़ पर शिकारी बिगुल[37] बजने की आवाज सुनी।

वह आवाज सुन कर वह डर गयी क्योंकि वह आवाज पास आती जा रही थी और फिर उसने शिकारी कुत्तों के भौंकने की आवाज सुनी। डर कर वह अपना सामान ले कर गुफा के अन्दर भागी और जा कर उस गठरी पर बैठ गयी जिसमें नैटिल रखी हुई थी।

तभी पास की एक झाड़ी में से एक बड़ा सा शिकारी कुत्ता भागता हुआ आया। उसके पीछे एक और कुत्ता था और उसके

[37] Hunting horn

पीछे एक और कुत्ता था। उन कुत्तों के पीछे पीछे भागते भागते कुछ ही देर में शिकारी भी वहीं आ कर इकट्ठे हो गये।

इन शिकारियों में से सबसे सुन्दर शिकारी था वहॉ का राजा। वह ऐलीसा के पास आया। राजा ने इतनी सुन्दर लड़की पहले कभी नहीं देखी थी। उसने ऐलीसा से पूछा — "बच्ची, तुम यहॉ कैसे आयीं?"

ऐलीसा ने ना में अपना सिर हिला दिया क्योंकि वह बोल नहीं सकती थी। क्योंकि उसके भाइयों की आजादी और जिन्दगी इसी बात पर आधारित थी कि वह न बोले। उसने अपने हाथ भी अपने ऐप्रन के पीछे छिपा लिये ताकि राजा यह न देख ले कि वह कितने कष्ट में थी।

राजा को उसको इस तरह वहॉ अकेले बैठे देख कर उसके ऊपर तरस आ गया।

वह बोला — "चलो, तुम मेरे साथ चलो। मैं तुमको यहॉ इस तरह से अकेले नहीं छोड़ सकता। तुम यहॉ इस तरीके से नहीं रह सकतीं।

अगर तुम इतनी ही अच्छी हो जितनी तुम सुन्दर हो तो मैं तुमको रेशम और मखमल के कपड़े पहनाऊॅगा, तुम्हारे सिर पर सोने का ताज रखूॅगा और तुमको अपने सबसे अच्छे महल में रखूॅगा।" इतना कह कर राजा ने उसको उठा कर अपने घोड़े पर बिठा लिया।

यह सब देख कर ऐलीसा रो पड़ी और अपने हाथ मलने लगी तो राजा बोला — "मेरी तो बस यही इच्छा है कि तुम खुश रहो। देखना एक दिन तुम इस सबके लिये मुझे धन्यवाद दोगी।"
और वह उस लड़की को अपना घोड़े पर अपने आगे बिठा कर घोड़े को पहाड़ों में से हो कर दौड़ाता हुआ चला गया। उसके शिकारी लोग उसके पीछे आ रहे थे। शाम तक वह अपने महल पहुॅच गया।

राजा उसको अपने महल में ले गया जहॉ संगमरमर के ऊॅचे ऊॅचे कमरों में बहुत सुन्दर शानदार फव्वारे चल रहे थे। और जहॉ छतें और दीवारें दोनों ही तस्वीरों से सजी हुई थी। पर उसने इनमें से किसी की तरफ नहीं देखा। वह तो बस रोती रही और दुखी होती रही।

महल में पहुॅच कर स्त्रियों ने उसको शाही कपड़े पहनाये, उसके बालों में मोती गूॅधे और उसके छालों भरे हाथों में बहुत ही मुलायम दस्ताने पहनाये। ये सब पहन कर वह इतनी सुन्दर लग रही थी कि राजा का सारा दरबार उसके सामने बहुत नीचे तक झुका जा रहा था।

फिर राजा ने उससे शादी करने का विचार किया हालॉकि पादरी[38] ने राजा से कहा भी कि जंगल में पायी जाने वाली यह

[38] Translated for the word "Archbishop" – a high ranking person in the church

लड़की जादूगरनी भी हो सकती है जिसने राजा की ऑखों पर परदा डाल दिया और पलक झपकते ही उसका दिल चुरा लिया।

पर राजा ने उसकी एक न सुनी और हुक्म दिया कि संगीत बजाया जाये़ बढ़िया बढ़िया खाने लगाये जायें और सुन्दर सुन्दर लड़कियॉ वहॉ नाच करें।

लड़की को खुश करने के लिये उसको खुशबूदार बागीचों में घुमाने के लिये ले जाया गया, शानदार कमरे दिखाये गये पर कोई भी चीज़ उसके होठों पर मुस्कुराहट और ऑखों में चमक न ला सकी। दुख ने उसकी हर खुशी पर ताला लगा रखा था।

अन्त में राजा ने उसके सोने वाले कमरे से लगा एक छोटे से कमरे का दरवाजा खोला। वह कमरा उसकी गुफा की तरह से हरे रंग की कढ़ाई से भरा हुआ था और बिल्कुल वैसा ही लग रहा था जैसी कि उसकी वह गुफा थी जहॉ से वह उसको ले कर आया था।

उस कमरे के फर्श पर नैटिल की रुई की एक गठरी पड़ी हुई थी जिससे वह उसका सूत कात रही थी। और उस कमरे की छत से वह कमीज लटक रही थी जो उसने खत्म कर ली थी। उसका एक शिकारी उत्सुकतावश उसकी वे सब चीजें वहॉ से उठा लाया था।

राजा बोला — "यहॉ बैठ कर तुमको लगेगा कि तुम अपनी पुरानी जगह बैठी हुई हो। यह वह तुम्हारा काम है जो तुम वहॉ कर रही थीं। इन सबके बीच में तुमको वहीं बैठे रहने का आनन्द मिलेगा।"

जब ऐलीसा ने वह सब चीज़ें देखीं जो उसके लिये बहुत कीमती थीं तो एक मुस्कुराहट उसके होठों पर दौड़ गयी। उसके चेहरे की लाली लौट आयी। उसकी यह आशा वापस आ गयी कि अब वह अपने भाइयों को उस जादू से आजाद करा सकेगी और इस खुशी में उसने राजा के हाथ चूम लिये।

राजा ने भी उसको अपने सीने से लगा लिया और यह घोषित करने का हुक्म दिया कि उनकी शादी की तैयारी की जाये। सो जंगल से लायी गयी देश की एक गूँगी लड़की देश की रानी बनने वाली हो गयी।

चर्च के पादरी ने राजा के कान में फिर से उसकी कुछ बुराई की लेकिन राजा ने फिर से उसको अनसुना कर दिया और अब उन दोनों की शादी होने वाली थी। पादरी को खुद अपने हाथ से उसके सिर पर ताज रखना था।

पर क्योंकि उस राजा ने उसकी बात नहीं सुनी थी इसलिये गुस्से में आ कर उसने ताज का गोला ऐलीसा के सिर पर थोड़ा नीचे की तरफ रख दिया जिससे उसके सिर को बड़ी तकलीफ हुई।

पर उससे भी ज्यादा उसके दिल को तकलीफ हुई क्योंकि वह अपनी इस तकलीफ को बोल कर अपने भाइयों को दुख नहीं पहुँचाना चाहती थी इसलिये वह उस शरीर की तकलीफ को सह गयी।

वह कुछ नहीं कह सकती थी क्योंकि अगर वह एक शब्द भी बोलती तो उसके भाइयों को अपनी ज़िन्दगी से हाथ धोना पड़ता।

पर इस दयावान और सुन्दर राजा के लिये उसके मन में प्यार था क्योंकि वह उसको खुश रखने के लिये अपने तरीके से पूरी कोशिश कर रहा था। हर दिन वह उसको ज़्यादा और ज्यादा चाहने लगी थी।

काश वह उसमें अपने लिये विश्वास पैदा कर सकती और उसे यह बता सकती कि वह क्यों दुखी थी। पर उसको तो चुप ही रहना है और उसको अपना काम खत्म करना है।

सो वह रात को समय निकाल कर अपने उस गुफा जैसे कमरे में जाती और वहॉ जा कर एक के बाद एक कमीज बनाती। जब वह सातवीं कमीज बना रही थी तो उसकी रुई खत्म हो गयी।

उसको मालूम था कि उसको चर्च के कम्पाउंड में कब्रों के ऊपर उगे हुई नैटिल के पौधे ही लेने चाहिये। और वह उसको अपने आप ही इकट्ठे करने होंगे पर वह वहॉ जाये कैसे?

"मेरे दिल के दर्द के सामने मेरी उॅगलियों का दर्द क्या है? मुझे यह खतरा तो लेना ही पड़ेगा। मुझे पूरा विश्वास है कि भगवान मेरा जरूर ख्याल रखेंगे।"

यह सोच कर जैसे कोई बुरा काम करता है और उसमें उसको डर लगता है उसी तरह से डरती हुई वह दबे पॉव उठ कर लम्बे

लम्बे गलियारों में से होती हुई चॉदनी में नहाये बागीचे को पार करती हुई सूनी सड़कों से होती हुई चर्च के कम्पाउंड में पहुॅच गयी।

वहॉ पहुॅच कर उसने देखा कि कुछ चुड़ैलें कब्र के एक बड़े से पत्थर पर बैठी थीं। उन्होंने अपने फटे कपड़े उतारे हुए थे जैसे कि वे अभी नहाने जाने वाली हों। अपनी पतली पतली उॅगलियों से वे नयी बनी कब्रें खोद खोद कर खोल रहीं थीं और उनमें रखे मरे हुए शरीरों का मॉस खा रहीं थीं।

ऐलीसा को उनके पास से गुजरना था और वे उसको देख रही थीं। सो उसने पहले एक प्रार्थना की फिर अपने नैटिल के पौधे उखाड़े और वापस महल आ गयी।

ऐसा करते हुए उसको केवल एक आदमी ने देखा और वह था चर्च का पादरी क्योंकि जब सब लोग सो रहे थे तो वह जाग रहा था। जो कुछ भी उसने उस लड़की के बारे में कहा था अब उसके पास उस बात का सबूत था।

उसने सोचा रानी के साथ कुछ गड़बड़ तो थी। वह जरूर ही कोई जादूगरनी थी और इसी वजह से वह राजा और उसके लोगों को धोखा देने में सफल हो गयी थी।

अगले दिन पादरी ने राजा को चर्च में बुलाया और उसको वह सब बताया जो कुछ उसने पिछली रात देखा था और जिसका उसे डर था।

जैसे ही उसके मुॅह से रानी के बारे कड़वे शब्द निकलने शुरू हुए तो वहॉ लगी संतों की मूर्तियों ने न में अपना सिर हिलाया जैसे वे कह रही हो कि यह आदमी झूठ बोल रहा है और ऐलीसा बिल्कुल बेकुसूर है।

पर पादरी के पास इसकी दूसरी सफाई थी। उसने कहा कि संत भी यही बात कह रहे हैं जो वह कह रहा है और वे उस लड़की की नीचता पर अपना सिर हिला रहे हैं।

यह सुन कर राजा की आखों से दो बड़े ऑसू निकल कर उसके गालों पर ढुलक गये और वह भी उस लड़की पर शक करता हुआ अपने महल को चला गया।

उस रात उसने सोने का बहाना किया पर उसकी ऑखों में नींद कहॉ। रात को उसने देखा कि ऐलीसा उठी। हर रात वह ऐलीसा को उठते देखता रहा। हर बार वह चुपचाप उसका पीछा करता रहा और हर बार उसने उसको उस छोटे कमरे में गायब हो जाते हुए देखा। रोज ब रोज यह सब देख कर उसका गुस्सा बढ़ता ही गया।

ऐलीसा ने भी यह देखा कि राजा गुस्सा है पर उसकी समझ में उसकी कोई वजह नहीं आयी बल्कि उसने उसको और ज़्यादा चिन्ता में डाल दिया। इस तरह एक और चिन्ता उसकी अपने भाइयों की चिन्ता में जुड़ गयी।

यह सोच कर वह रो पड़ी और उसके ऑसू उसकी शाही जामुनी पोशाक पर गिर पड़े। गिरते ही वे वहॉ हीरों की तरह

चमकने लगे। और जिसने भी यह तमाशा देखा वह यही इच्छा करने लगा कि काश वह रानी होता।

इस बीच उसका काम करीब करीब खत्म हो गया था। बस एक कमीज रह गयी थी। पर फिर से उसकी वह रुई कम पड़ गयी थी सो उसको फिर से नैटिल का पौधा लेने के लिये जाना था।

अब उसके पास एक भी नैटिल का पौधा नहीं था। एक बार फिर से, शायद आखिरी बार, उसको चर्च के कम्पाउंड में जाना होगा और थोड़े से और पौधे लाने होंगे।

अबकी बार वह अकेले जाते में और उन चुड़ैलों से डर रही थी। पर उसकी इच्छा शक्ति और भगवान में विश्वास बहुत मजबूत थे सो वह अपना काम करने चल दी। उधर राजा और पादरी भी उसके पीछे पीछे चल दिये।

उन्होंने देखा कि वह चर्च के कम्पाउंड के लोहे के दरवाजे के अन्दर जा कर गायब हो गयी। वे भी हिम्मत कर के उसके पीछे पीछे चर्च के कम्पाउंड में दाखिल हो गये तो उन्होंने देखा कि एक कब्र के एक बड़े से पत्थर पर कुछ चुड़ैलें बैठीं हैं। जैसे पहले ऐलीसा ने उनको देखा था।

राजा वहॉ से वापस लौट आया क्योंकि राजा ने सोचा कि ऐलीसा भी उनमें से एक ही होगी – वही ऐलीसा जो उस शाम उस के इतने पास बैठी हुई थी।

उसका मन उसको सजा देने का हुआ पर फिर उसने सोचा कि जनता को ही इस बात का फैसला करने दो। सो जनता ने अपना फैसला सुनाया कि रानी को जला कर मार देना चाहिये।

इस तरह रानी को उसके शाही महल से हटा कर एक अॅधेरे और सीलन भरे तहखाने में बन्द कर दिया गया। उस तहखाने में उसकी खिड़की की सलाखों में से आती हवा सीटी बजाती थी।

रेशम और मखमल का तकिया देने की बजाय उसके सिर के नीचे लगाने के लिये उसको नैटिल की एक पोटली दे दी गयी जो उसने इकट्ठी कर रखी थी। ओढ़ने के लिये उसको नैटिल की कमीजें दे दी गयीं।

वह फिर से अपने काम में लग गयी और प्रार्थना करती रही। पर उसको तसल्ली देने के लिये कोई भी नहीं आया।

शाम को उसने अपनी खिड़की के पास हंसों के पंखों की फड़फड़ाहट सुनी। उसके सबसे छोटे भाई ने आखिर उसे ढूॅढ ही लिया था।

वह खुशी से रो पड़ी। हालॉकि उसको पता था कि यहॉ उसकी यह आखिरी रात है क्योंकि उसका काम तो अब खत्म हो चुका था और उसके भाई भी यहॉ थे।

पादरी उसके आखिरी समय में उसके पास ठहरने के लिये आना चाहता था क्योंकि राजा से उसने इस बात का वायदा किया था कि कम से कम वह उसके लिये यह काम तो कर ही सकता था।

पर ऐलीसा ने ना में सिर हिला कर और इशारों से उसको मना कर दिया था कि वह उसको अपने पास रखना नहीं चाहती थी।

यह उसकी आखिरी रात थी और उसको अपना काम खत्म करना था नहीं तो उसकी मेहनत और तकलीफ़ उसके ऑसू उसकी रातों का जागना जो कुछ भी दुख उसने उठाया था सब बेकार जाता।

सो पादरी ऐलीसा को बुरा भला कह कर वहॉ से चला गया। पर ऐलीसा को मालूम था कि वह बेकुसूर है सो वह अपने काम में लगी रही।

छोटी चुहियें फर्श पर इधर उधर दौड़ रही थीं और उसकी सहायता के लिये उसको नैटिल ला ला कर दे रही थीं। एक चिड़ा भी उसकी खिड़की पर आ कर बैठ गया था और उसके लिये सारी रात गाना गाता रहा ताकि उसका अपने काम में मन लगा रहे। अभी पौ ही फटी थी और सूरज निकलने में अभी एक घंटा बाकी था कि उसके ग्यारह भाई महल के दरवाजे पर पहुॅच गये और उन्होंने राजा से मिलने की इच्छा प्रगट की।

पर वहॉ के चौकीदारों ने उनको कहा कि यह नामुमकिन है क्योंकि अभी तो रात ही थी और राजा सो रहा था और उसको अभी जगाया नहीं जा सकता था।

उन्होंने उनसे प्रार्थना भी की पर जब उन्होंने उनकी प्रार्थना नहीं सुनी तो उन्होंने उनको इतनी जोर से चिल्ला कर धमकी दी कि वे

डर गये और राजा यह जानने के लिये बाहर निकल आया कि मामला क्या है। पर उसी समय सूरज निकल आया और उसके भाई फिर से हंस बन कर महल के ऊपर उड़ गये।

उधर सारे शहर वाले वहॉ इकट्ठा हो रहे थे ताकि वे रानी को जलते हुए देख सकें। ऐलीसा को एक गाड़ी में बिठा कर ले जाया जा रहा था जिसे एक बूढ़ा घोड़ा खींच रहा था।

उसको बहुत ही खुरदरे कपड़े पहनाये गये थे। उसके बाल उसके चेहरे के चारों तरफ बिखरे हुए थे। उसके चेहरे का रंग पीला पड़ा हुआ था। उसके होठ चुपचाप से प्रार्थना कर रहे थे और उसकी उॅगलियॉ हरी रुई के सूत से कुछ बुन रही थीं।

उसने अपना अधूरा काम नहीं छोड़ा था वह उसको अपने साथ ही ले आयी थी। मरने के लिये जाते समय भी वह अपना काम कर रही थी। दस कमीजें उसके पैरों में पड़ी हुई थीं और ग्यारहवीं कमीज पर वह काम कर रही थी।

देखने वाले लोग कह रहे थे — "देखो यह क्या बुड़बुड़ा रही है। इसके पास तो साम की किताब भी नहीं है। लगता है कि यह वहॉ बैठी बैठी अपना कुछ जादू कर रही है। उसका वह जादू छीन लो और उसे तोड़ कर फेंक दो।"

वे आगे बढ़ कर यह सब करने ही वाले थे कि ग्यारह हंस आसमान से नीचे उतरे और उसकी गाड़ी के चारों तरफ गोला बना कर उड़ने लगे। भीड़ डर गयी और डर के मारे पीछे हट गयी।

बहुत से लोग फुसफुसाये — "यह तो अच्छी निशानी है। लगता है कि यह बेकुसूर है।" पर किसी की खुल कर कुछ कहने की हिम्मत नहीं हुई।

ऐलीसा की गाड़ी वहॉ पहुॅच चुकी थी जहॉ उसको सजा मिलने वाली थी। सजा देने वाले ने उसका हाथ पकड़ कर उसको गाड़ी से नीचे उतारा तो जल्दी से उसने वे ग्यारह कमीजें उन ग्यारह हंसों के ऊपर फेंक दीं।

वे ग्यारह हंस तुरन्त ही ग्यारह सुन्दर राजकुनार बन गये पर सबसे छोटे भाई की एक बॉह अभी भी हंस का पंख थी क्योंकि उसकी कमीज की एक बॉह नही लग पायी थी। ऐलीसा उसको खत्म ही नहीं कर पायी थी।

उन हंसों को राजकुमारों में बदलते देख कर वह खुशी से चिल्लायी — "अब मैं बोल सकती हूॅ कि मैं बिल्कुल बेकुसूर हूॅ।"

जब सब लोगों ने देखा कि वहॉ क्या हो रहा था तो सबने उसके सामने ऐसे सिर झुकाया जैसे कि वे किसी संत के आगे सिर झुकाते।

पर इतने समय में जो दुख़ दर्द और गुस्सा उसने सहा था वह इतना ज्यादा था कि अब उससे वह और नहीं सहा जा रहा था सो वह बेजान सी अपने भाइयों की बॉहों में गिर पड़ी।

उसके सबसे बड़े भाई ने कहा — "यह बेचारी तो बिल्कुल बेकुसूर है।" और तब उसने बताया कि क्या सब कैसे हुआ था।

जब वह यह कहानी सुना रहा था तो लाखों गुलाबों की खुशबू से वहॉ की सारी हवा महक गयी।

क्योंकि जितनी लकड़ी उस राजकुमारी को जलाने के लिये वहॉ इकट्ठी की गयी थी सबमें गुलाब के फूलों के पेड़ की जड़ें निकल आयी थीं और उनमें से शाखें निकल निकल कर उनमें लाखों लाल गुलाब के खुशबूदार फूल खिल गये थे।

उनमें सबसे ऊपर एक सफेद गुलाब सितारे की तरह चमक रहा था। राजा ने वह फूल तोड़ कर ऐलीसा के सामने की तरफ लगा दिया।

चर्च की सारी घॅटिया अपने आप बजने लगीं और चारों तरफ चिड़ियें ही चिड़ियें दिखायी देने लगीं। अब तो दुलहिन महल की तरफ अपने जुलूस के साथ ऐसे जा रही थी जैसे किसी राजा ने किसी भी दुलहिन को इस तरह से जाते हुए इससे पहले कभी नहीं देखा था।

7 बारह जंगली हंस[39]

एक बार आयरलैंड में एक राजा और रानी थे। उनके बारह बेटे थे परन्तु फिर भी वे दुखी थे क्योंकि उनके कोई बेटी नहीं थी।

ऐसा अक्सर होता है कि जो कुछ हमारे पास होता है हम उसकी तो परवाह करते नहीं हैं और जो नहीं होता उसी की इच्छा करते हैं। ऐसा ही कुछ इस रानी के साथ भी था। वह एक लड़की के लिये बहुत बेचैन थी।

एक दिन जाड़ों के मौसम में जब सब जगह बरफ ही बरफ फैली हुई थी रानी ने एक ताजा मरा हुआ बछड़ा और उसके बराबर में बैठा एक रैवन[40] पक्षी देखा तो उसके मन में एक इच्छा जागी और वह कह उठी — "काश मेरे एक बेटी होती जिसका रंग बरफ जैसा सफेद होता, उसके गाल इस बछड़े के खून की तरह लाल होते और उसके बाल इस रैवन की तरह काले होते।"

[39] Twelve Wild Swans – a folktale of Ireland, Europe. This is very popular story of Europe, but is not limited to there.

[40] Raven is a crow-like bird. See its picture above. Although Raven is a worldwide famous bird still it is most popular and important bird of Native Indians in America and Canada. Read his tales published in Hindi in two books, "Raven Ki Lok kathayen-1" by Sushma Gupta published by Indra publishers, and "Raven Ki Lok Kathayen" by Sushma Gupta published by Prabhat Prakashan. There is one more book "Raven Ki Lok Kathayen-3" available from hindifolktales@gmail.com

पर जैसे ही ये शब्द उसके मुॅह से निकले कि वह डर के मारे कॉप गयी। उसने अपने सामने एक बहुत ही बूढ़ी औरत को खड़े देखा।

वह औरत बोली — "बेटी, ऐसी इच्छा को अपने मुॅह से निकाल कर तुमने अच्छा नहीं किया और अब तुम इसकी सजा भुगतने के लिये तैयार हो जाओ क्योंकि तुम्हारी यह इच्छा पूरी की जा चुकी है।

जैसी बेटी की तुमने इच्छा की है वैसी ही बेटी अब तुम्हारे घर में जन्म लेगी। परन्तु जिस समय वह जन्म लेगी उसी समय तुम अपने दूसरे बच्चों को खो दोगी।" यह कह कर वह औरत तो गायब हो गयी और रानी वहीं की वहीं बुत सी बनी खड़ी रह गयी।

उस बुढ़िया ने जैसा कहा था वैसा ही हुआ। समय आने पर उसने वैसी ही एक बेटी को जन्म दिया जैसी बेटी की उसने इच्छा की थी।

हालॉकि बेटी के आने के समय उसने अपने बारहों बेटों को एक कमरे में बिठा कर उन पर कड़ा पहरा लगा दिया पर जब उसके घर बेटी आयी तो पहरेदारों ने बाहर पंखों के फड़फड़ाने की आवाज सुनी।

उन्होंने बाहर देखा तो वहॉ उनको बारह हंस एक के बाद एक खुली खिड़की से बाहर जाते और उड़ते दिखायी दिये। वे सब तुरन्त ही जंगल की ओर उड़ गये और गायब हो गये।

राजा को अपने बेटों के इस तरीके से गायब हो जाने का बहुत ही ज़्यादा अफसोस हुआ। उसको अपनी पत्नी पर शायद और भी ज़्यादा गुस्सा आता अगर उसे यह पता चल जाता कि यह सब रानी की इच्छा का फल था।

राजकुमारी बहुत सुन्दर थी और सबकी बहुत प्यारी थी। जब वह बारह साल की हुई तो बहुत उदास और अकेली रहने लगी। उसने अपने उन भाइयों के बारे में पूछना शुरू कर दिया था जिनके लिये वह सोचती थी कि वे मर चुके थे।

रानी को यह भेद छिपाना बहुत मुश्किल हो गया था क्योंकि राजकुमारी एक के बाद एक सवाल पूछती ही जाती थी। अन्त में उसे अपनी बेटी को सब कुछ सच सच बताना ही पड़ा।

राजकुमारी बोली — "मॉ, मेरी ही वजह से मेरे भाई जंगली हंस बन कर तकलीफें उठा रहे हैं। मैं आज ही उनको ढूँढने जाती हूँ और फिर से उनको राजकुमारों के रूप में लाने की कोशिश करती हूँ।"

राजा और रानी दोनों ने उसको रोकने की बहुत कोशिश की पर वह नहीं रुकी।

अगली रात वह महल से निकल पड़ी और जंगल की ओर चल दी। उसने साथ में रास्ते मे खाने के लिये कुछ केक, मेवा, फल और मीठे वाले केंकड़े ले लिये।

चलते चलते अगले दिन शाम को उसको लकड़ी का एक घर दिखायी दिया। उस घर के चारों तरफ बागीचा था जिसमें सुन्दर सुन्दर फूल लगे थे। वह उस घर के अन्दर चली गयी।

अन्दर उसने एक खाने की मेज लगी देखी जिस पर बारह प्लेटें रखी थीं, बारह चम्मच रखे थे, बारह छुरी और कॉटे रखे थे। वहॉ केक थी, मुर्गा था और फल भी थे। उसी कमरे में एक तरफ आग जल रही थी। बराबर में एक दूसरा कमरा था जिसमें बारह पलंग पड़े थे।

अभी वह यह सब देख ही रही थी कि इतने में उसको पैरों की आवाज सुनायी दी और उसने देखा कि वहॉ बारह नौजवान चले आ रहे हैं। जैसे ही उन्होंने इस लड़की को देखा तो उनके चेहरों पर उदासी छा गयी।

उनमें से सबसे बड़ा नौजवान बोला — "ओह किसकी बदकिस्मती से तुम यहॉ आयी हो? क्योंकि केवल एक लड़की की वजह से ही हम अपने पिता के घर से निकाले गये हैं और अब हम सारा दिन हंसों के रूप में यहॉ रहते हैं।

इस बात को बारह साल बीत गये और हमने तभी यह कसम खायी थी कि हमारी ऑखों के सामने जो भी पहली लड़की आयेगी हम उसे जान से मार डालेंगे।

और अब यह बड़े अफसोस की बात है कि आज तुम जैसी भोली भाली और सुन्दर लड़की हमारे सामने आ गयी है। पर क्या करें हमें अपनी कसम तो पूरी करनी ही पड़ेगी।"

बोली — "मुझे मारिये मत। मैं ही आप लोगों की वह एकलौती बहिन हूॅ जिसकी वजह से आपको महल से निकलना पड़ा। कल से पहले मुझे इस बात का बिल्कुल भी पता नहीं था। मैं अपने माता पिता के मना करने पर भी आप लोगों को ढूॅढने और आप लोगों के लिये कुछ करने निकली हूॅ अगर मैं कुछ कर पाऊॅ तो।"

यह सुन कर बारहों नौजवानों की मुट्ठियॉ भिंच गयी और उनके मुॅह से निकल पड़ा — "हमारी कसम को आग लगे पर अब हम क्या करेंऋ"

तभी एक बुढ़िया उस मकान के अन्दर घुसी और बोली — "मैं बताती हूॅ कि तुम लोग क्या करो। सबसे पहले तो अपनी कसम तोड़ो जिसको तुम्हें लेना ही नहीं चाहिये था।

अगर तुम लोगों ने इस लड़की को और ज़्यादा कुछ कहा तो मैं तुम लोगों को पेड़ के तनों में बदल दूॅगी। पर मैं तुम लोगों का भला चाहने वाली हूॅ। यह लड़की भी तो तुम लोगों को इस शाप से आजाद कराने ही आयी है।"

फिर उसने उस लड़की से कहा — "बेटी, अब तुम अपने भाइयों के आजाद होने का तरीका सुनो। इस जंगल में बाहर की

तरफ जो कपास लगी है वह तुम अपने हाथ से इकट्ठा कर के उसको धुनो, कातो और उसके धागे से बारह कमीजें बनाओ।

पर इस सबके बीच अगर तुम एक बार भी बोलीं हॅसी या रोयी तो तुम्हारे ये भाई हमेशा के लिये हंस बने रह जायेंगे। यह काम पॉच साल में खत्म हो जाना चाहिये। और राजकुमारों तब तक तुम लोग अपनी बहिन की देखभाल करो।"

इतना कह कर वह बुढ़िया गायब हो गयी और भाई लोग यह सोचने लगे कि उनमें से सबसे पहले कौन अपनी बहिन का धन्यवाद करे।

तीन साल तक राजकुमारी कपास चुनने, उसे धुनने कातने और उसकी कमीजें बनाने में लगी रही। उसने तीन साल में आठ कमीजें बना लीं थीं। इस बीच वह बेचारी न हॅसी, न बोली और न रोयी।

एक दिन वह सुबह के समय बगीचे में बैठी सूत कात रही थी कि एक कुत्ता आया और उसके कन्धों पर अपने पंजे रख कर खड़ा हो गया। फिर उसने राजकुमारी का माथा चाटा और बाल भी चाटे।

इतने में उसे एक राजकुमार आता दिखायी दिया। उसने इस तरह अचानक वहॉ आने के लये राजकुमारी से कई बार माफ़ी मॉगी। फिर उसने उससे बातें करने की कई बार कोशिश की परन्तु राजकुमारी कुछ नहीं बोली।

इधर राजकुमार उसकी इन सब बातों से इतना मोहित हुआ कि वह उससे प्यार करने लगा। उसने उसको बताया कि वह एक देश का राजकुमार था और उसको अपनी पत्नी बनाना चाहता था।

इधर राजकुमारी भी उसको प्यार करने लगी थी। हालॉकि कई बातों में उसको ना में सिर हिलाना पड़ा परन्तु अन्त में उसने हॉ में सिर हिला दिया और अपना हाथ राजकुमार के हाथ में दे दिया। राजकुमारी को मालूम था कि उसके भाई और परी उसका पता लगा ही लेंगे सो जाने से पहले उसने अपनी रुई ली आठों कमीजें लीं और राजकुमार के साथ उसके घोड़े पर बैठ कर उसके साथ चल दी।

राजकुमार राजकुमारी को अपने घर ले तो जा रहा था परन्तु उसको अपनी सौतेली मॉ से डर लग रहा था कि कहीं उसने उसको स्वीकार नहीं किया तो। खैर, घर जा कर बड़ी धूमधाम से उन दोनों की शादी हो गयी।

सौतेली मॉ इस सबसे बिल्कुल भी खुश नहीं थी। उसको लग रहा था कि वह लड़की यकीनन ही जंगल के किसी लकड़हारे की बेटी थी इसलिये वह उसको बहुत परेशान करती थी परन्तु राजकुमार अपनी रानी को बहुत प्यार करता था।
समय आने पर छोटी रानी ने एक बेटे को जन्म दिया तो राजा को बहुत ही खुशी हुई परन्तु सौतेली मॉ इस बात से बहुत ही ज़्यादा नाखुश थी।

वह यह सोच ही रही थी कि वह उस बच्चे का क्या करे कि इतने में उसे बगीचे में एक भेड़िया दिखायी दिया। बस उसको समझ में आ गया कि उसको क्या करना है। उसने तुरन्त ही सोती हुई छोटी रानी के पास से बच्चे को उठाया और उसे भेड़िये की तरफ फेंक दिया।

भेड़िये ने भी तुरन्त ही बच्चे को अपने मुॅह में लपक लिया और बगीचे को पार करता हुआ जंगल की तरफ भाग गया। इधर रानी ने अपनी उॅगली चीर कर कुछ खून निकाला और छोटी रानी के मुॅह पर लगा दिया।

कुछ देर बाद राजकुमार शिकार से वापस लौटा तो बड़ी रानी ने उसके सामने झूठे ऑसू बहा कर उसे बताया कि छोटी रानी ने अपने बच्चे को खा लिया है और बच्चे का खून अभी भी उसके मुॅह पर लगा है। और यह कह कर उसने छोटी रानी का मुॅह भी राजकुमार को दिखा दिया।

राजकुमार यह सब देख सुन कर बहुत दुखी हुआ। इधर छोटी रानी बेचारी न कुछ बोल सकती थी और न रो सकती थी।
राजकुमार ने सब लोगों को यही बताया कि छोटी रानी बच्चे को लेकर खिड़की के पास खड़ी थी बच्चा उसके हाथों से छूट गया और एक भेड़िया उसको ले भागा।

परन्तु बड़ी रानी यह सब कहने के बाद सभी लोगों से छिपे रूप से यह भी कह देती थी कि यह सब गलत था और सही वही था कि वह अपने बच्चे को खा गयी थी।

काफी समय तक छोटी रानी दुख में डूबी रही क्योंकि एक तो उसका बच्चा मर गया था और दूसरे राजकुमार भी अब उससे कुछ खिंचा खिंचा रहता था। पर न वह कुछ बोली और न रोयी। वह केवल कमीजें बनाने में ही लगी रही।

अक्सर ही वह बारह हंसों को अपनी खिड़की के आस पास उड़ते देखती। धीरे धीरे पॉचवॉ साल भी खत्म होने को आया। उसकी ग्यारह कमीजें खत्म हो चुकी थीं और बारहवीं कमीज की केवल एक आस्तीन रह गयी थी। उसी समय उसने एक सुन्दर सी बेटी को जन्म दिया।

अबकी बार राजकुमार ने खुद उसके कमरे की पहरेदारी करने का निश्चय किया पर बड़ी रानी ने फिर भी किसी तरह उस बच्ची को भी छोटी रानी के पास से उठवा लिया।

वह उसको मारने ही वाली थी कि उसको फिर से एक भेड़िया बगीचे में दिखायी दे गया। बस उसने वह बच्ची भी उस भेड़िये की तरफ फेंक दी।

भेड़िये ने उसको भी तुरन्त ही अपने मुॅह में दबोच लिया और बगीचा पार कर के जंगल की तरफ भाग गया। रानी ने सोती हुई

रानी के मुॅह पर फिर खून लगा दिया और शोर मचा दिया कि छोटी रानी ने अपनी बच्ची को खा लिया।

घर के सभी लोग दौड़े चले आये और उन्होंने देखा कि बच्ची अपने बिस्तर पर नहीं है और छोटी रानी के मुॅह पर खून लगा है। बड़ी रानी सोचती थी कि इन दो घटनाओं के बाद छोटी रानी शायद इस दुख को नहीं सॅभाल पायेगी और वह मर जायेगी।

परन्तु छोटी रानी तो इस समय ऐसी हालत में थी कि न तो उसके पास सोचने का समय था न प्रार्थना करने का न रोने का न हॅसने का और न ही अपनी सफाई देने का। वह तो बस अपनी बारहवीं कमीज की आस्तीन पूरी करने में लगी हुई थी।

राजकुमार ने अपने घर वालों से कई बार कहा कि वह छोटी रानी को जंगल में वहीं छोड़ आता है जहॉ से वह उसको लाया था पर बड़ी रानी ने उसकी एक न सुनी और दरबारियों की सहायता से उसको उसी दिन तीन बजे जला कर मार देने का फैसला सुना दिया।

छोटी रानी के जलाने का समय जब पास आ गया तो राजकुमार महल के किसी दूसरे हिस्से में चला गया क्योंकि इस सबसे वह बहुत ही दुखी था और अपनी प्रिय रानी को इस तरह मरते नहीं देख सकता था। पर वह कुछ कर भी नहीं सकता था।

कुछ ही देर में छोटी रानी को जलाने वाले आ पहुॅचे। वे उसको उस जगह पर ले गये जहॉ उसको जलाया जाना था। छोटी रानी ने

सारी कमीजें अपने साथ ले लीं। जाते समय भी वह आखिरी कमीज में कुछ काम करती जा रही थी।

जब वे लोग उसको खम्भे से बाँध रहे थे तभी उसने आखिरी कमीज में आखिरी टाँका लगाया और एक आँसू उसकी आँख से कमीज पर गिर गया।

वह चिल्ला पड़ी — "मैं बेकुसूर हूँ। मेरे पति को बुलाओ।"

केवल एक आदमी को छोड़ कर सभी ने अपने हाथ रोक लिये पर उस एक आदमी ने उन लकड़ियों के ढेर में आग लगा दी।

सभी आश्चर्यचकित रह गये जब सबने देखा कि कहीं से बारह हंस उड़ते हुए आये और उन्होंने अपने पंखों की फड़फड़ाहट से आग बुझा दी और छोटी रानी के चारों तरफ खड़े हो गये।

तुरन्त ही छोटी रानी ने सबके ऊपर एक एक कमीज डाल दी और पलक झपकते ही वे बारहों हंस सुन्दर राजकुमार बन गये। उन्होंने तुरन्त ही अपनी बहिन को खोल दिया। सबसे बड़े भाई ने आग लगाने वाले को एक झटके में ही मार दिया।

इतने में छोटी रानी का पति राजकुमार भी आ गया। उन सबके बीच एक बहुत ही सुन्दर स्त्री प्रगट हुई। उसकी गोद में एक चाँद सी बेटी थी और उसकी एक हाथ की उँगली पकड़े एक छोटा सा सुन्दर राजकुमार खड़ा था।

उसने उन सबको पूरी कहानी सुनायी और बताया कि भेड़िये के रूप में वही उन दोनों बच्चों को ले गयी थी। उसने बच्चों को उनके माता पिता को सौंप दिया और गायब हो गयी।

राजकुमार अपनी छोटी रानी और अपने बच्चों के साथ खुशी खुशी रहने लगा और वे बारह राजकुमार भी अपने माता पिता के पास वापस चले गये।

इस तरह वह छोटी बहिन जिसकी वजह से उसके भाई हंस बन कर घर छोड़ कर गये थे उनको फिर से राजकुमार के रूप में वापस ले आयी।

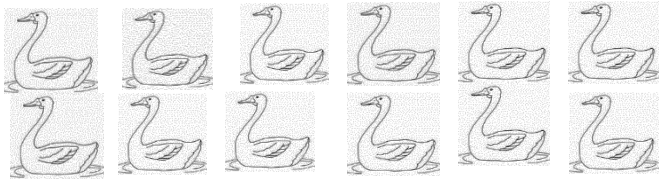

8 बारह जंगली बतखें[41]

छह हंस जैसी कहानियों के इस संग्रह की यह कहानी यूरोप के सुदूर उत्तर में स्थित नौर्वे देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि नौर्वे देश की एक रानी बाहर घूम रही थी। उस दिन मौसम की पहली पहली बरफ पड़ी थी। वह बरफ उसको बहुत अच्छी लगी तो वह कुछ और आगे चली गयी।

आगे जा कर उसकी नाक से खून निकलने लगा सो उसको अपनी स्ले[42] से बाहर निकलना पड़ा। जैसे ही वह बाहर निकली और अपनी स्ले के सहारे खड़ी हुई तो उसकी नाक से निकले खून की कुछ बूँदें बरफ पर गिर पड़ीं।

उसको देखते ही रानी के मन में एक ख्याल आया कि काश मेरे इन बारह बेटों के साथ साथ एक बेटी भी होती जो बरफ जैसी सफेद और खून जैसी लाल होती तो मैं अपने बेटों की भी चिन्ता नहीं करती।

---

[41] 12 Wild Ducks – a fairytale from Norway, Europe. Taken from the Web Site : https://www.surlalunefairytales.com/book.php?id=31&tale=977
Collected by Christen Asbornson and Jorgen Moe in their "Norske Folkeeventyr" (Popular Tales from the Norse).
Translated by George Webbe Dasent. East o' the Sun and the West o' the Moon. NY, Dover, 1970.

[42] Sleigh – a kind of light vehicle on runners, usually open and generally horse-drawn or very big dogs-drawn used especially for transporting persons over snow or ice. See the picture above

इत्तफाक की बात कि ये शब्द उसके मुँह से निकले भी नहीं थे कि एक बूढ़ी जादूगरनी उसके सामने आ कर खड़ी हो गयी और बोली — "बेटी, तुम्हारे ऐसी एक बेटी जरूर होगी जैसी तुम चाह रही हो। वह बरफ जैसी सफेद और खून जैसी लाल होगी।

लेकिन उसको बैप्टाइज़[43] करने के बाद तुम्हारे वे बेटे मेरे हो जायेंगे जो अभी तुम्हारे हैं। सो तुम्हारे बेटे केवल तब तक ही तुम्हारे पास रहेंगे जब तक तुम अपनी बेटी को बैप्टाइज़ नहीं करतीं।"

कुछ समय बाद ही रानी के एक बेटी हुई। अब जैसा कि उस जादूगरनी ने कहा था वह बरफ जैसी सफेद थी और खून जैसी लाल थी तो उसने उसका नाम "बरफ जैसी सफेद और गुलाब जैसी लाल"[44] रख दिया।

बेटी के जन्म पर राजा के घर में बहुत खुशियॉ मनायीं गयीं और रानी तो उसको देख कर बहुत ही खुश थी। पर जब उसको जादूगरनी की बात याद आयी कि "उसको बैप्टाइज़ कराने के बाद तुम्हारे वे बेटे मेरे हो जायेंगे।" तो उसने एक चॉदी का सामान बनाने वाले[45] को बुला भेजा।

रानी ने उस चॉदी का सामान बनाने वाले से कहा कि वह उसके बारह बेटों के लिये चॉदी की एक सी बारह चम्मच बना दे। फिर

[43] Baptization is a religious ceremony for Christians by which they make their children Christian.
[44] Snow-white and Rosy-red
[45] Translated for the word "Silversmith"

उसने वैसी ही एक और चम्मच भी बनवायी जो उसने अपनी बरफ जैसी सफेद और गुलाब जैसी लाल राजकुमारी को दे दी।

पर फिर हुआ वैसा ही जैसा कि जादूगरनी ने कहा था। जैसे ही राजकुमारी का बैप्टाइज़ेशन हुआ रानी के बारह बेटे जंगली बतख बन कर उड़ गये। फिर राजा और रानी ने उनको कभी नहीं देखा। वे दूर चले गये और दूर ही रहे।

राजकुमारी धीरे धीरे बड़ी होने लगी। जब वह कुछ बड़ी हुई तो वह अक्सर उदास रहने लगी। किसी को यह पता नहीं चल सका कि वह उदास क्यों रहती है।

एक दिन रानी भी बहुत उदास हो गयी। जब भी वह अपने बेटों के बारे में सोचती तो अक्सर उदास हो जाती।

एक दिन रानी ने अपनी बेटी से पूछा — "बेटी, तुम अक्सर उदास क्यों रहती हो? अगर तुम्हें कुछ चाहिये तो बताओ हम तुमको अभी ला देते हैं।"

बेटी बोली — "मॉ, यहॉ मुझे बहुत अकेला लगता है। सबके भाई बहिन हैं पर मेरे नहीं हैं। मैं बिल्कुल अकेली हूॅ इसी लिये मैं उदास रहती हूॅ।"

तब उसकी मॉ ने उसको उसके भाइयों के बारे में बताया — "बेटी, तुम्हारे भाई थे और एक नहीं बारह बारह भाई थे। मेरे बारह बेटे थे पर तुमको पाने के लिये मैंने उन सबको दे दिया।" और फिर उसने उसको सारी कहानी सुना दी।

कहानी सुनने के बाद तो राजकुमारी को बिल्कुल ही चैन नहीं था। रानी ने उसको तसल्ली देने के लिये बहुत कुछ समझाया पर वह तो रोती रही और भगवान से प्रार्थना करती रही।

कुछ देर बाद उसने मॉ से कहा कि वह अपने भाइयों को जरूर ढूँढेगी क्योंकि उसको लग रहा था कि उसी की वजह से उसके भाई घर से गये थे। और यह कह कर वह महल से निकल गयी।

वह चलती रही, चलती रही और इतना चली कि तुम लोग सोच भी नहीं सकते कि इतनी छोटी लड़की इतनी दूर चल सकती है।

एक बार वह एक बड़े से जंगल से गुजर रही थी कि उसको बहुत थकान लगी। वह वहीं घास पर बैठ गयी और सो गयी। उसने सपने में देखा कि वह जंगल में बहुत दूर तक चली गयी है। वहॉ उसने लकड़ी का एक मकान देखा और उसमें देखे अपने भाई। बस तभी उसकी ऑख खुल गयी।

ऑख खुलने पर उसने देखा कि घास में से हो कर एक बहुत ही कटा फटा रास्ता जंगल की तरफ चला जा रहा है। सपने को याद कर के वह उसी रास्ते पर चल दी। काफी दूर चलने पर वह वैसे ही लकड़ी के मकान तक आ पहुँची जैसा उसने सपने में देखा था।

वह उस घर के अन्दर घुस गयी पर वहॉ तो कोई था नहीं। हॉ वहॉ बारह पलंग बिछे थे, बारह कुरसियॉ थीं, बारह चम्मचें थीं। यानी हर चीज़ दर्जन में थी।

यह देख कर वह बहुत खुश हुई। इतनी खुश तो वह पहले कभी नहीं हुई थी। उसको यकीन हो गया कि यही वह जगह थी जहॉ उसके भाई थे। वे पलंग, कुरसियॉ और चम्मच उन्हीं के थे।

वहॉ पहुँच कर उसने आग जलायी, सब बिस्तर ठीक किये, शाम का खाना तैयार किया और जितना साफ वह कर सकती थी उतना उस घर को साफ किया।

खाना बनाने के बाद उसने अपना खाना खाया और अपने सब से छोटे भाई के पलंग के नीचे सो गयी। पर खाना खाते समय वह अपनी चम्मच वहीं मेज पर भूल गयी।

वह अभी लेटी ही थी कि उसने हवा में पंख फड़फड़ाने की आवाज सुनी। उसने देखा कि बारह बतख उसी घर की तरफ उड़े चले आ रहे हैं। जैसे ही वे अन्दर घुसे वे राजकुमार बन गये।

घुसते ही उनके मुँह से निकला — "अरे यहॉ तो बड़ा गरम हो रहा है। भगवान उसका भला करे जिसने हमारे लिये यह घर गरम कर के रखा है। और जिसने हमारे लिये यह खाना बनाया है।"

कह कर वे अपनी अपनी चॉदी की चम्मच से खाना खाने के लिये मेज पर बैठे। सबने अपनी अपनी चम्मच उठा ली पर फिर भी वहॉ एक चम्मच रखी रह गयी।

पर वह चम्मच उनकी चम्मच से इतनी मिलती थी कि उनमें से यह कोई नहीं बता सका कि वह चम्मच वहॉ किसकी रह गयी थी।

फिर वे बोले — "अरे यह तो हमारी बहिन की चम्मच है। पर अगर यह उसकी चम्मच है तो वह भी बहुत दूर नहीं होगी।"

सबसे बड़ा भाई बोला — "अगर यह उसकी चम्मच है तो वह यहीं है। उसको तो हमें मार देना चाहिये। क्योंकि वही तो हमारी सब मुसीबतों की जड़ है।"

यह सब उस लड़की ने पलंग के नीचे लेटे लेटे सुना।

पर सबसे छोटा भाई बोला — "यह तो हमारे लिये बड़े शरम की बात होगी अगर हम उसको इस छोटी सी बात पर मार देंगे। क्योंकि इसमें उसकी कोई गलती नहीं है। अगर किसी की गलती है तो वह हमारी अपनी मॉ की गलती है।"

फिर उन्होंने उसको ढूँढना शुरू किया। उन्होंने इधर देखा उधर देखा। फिर उन्होंने उसको पलंगों के नीचे देखना शुरू किया तो वह उनको सबसे छोटे भाई के पलंग के नीचे लेटी मिली।

उन्होंने उसको वहॉ से खींच लिया। उसका सबसे बड़ा भाई अभी भी उसको मारना चाहता था पर राजकुमारी ने उससे अपनी ज़िन्दगी की भीख मॉगी और प्रार्थना की कि वह उसको छोड़ दे।

वह बोली — "ओ मेरे अच्छे भाइयो, मेहरबानी कर के मुझे मत मारो। मैं तो तुम लोगों को तीन साल से ढूँढ रही हूँ और अगर मैं तुम लोगों को इस ज़िन्दगी से अपनी जान दे कर भी आजाद कर पाऊँ तो मैं अपनी जान भी देने को तैयार हूँ।"

यह सुन कर उसके भाई बोले — "ठीक है। अगर तुम हमको इस ज़िन्दगी से छुटकारा दिला पाओ तो हम तुम्हारी ज़िन्दगी बख्शते हैं। क्योंकि अगर तुम चाहो तो तुम हमको इस ज़िन्दगी से छुटकारा दिला सकती हो।"

राजकुमारी बोली — "बस तुम मुझे बता दो कि यह सब कैसे होगा। मैं उसे कर दूँगी वह काम चाहे कुछ भी हो।"

फिर उसके भाइयों ने उसको बताया — "हम अपनी इस ज़िन्दगी से तभी आजाद हो सकते हैं जब तुम थिसिल[46] के फूलों के बालों को चुनो, उन्हें कातो और उसका धागा बनाओ।

फिर उस धागे से कपड़ा बुन कर हमारे लिये बारह कोट, बारह कमीज और बारह मफलर बनाओ।

और जब तुम यह कर रही हो तो न बात करो, ना रोओ और ना हॅसो। अगर तुम ऐसा कर सकती हो तभी हम अपनी इस ज़िन्दगी से आजाद हो सकते हैं।"

राजकुमारी बोली — "पर इतने सारे थिसिल के फूल मैं लाऊँगी कहॉ से जिनसे मैं इतने सारे कोट, कमीज और मफलर बना सकूँ।"

राजकुमार बोले — "वह हम तुमको बताते हैं।" कह कर वे उसको एक बहुत बड़े मैदान में ले गये जहॉ थिसिल की खेती हो रही थी और वहॉ लाखों की तादाद में थिसिल के फूल हवा में ऊपर नीचे

[46] Thistle is a flowering plant whose flower has lots of hair. See the picture above

हिल रहे थे। उनके बाल धूप में चमकते हुए हवा में इधर उधर उड़ रहे थे।

राजकुमारी ने इतने सारे थिसिल के फूलों के बाल अपनी ज़िन्दगी में पहले कभी नहीं देखे थे। वह तुरन्त ही उनको जितनी जल्दी हो सकता था समेटने में लग गयी। जब वह रात को घर लौटी तो उन फूलों के बालों को साफ करने और कातने के लिये बैठ गयी।

वह ऐसा बहुत दिनों तक करती रही और साथ में राजकुमारों के घर की देखभाल, जैसे उनका खाना बनाना, बिस्तर ठीक करना, घर साफ करना आदि भी करती रही।

उसके भाई दिन में बतख बन कर उड़ जाते पर हर रात को आदमी बन कर घर लौट आते। अगले दिन फिर वे बतख बन कर उड़ जाते और फिर सारा दिन बतख ही बने रहते।

फिर एक दिन ऐसा हुआ कि जब वह उस खेत पर से आखिरी बार थिसिल के फूलों के बाल इकट्ठा कर रही थी तो उस देश का नौजवान राजा शिकार के लिये निकला हुआ था।

शिकार खेलते खेलते वह भी उसी खेत की तरफ आ निकला। उसने राजकुमारी को देखा तो उसको वहॉ देख कर वह रुक गया और सोचने लगा कि यह इतनी सुन्दर लड़की इस खेत पर थिसिल के फूलों के बाल इकट्ठा कर के क्या कर रही है।

उसने लड़की से उसका नाम पूछा पर उसको तो बोलना नहीं था सो उसने कोई जवाब नहीं दिया। यह देख कर उसको और भी ज़्यादा आश्चर्य हुआ।

अब वह उसको इतनी अच्छी लगने लगी थी कि उसके पास उसको घर ले जाने और उससे शादी करने के अलावा और कोई चारा नहीं रह गया था।

बस उसने अपने नौकरों को हुक्म दिया कि वे उसको उठा कर उसके घोड़े पर बिठा दें।

राजकुमारी ने अपने हाथों से उसको इशारा किया और उसको अपना थैला दिखाया जिसमें उसका काम रखा था तो राजा को लगा कि वह अपना थैला अपने साथ ले जाना चाहती थी तो उसने अपने नौकरों को उसका थैला भी साथ ले चलने के लिये कहा।

जब उन्होंने यह सब कर लिया तब राजकुमारी को धीरे धीरे होश आया क्योंकि राजा एक अक्लमन्द आदमी भी था और सुन्दर भी। इसके अलावा वह उसके साथ एक डाक्टर की तरह से बड़ी नरमी और दया का बरताव कर रहा था।

राजा उसको ले कर अपने महल में पहुॅचा। घर में राजा की सौतेली मॉ थी। उसने उस लड़की को देखा तो वह तो उसको देख कर बहुत जलने लगी क्योंकि राजकुमारी बहुत सुन्दर थी।

उसने राजा से कहा — "क्या तुमको दिखायी नहीं देता कि जिस लड़की को तुम घर ले कर आये हो और जिससे तुम शादी

करना चाहते हो वह न बोल सकती है, न हॅस सकती है और न ही रो सकती है।"

पर राजा ने अपनी मॉ की एक न सुनी और उससे शादी कर ली। वे खुशी खुशी रहने लगे। पर वह लड़की अपने भाइयों के लिये कमीज, कोट और मफलर बनाना नहीं भूली।

एक साल बाद राजकुमारी ने एक बेटे को जन्म दिया। तब राजा की सौतेली मॉ को और ज़्यादा गुस्सा आया और वह उससे और भी ज्यादा जलने लगी।

एक रात जब राजकुमारी सो रही थी तो राजा की मॉ उसके कमरे में घुसी और उसके बेटे को चुरा लिया और सॉपों से भरे एक गड्ढे में डाल दिया।

फिर उसने उस लड़की की छोटी उॅगली काटी और उसका खून उसी के मुॅह पर लगा दिया। फिर उसने अपने बेटे को बुला कर उसको यह दिखा कर उससे कहा — "देखो तुम कैसी लड़की ले कर आये हो जो अपने बच्चे को खुद ही मार कर खुद ही खा गयी है।"

राजा को यह देख कर बहुत बुरा लगा और वह यह सब देख कर बहुत ही आश्चर्य में पड़ गया। पर राजा ने सोचा — "यह सब सच हो सकता है क्योंकि यह तो मैं अपनी ऑखों से ही देख रहा हूॅ। पर वह अगली बार ऐसा नहीं करेगी सो अबकी बार मैं उसको छोड़ देता हूॅ।"

राजकुमारी अपने बचाव में न तो कुछ बोल ही सकी और न अपने बच्चे की मौत पर रो ही सकी।

एक साल बाद राजकुमारी ने एक और बेटे को जन्म दिया। राजा की सौतेली मॉ राजकुमारी से और ज्यादा गुस्सा हो गयी और और भी ज़्यादा जलने लगी। उसने उस बच्चे के साथ भी ऐसा ही किया जैसा उसने उसके पहले बच्चे के साथ किया था।

एक रात जब राजकुमारी सो रही थी तो राजा की मॉ उसके कमरे में घुसी और उसके बेटे को चुरा लिया और सॉपों से भरे एक गड्ढे में डाल दिया।

उसने फिर उस लड़की की छोटी उॅगली काटी और उसका खून उसी के मुॅह पर लगा दिया। फिर अपने बेटे को बुला कर उसको वह दिखा कर उससे कहा — "देखो तुम कैसी लड़की ले कर आये हो कि वह अपने बच्चे को खुद ही मार कर खुद ही खा गयी है।"

राजा को यह देख कर फिर बहुत बुरा लगा और वह यह सब देख कर फिर से बहुत ही आश्चर्य में पड़ गया।

पर राजा ने फिर सोचा — "यह सब सच हो सकता है क्योंकि यह तो मैं अपनी ऑखों से ही देख रहा हूॅ। पर मुझे यकीन है कि वह अगली बार ऐसा नहीं करेगी सो अब की बार मैं उसे फिर से छोड़ देता हूॅ।"

इस बार भी राजकुमारी अपने बचाव में न तो कुछ बोल ही सकी और न अपने बच्चे की मौत पर रो ही सकी।

अगले साल राजकुमारी ने एक बेटी को जन्म दिया। रानी ने उसको भी सॉपों से भरे गड्ढे में फिंकवा दिया और राजकुमारी के मुॅह पर खून लगा कर राजा को यह दिखा दिया कि उसने अपना बच्चा खुद ही मार कर खुद ही खा लिया है।

वह फिर राजा से बोली — "अब तुमने देखा कि मैं ठीक कह रही थी कि वह जादूगरनी है। उसने अपना तीसरा बच्चा भी खा लिया है।"

अबकी बार राजा बहुत दुखी हुआ और इतना दुखी हुआ कि इस बार वह उसको माफ नहीं कर सका और उसने उसको लकड़ी के ढेर पर जलाने का हुक्म दे दिया।

पर जैसे ही वे लकड़ियॉ तेज़ी से जलने लगीं और राजा के नौकर उसको उस आग के ऊपर रखने लगे तो उसने इशारों से उनसे कहा कि वे बारह तख्ते आग के चारों तरफ लगा दें।

उन तख्तों पर उसने अपने भाइयों के लिये बनाये हुए वे थिसिल के फूलों के बालों के बारह कोट, बारह कमीजें और बारह मफलर फैला दिये।

उसके सबसे छोटे भाई की कमीज में बॉयी बॉह तब तक नहीं लग पायी थी क्योंकि उसको लगाने का उसके पास समय ही नहीं था।

जैसे ही नौकरों ने वे कपड़े उन तख्तों पर फैलाये तो उसने हवा में पंखों के फड़फड़ाने की आवाज सुनी और बारह बतख नीचे

उतरते देखे। उन्होंने अपनी चोंच में अपने अपने कपड़े उठाये और फिर आसमान में उड़ गये।

रानी फिर बोली — "अब देखा न तुमने? क्या मैं सच नहीं कह रही थी कि यह एक जादूगरनी है? जल्दी करो। इससे पहले कि आग ठंडी पड़ जाये इसको आग में फेंक दो।"

राजा बोला — "तुम चिन्ता न करो मॉ, हमारे पास बहुत सारी लकड़ी है। मैं अभी थोड़ा सा इन्तजार और करता हूॅ क्योंकि मैं यह जानना चाहता हूॅ कि इसका अन्त क्या होगा।"

जैसे ही उसने यह कहा तो उसने देखा कि बारह सुन्दर राजकुमार घोड़ों पर सवार उन्हीं लोगों की तरफ चले आ रहे हैं। पर उनमें से एक राजकुमार की बॉयी बॉह की तरफ बजाय उसकी बॉह के बतख का एक पंख लगा हुआ है।

राजकुमारों ने आते ही पूछा — "यह सब यहॉ क्या हो रहा है?"

राजा बोला — "मेरी रानी को जलाया जा रहा है क्योंकि यह एक जादूगरनी है। क्योंकि इसने अपने ही बच्चे खा लिये हैं।"

राजकुमार बोले — "इसने उनको बिल्कुल नहीं खाया है।"

फिर उन्होंने अपनी बहिन से कहा — "बहिन बोलो। अब तुम बोल सकती हो। तुमने हमें उस ज़िन्दगी से आजाद कर दिया है और हमें बचा लिया है। अब तुम अपने आपको बचाओ।"

तब उसने अपने पति को शुरू से ले कर आखीर तक सारी कहानी बतायी कि किस तरह से जब भी उसने किसी बच्चे को जन्म दिया तो रानी उसके कमरे में रात को चुपके से घुस आयी और उसका बच्चा चुरा कर ले गयी।

फिर किस तरह उसने उसकी छोटी उॅगली काटी और उसका खून उसके मुॅह पर लगा गयी।

इसके बाद राजकुमार राजा को उस सॉपों भरे गड्ढे के पास ले गये जहॉ राजा की सौतेली मॉ ने उनकी बहिन के बच्चों को फेंका था। वहॉ जा कर राजा ने देखा कि उसके तीनों बच्चे वहॉ सॉपों और मेंढकों से खेल रहे थे।

उसकी कहानी सुन कर राजा को अपनी मॉ पर बहुत गुस्सा आया। उसने अपने तीनों बच्चों को तुरन्त ही वहॉ से उठाया और उनको अपनी सौतेली मॉ के पास ले कर गया

वहॉ जा कर उसने अपनी मॉ से पूछा — "मॉ, आप उस औरत को क्या सजा देंगी जिसके पास एक बेगुनाह रानी को इस तरह धोखा देने वाला दिल हो जिसके इतने प्यारे भोले से तीन बच्चे हों?"

रानी बोली — "उसको तो बारह खुले घोड़ों के सामने खम्भे से बॉध देना चाहिये ताकि वे सब उसको खा जायें।"

राजा बोला — "अफसोस आपने तो अपनी सजा अपने आप ही सुना दी है और आपको यह सजा अब तुरन्त ही मिलेगी।"

रानी को बारह घोड़ों के बीच एक खम्भे से कस कर बॉध दिया गया और वे घोड़े उसको खा गये। उधर राजा अपनी पत्नी और बच्चों को अपने घर ले गया।

बारहों राजकुमार अपने माता पिता के पास चले गये वहॉ जा कर उन्होंने अपनी कहानी उनको सुनायी तो उनके माता पिता बहुत खुश हुए।

सारे राज्य में बहुत खुशियॉ मनायीं गयीं क्योंकि राजकुमारी ने अपने भाइयों को बचा लिया था और राजकुमारों ने अपनी बहिन को बचा लिया था।

9 सात बच्चों का शाप[47]

छह हंस जैसी यह कहानी भी इटली देश की ही है।

एक बार की बात है कि एक राजा और रानी थे जिनके छह बेटे थे। रानी के एक और बच्चा होने वाला था। राजा ने कहा कि अगर यह बच्चा लड़की नहीं हुई तो वह सातों बच्चों को शाप दे देगा।

इत्तफाक की बात कि उसी समय लड़ाई छिड़ गयी और राजा को लड़ाई के लिये जाना पड़ गया।

लड़ाई पर जाने से पहले राजा ने रानी से कहा — "देखो अगर तुम्हारे बेटा हो तो तुम खिड़की के ऊपर एक भाला लटका देना और अगर बेटी हो तो एक अटेरन[48] लटका देना।

इससे जैसे ही मैं लड़ाई से लौट कर आऊँगा तो मुझे पता चल जायेगा कि हमारे बेटा पैदा हुआ है या बेटी।"

यह कह कर राजा लड़ाई पर चला गया। राजा के जाने के एक महीने बाद रानी ने एक बहुत ही सुन्दर बेटी को जन्म दिया।

[47] The Curse of the Seven Children. Taken from the Book "Italian Popular Tales" by Thomas Crane. 1980.

[48] Translated for the word "Distaff". See its picture above.

तुम सब सोच सकते हो कि उस बेटी को देख कर रानी कितनी खुश हुई होगी। वह अपनी खुशी छिपा नहीं सकी और उसने तुरन्त ही बाहर खिड़की पर एक अटेरन लटकाने का हुक्म दे दिया।

पर इस खुशी में कहीं एक गलती हो गयी कि उसके नौकरों ने बाहर अटेरन की जगह भाला लटका दिया।

कुछ समय बाद जब राजा घर लौटा तो उसने देखा कि खिड़की पर तो भाला लटका हुआ है तो उसने अपने सातों बेटों को वहीं शाप दे दिया।

पर जब वह महल के अन्दर घुसा तो उसके सारे नौकर उसको बधाई देने के लिये आये और उसको उसकी सुन्दर सी बेटी के जन्म के बारे में बताया। यह सुन कर तो राजा बहुत आश्चर्यचकित हुआ और बहुत दुखी हुआ कि यह उसने क्या कर दिया। पर अब वह क्या कर सकता था। जो होना था वह तो हो गया।

वह रानी के कमरे में गया और बच्ची को देखा तो वह तो उसको वैसी ही एक मोम की गुड़िया लगी जैसी डिब्बों में रखी रहती हैं। और उसके छहों बेटों का तो कहीं कुछ पता ही नहीं था।

यह सब देख कर वह तो रो पड़ा क्योंकि उसके वे बेटे तो अब दुनियॉ में इधर उधर घूम रहे थे।

इस बीच उसकी बेटी बड़ी होती गयी। उसने देखा कि उसके माता पिता उसको प्यार से उसके ऊपर हाथ तो फेरते थे पर उनकी ऑखों में हमेशा ऑसू भरे रहते थे।

एक दिन उसने अपनी माँ से पूछा — "माँ क्या बात है कि मैं आपको हर समय रोता हुआ ही देखती हूँ।"

तब रानी ने उसको सारी कहानी बतायी और बोली कि उसको डर है कि एक दिन वह भी उसकी आँखों के सामने से गायब हो जायेगी।

जब लड़की यह सुना तो उसने क्या किया? एक रात वह चुपचाप उठी और अपने भाइयों को ढूँढने के लिये महल छोड़ कर चली गयी।

वह चलती गयी चलती गयी। चलते चलते उसे रास्ते में एक बूढ़ा मिला। उसने उस बच्ची से पूछा — "बेटी तुम ऐसी रात में कहाँ जा रही हो?"

वह बोली — "मैं अपने भाइयों को ढूँढने जा रही हूँ।"

वह बूढ़ा बोला — "बेटी उनको ढूँढना बहुत मुश्किल काम है क्योंकि उसके लिये तुमको सात साल सात महीने सात दिन सात घंटे और सात मिनट तक चुप रहना पड़ेगा।"

लड़की बोली "फिर भी मैं कोशिश करूँगी।"

उसने वहीं जमीन पर पड़ा हुआ एक कागज का टुकड़ा उठाया और कोयले के एक टुकड़े से उसके ऊपर उस समय का साल महीना दिन घंटा और मिनट लिखे और उस बूढ़े को वहीं छोड़ कर आगे अपने रास्ते पर चल दी।

बहुत देर तक चलने के बाद उसको एक रोशनी दिखायी दी। वह वहॉ पहुँची तो उसने देखा कि वहॉ तो एक महल खड़ा था जिसमें एक राजा रहता था।

वह उस महल के अन्दर चली गयी और थके होने की वजह से वहीं उसकी सीढ़ियों पर बैठ गयी और सो गयी। बाद में जब नौकर रोशनी बुझाने आये तो उन्होंने एक बहुत सुन्दर सी लड़की को पत्थरों की सीढ़ियों पर सोते पाया।

उन्होंने उसको जगाया और उससे पूछा कि वह वहॉ क्या कर रही थी। उसने उनसे इशारों से बात की और उसको वहॉ ठहरने की जगह देने की प्रार्थना की। उन्होंने उसकी इशारों की भाषा समझ ली और कहा कि वे राजा से उस बारे में बात करेंगे।

वे तुरन्त ही राजा से यह सब कहने गये और तुरन्त ही लौट भी आये। उन्होंने कहा कि राजा उसको उसके कमरे तक ले जाने से पहले उससे मिलना चाहता है।

जब राजा ने उस सुन्दर सुनहरे बालों वाली लड़की को देखा जिसका रंग दूध और शराब जैसा था दॉत मोती जैसे थे और उसके छोटे छोटे हाथ इतने कोमल थे कि कोई चित्रकार भी उतने सुन्दर हाथ नहीं बना सकता था तो उसको लगा कि वह तो किसी लौर्ड[49] की बेटी होनी चाहिये।

[49] Lord is a rank given to noble people in European countries.

सो उसने उसको बहुत अच्छे से रखने का और उसकी हर तरह से अच्छी देखभाल करने का हुक्म दे दिया।

उसके बाद वे उसको एक बहुत ही सुन्दर और आरामदेह कमरे में ले गये। वहॉ एक दासी आयी और उसके कपड़े उतार कर उसको सोने के लिये लिटा गयी।

अगले दिन जब वह उठी तो उसने अपने पास एक फ्रेम देखा जिसमें कढ़ाई के लिये कपड़ा लगा हुआ था तो उसने उस कपड़े पर कढ़ाई करनी शुरू कर दी।

राजा उसको देखने के लिये आया और उससे पूछा कि क्या उसको कुछ और चाहिये तो उसने उसको इशारों से बताया कि उसको और कुछ नहीं चाहिये।

राजा को वह लड़की इतनी ज़्यादा पसन्द आयी कि वह उससे प्यार करने लगा। और एक साल बाद तो वह उससे शादी करने की भी सोचने लगा।

पर रानी मॉ एक बहुत ही ईर्ष्यालु स्त्री थी। वह इस रिश्ते से खुश नहीं थी। उसका कहना था कि उस लड़की का तो यही पता नहीं था कि वह आयी कहॉ से है। इसके अलावा वह तो गूँगी भी है। इससे लोग सोचेंगे कि एक राजा ने ऐसी लड़की से शादी ही क्यों की।

पर राजा तो जिद्दी था सो उसने उससे शादी कर ली। जब रानी मॉ ने देखा कि अब उसका कुछ बस नहीं चल रहा तो वह चुप हो कर बैठ गयी।

कुछ समय बाद ही रानी मॉ को पता चला कि लड़ाई छिड़ने वाली है। तो उसने राजा को इस लड़ाई के बारे में बताते हुए कहा कि अगर वह लड़ाई पर नहीं गया तो उसके हाथ से उसका राज्य जा सकता था।

सो राजा को लड़ाई पर जाना ही पड़ा पर वह अपनी पत्नी को अकेला छोड़ कर जाते हुए बहुत दुखी था। इसलिये उसने रानी मॉ से प्रार्थना की कि उसके पीछे वह उसकी पत्नी का खास ख्याल रखें।

रानी मॉ ने कहा — "तू चिन्ता मत कर बेटे। मैं उसको खुश रखने के लिये उसका पूरा पूरा ध्यान रखूँगी।" राजा ने अपनी मॉ और पत्नी को गले लगाया और लड़ाई के लिये चला गया।

राजा लड़ाई पर गया ही था कि रानी मॉ ने एक राज[50] को बुलवाया और उससे रसोईघर के सिंक के पास एक दीवार बनाने के लिये कहा जिससे वह एक बक्सा जैसा बन गया।

[50] Translated for the word "Mason". He builds the buildings.

डायना[51] को बच्चे की आशा थी सो रानी मॉ को यह बहाना मिल गया कि वह राजा को यह लिख दे कि उसकी पत्नी बच्चे को जन्म देते समय मर गयी।

उसने राजकुमारी को उस दीवार में रख दिया जो उसने रसोईघर के सिंक के चारों तरफ बनवायी थी। उसमें न तो रोशनी थी और न हवा थी तो उस नीच स्त्री ने सोचा कि वह वहॉ मर जायेगी। पर ऐसा नहीं हुआ।

बर्तन धोने वाला उसी सिंक में रोज बर्तन धोने आता था जहॉ डायना को दफ़नाया गया था। जब वह अपना काम कर रहा था तो उसने वहॉ कुछ कराहने की आवाज सुनी। उसने उसे ध्यान से सुनने की कोशिश की वह आवाज कहॉ से आ रही थी।

पहले तो उसको समझ में ही नहीं आया कि वह आवाज कहॉ से आ रही थी। फिर ध्यान से सुनने पर पता चला कि वह आवाज तो उस दीवार से आ रही थी जो अभी अभी नयी बनवायी गयी थी।

फिर उसने क्या किया? उसने दीवार में एक छेद किया तो देखा कि वहॉ तो राजकुमारी बन्द थी। उसने राजकुमारी से पूछा कि वह वहॉ कैसे आयी पर उसने केवल इशारों से उसे यह बताया कि वह एक बच्चे को जन्म देने वाली है।

[51] Diana was the name of the Princess.

उस गरीब काम करने वाले ने अपनी पत्नी से राजकुमारी के लिये एक सबसे ज़्यादा आरामदेह गद्दा बिछाने के लिये कहा और उसको उस पर लिटा दिया। वहॉ उसने एक बहुत ही सुन्दर लड़के को जन्म दिया।

इस बीच उस काम करने वाले की पत्नी उसको बार बार देखने के लिये आती रही। वह उसके लिये मॉस का सूप[52] भी बना कर लाती रही और उसके बच्चे की भी देखभाल करती रही।

थोड़े में कहो तो वह काम करने वाला और उसकी पत्नी दोनों राजकुमारी को आराम देने के लिये जो कुछ भी कर सकते थे करते रहे। वह भी उनको इशारों से समझाती रही कि उसको क्या चाहिये।

एक दिन डायना को याद आया कि वह यह देखे कि अभी उसको कितने दिन और चुप रहना है। उसने अपना वह कागज निकाला और देखा तो बस अब तो उसके चुप रहने के केवल दो मिनट ही रह गये थे।

दो मिनट तो जल्दी ही बीत गये। जैसे ही उसके दो मिनट बीते तो उसने उस काम करने वाले को सब कुछ बता दिया। तभी राजा भी लड़ाई से लौट कर आ गया। काम करने वाले ने भी राजकुमारी

[52] Translated for the word “Broth”. Broth is the soup consisting of meat or vegetable chunks, and often rice.

को उस छेद में से बाहर निकाल लिया और उसे राजा के पास ले गया।

तुम सोच सकते हो कि राजा डायना को फिर से देख कर कितना खुश हुआ होगा जिसको कि वह यह सोच चुका था कि वह मर गयी है। वह तो उन दोनों को देख कर ही पागल सा हो गया था। उसने डायना और अपने बेटे दोनों को गले लगाया।

डायना ने उसको सब बताया कि क्यों तो उसने अपना घर छोड़ा। क्यों वह इतने दिनों तक बोली नहीं। और रानी मॉ ने उसके साथ कैसा बरताव किया।

जब राजा ने यह सब सुना तो वह बोला — "अब तुम सब मेरे ऊपर छोड़ दो। मै देखता हूँ।"

अगले दिन राजा ने अपने राज्य के सारे राजकुमारों और कुलीन लोगों को दावत के लिये बुलवाया।

उस दावत में नौकरों ने दूसरी प्लेटों के अलावा छह प्लेटें और लगायीं। जब सारे मेहमान बैठ गये तो छह सुन्दर नौजवान वहॉ आये और आ कर पूछा कि ऐसी बहिन को क्या दिया जाना चाहिये जिसने अपने भाइयों के लिये इतना सब कुछ किया हो।

यह सुन कर राजा अपनी सीट से उछल पड़ा और बोला — "और ऐसी मॉ के साथ क्या किया जाये जिसने अपने बेटे की पत्नी के साथ ऐसा किया?" और फिर उसने अपनी मॉ की सारी कहानी उनको सुना दी।

एक बोला — "उसको ज़िन्दा जला दो।"

दूसरा बोला — "उसको एक लकड़ी के बक्से में बन्द कर के लोगों से अपमानित होने के लिये चौराहे पर छोड़ दो

तीसरा बोला — "उसको चौराहे पर गरम तेल में डाल कर भून दो।"

यह बात मान ली गयी।

उन छह नौजवानों ने राजा को बताया कि उनको उस बूढ़े ने ही बताया था कि उनकी बहिन कहॉ है और उसने उनके लिये क्या किया था। यह वही बूढ़ा था जो उनकी बहिन को रास्ते में मिला था। असल में वह बूढ़ा एक जादूगर था।

तब उन्होंने अपना परिचय दिया और डायना और अपने राजा बहनोई को गले लगाया। उसके बाद वे सब अपने माता पिता से मिलने गये।

सोचो ज़रा कि अपने उन सातों बच्चों को देख कर उन राजा और रानी को कितनी खुशी हुई होगी।

डायना उसका पति और बेटा वहॉ कुछ दिन रहे फिर वे सब अपने राज्य को चले गये जहॉ उन्होंने खुशी खुशी बहुत दिनों तक राज किया।

10 उडीया और उसके सात भाई[53]

यह लोक कथा अफ्रीका महाद्वीप के लिब्या देश में कही सुनी जाती है।

एक बार लिब्या देश में एक पति पत्नी रहते थे जिनके सात बेटे थे। वे सब खुले मैदान में रहते थे सो वे सब जल्दी ही बड़े और ताकतवर हो गये।

उनमें से छह बड़े भाई हमेशा जंगली जानवरों का शिकार करते रहते थे जबकि सबसे छोटे भाई को शिकार इतना पसन्द नहीं था। वह अक्सर अपनी मॉ के पास ही रहता था।

उनकी मॉ को एक और बच्चा होने वाला था।

एक दिन वे सातों भाई शिकार के लिये बाहर गये तो अपनी चाची से यह कह गये कि अगर उनकी मॉ के बेटी हो तो वह यहॉ से सफेद रूमाल हिला दे तो वे तुरन्त ही वापस आ जायेंगे और अगर बेटा हुआ तो वह हॅसिया[54] हिला देगी और फिर वे वहीं रहेंगे।

[53] Udea and Her Seven Brothers – a folktale from Libya, Africa. Adapted from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/neu/lfb/gy/gyfb17.htm .
Written by Scottish novelist Andrew Lang in his “The Grey Fairy Book”. 1900.

[54] Translated for the word “Sickle”. See the picture above

इतना कह कर वे चले गये। उनके जाने के बाद उनकी मॉ ने एक बेटी को जन्म दिया पर उनकी चाची उन लड़कों से छुटकारा पाना चाहती थी सो उसने हॅसिया हिला दिया।

हॅसिया हिलता देख कर वे वहीं शिकार पर ही रह गये। उन्होंने सोचा कि अब वे घर जा कर क्या करेंगे और वे रेगिस्तान में शिकार के लिये और ज़्यादा दूर चले गये।

उस बच्ची के दोस्त उसको उडीया कह कर पुकारने लगे – उडीया का मतलब होता है जिसने अपने भाइयों को किसी अनजान जगह भेज दिया हो। उडीया धीरे धीरे बड़ी होने लगी। उसको अपने भाइयों के बारे में कुछ पता नहीं था।

एक दिन एक बड़े बच्चे ने उसको ताना मारा कि "उडीया। मुझे तुम्हारे ऊपर बड़ी दया आती है कि जिस दिन से तुम पैदा हुई उसी दिन से तुम्हारे भाइयों को दुनियॉ में हमेशा भटकना पड़ा।"

उडीया ने उससे तो कुछ नहीं कहा पर जब वह घर गयी तो उसने अपनी मॉ से पूछा — "मॉ क्या मेरे भाई भी हैं?"

मॉ बोली — "हॉ बेटी। तेरे सात भाई हैं। वे उसी दिन चले गये थे जिस दिन तू पैदा हुई थी। उस दिन से मैंने फिर कभी उनके बारे में नहीं सुना।"

उडीया बोली — "मॉ। तब मैं जाऊॅगी और अपने भाइयों को ढूॅढ कर लाऊॅगी।"

मॉ बोली — "बेटी। अब तो उनको गये हुए भी पन्द्रह साल हो चुके हैं। किसी भी आदमी ने उनको देखा नहीं है तू उनको कहॉ ढूँढेगी?"

उडीया बोली — "ओह मॉ उसकी तुम चिन्ता न करो। मैं उत्तर जाऊँगी मैं दक्षिण जाऊँगी़ मैं पूरब जाऊँगी मैं पश्चिम जाऊँगी। चाहे मुझे कितनी भी दूर क्यों न जाना पड़े पर एक दिन मैं उनको ढूँढ कर ही लाऊँगी।"

यह सुन कर उसकी मॉ चुप हो गयी। उसकी मॉ ने उसको एक ऊँट, कुछ खाना, ऊँट के गले में बॉध कर एक कौड़ी जो टोटके का काम करती और उसकी देखभाल के लिये एक नीग्रो बरका और उसकी पत्नी दे दी। और उसको विदा किया।

पहले दिन तो सब लोग शान्ति से चले गये पर अगले दिन नीग्रो ने उडीया से ऊँट पर से उतर जाने के लिये कहा ताकि उसकी पत्नी उस ऊँट पर चढ़ कर जा सके।

यह सुन कर उडीया ने अपनी मॉ को पुकारा तो मॉ ने पूछा "क्या बात है?"

उडीया बोली — "मॉ यह बरका मुझे ऊँट से उतरने के लिये कह रहा है।"

उडिया की मॉ ने बरका से कहा कि वह उडीया को कुछ न कहे। उसके बाद बरका की उडीया से कुछ कहने की हिम्मत नहीं पड़ी।

तीसरे दिन बरका ने उडीया से फिर कहा कि वह उतर जाये और अब उसकी बजाय उसकी पत्नी ऊॅट पर बैठेगी।

उस दिन उडीया की मॉ उससे बहुत दूर थी सो न तो वह बरका की बात ही सुन सकी न उसको कुछ कह ही सकी। उडीया ने अपनी मॉ को पुकारा भी पर वह तो वहॉ थी ही नहीं।

बरका ने उडीया को ऊॅट पर से झटके से उतार कर जमीन पर खड़ा कर दिया और अपनी पत्नी को ऊॅट पर बैठा दिया। उडीया पैदल चलने लगी। उसको तो ऊॅट पर बैठ कर जाना था क्योंकि वह नंगे पैर थी। पैदल चलते चलते सड़क के पत्थरों की वजह से उडीया के पैर घायल हो गये और उनमें से खून निकल आया।

पर वह सारा दिन चलती रही। रात को वे लोग एक जगह आराम करने के लिये रुक गये पर अगली सुबह फिर वही हुआ। उडीया बेचारी बहुत थक गयी थी और उसके पैरों से खून भी निकल रहा था। वह रोने लगी।

उसने नीग्रो से बहुत प्रार्थना की कि वह कम से कम उसको थोड़ी दूर तक ऊॅट पर चढ़ कर चलने दे पर उसने कोई बात नहीं सुनी बल्कि उसको और तेज़ चलने को लिये कहा।

एक दिन उनको एक कारवॉ मिला तो वह नीग्रो रुका और उसने उनके सरदार से पूछा कि क्या उन्होंने कहीं सात नौजवानों को देखा है।

सरदार बोला — "यहॉ से सीधे चले जाओ। दोपहर तक तुम उस किले तक पहुँच जाओगे जहॉ वे रहते हैं।"

यह सुन कर बरका ने उडीया के शरीर पर इतना काला गोंद लगा दिया कि वह भी उसी तरह नीग्रो लगने लगी।

फिर उसने अपनी पत्नी को ऊँट पर से उतार लिया और उडीया को बिठा दिया। उडीया ने नीग्रो को इस बात के लिये बहुत धन्यवाद दिया। और इस तरह वे उस किले तक पहुँच गये। वहॉ पहुँच कर बरका ने ऊँट को किले के दरवाजे पर बिठाया ताकि उडीया उस पर से उतर सके और खुद जा कर उसने किले का दरवाजा ज़ोर से खटखटाया।

उडीया के सबसे छोटे भाई ने दरवाजा खोला क्योंकि उसके बाकी सारे भाई शिकार पर गये हुए थे। उसने उडीया को तो नहीं पहचाना पर वह नीग्रो और उसकी पत्नी को जानता था।

उसने उन सबका खुशी से स्वागत किया और पूछा — "यह दूसरी नीग्रो कौन है?"

वे बोले — "यह तुम्हारी बहिन है।"

भाई आश्चर्य से बोला — "मेरी बहिन? और इतनी काली?"

"हो सकता है पर है यह तुम्हारी बहिन ही।"

छोटे भाई ने और कोई सवाल नहीं पूछा और वह उन सबको किले के अन्दर ले गया। वह खुद किले के बाहर ही अपने भाइयों के शिकार से लौटने का इन्तजार करने लगा।

जब वे लोग अकेले रह गये तो नीग्रो ने उडीया से कहा — "अगर तुमने अपने भाइयों से यह कहने की हिम्मत की कि मैंने तुमको पैदल चलाया या मैंने तुमको यह काला गोंद लगाया तो मैं तुम्हें जान से मार दूँगा।

लड़की डर से कॉपती हुई बोली — "नहीं नहीं, मैं किसी से कुछ नहीं कहूँगी।" उसी समय उसको उसके छहों बड़े भाई वहॉ आते नजर आये।

सबसे छोटा भाई उनसे मिलने के लिये दौड़ा और उनसे बोला — "तुम लोगों के लिये एक अच्छी खबर है। हमारी छोटी बहिन यहॉ है।"

वे बोले — "क्या कह रहे हो? हमारी तो कोई छोटी बहिन ही नहीं है। तुमको तो मालूम है जो बच्चा पैदा हुआ था वह लड़का था। अगर हमारे कोई बहिन पैदा हुई होती तो हम घर छोड़ कर भागते ही क्यों।"

छोटे भाई ने धीरे से कहा — "लगता है कि वह सच नहीं था। वह वहॉ है, नीग्रो और उसकी पत्नी के पास। बस वह बहुत काली है।"

पर भाइयों ने उसकी बात नहीं सुनी और वे उसको वहीं छोड़ कर आगे बढ़ गये। उन्होंने बरका से पूछा — "बरका कैसे हो? और ऐसा कैसे हुआ कि हमको यह पता ही नहीं चला कि हमारे एक बहिन भी है?"

फिर उन्होंने उडीया को प्रेम से नमस्ते की। उडीया खुशी से रो पड़ी। अगले दिन उन सब भाइयों ने निश्चय किया कि वे उस दिन शिकार पर नहीं जायेंगे।

सबसे बड़े भाई ने उडीया को अपने घुटनों पर बिठा लिया। उडीया उसके बालों में कंघी करने लगी ओर उसको अपने घर की बातें बताने लगी। बातें करते करते उसकी ऑखों में ऑसू आ गये।

जहॉ जहॉ से उसके ऑसू बहे वहॉ वहॉ एक सफेद धारी सी बन गयी। भाई ने एक कपड़ा लिया और उसका चेहरा पोंछा तो उसने देखा कि वह तो बिल्कुल भी काली नहीं थी।

यह देख कर वह चिल्लाया — "तुमको इस तरीके से किसने रंगा?"

लड़की सुबकती हुई बोली — "मुझे तुम्हें बताते डर लगता है। मुझे नीग्रो जान से मार देगा।"

"अरे तुम अपने सात सात भाइयों के होते हुए डरती हो?"

"ऐसी बात है तो मैं तुमको बताती हूॅ। नीग्रो ने मुझे ऊॅट पर से उतरने के लिये मजबूर किया और मेरी जगह अपनी पत्नी को उस पर बैठा दिया। मैं नंगे पैर पत्थरों वाले रास्ते पर चलती रही। इस से मेरे पैरों से खून भी निकलने लगा। मुझे उन पर पट्टी बॉधनी पड़ी।

इसके बाद जब हमें यह पता चला कि तुम्हारा किला पास आ गया है तो उसने कुछ काला गोंद लिया और मेरे सारे शरीर पर मल दिया।"

यह सुन कर वह भाई वहॉ से अपनी तलवार ले कर दौड़ा दौड़ा बाहर आया और अपनी तलवार से पहले उसने बरका का गला काटा और फिर उसकी पत्नी का।

फिर वह कुछ गरम पानी लाया और अपनी बहिन को साफ किया जब तक कि उसका सारा काला रंग निकल नहीं गया और उसकी खाल चमकने नहीं लगी।

वे सब बोले — "ओह़ अब हमको लग रहा है कि तुम हमारी बहिन हो। अरे़ उस नीग्रो ने क्या हमको इतना बेवकूफ समझा था कि हम एक काली लड़की को अपनी बहिन समझ लेंगे?"

फिर दो दिन वे घर में ही रहे। तीसरी सुबह वे अपनी बहिन से बोले — "तुम इस किले में ही रहना।तुम्हारे साथ यह बिल्ली रहेगी। ध्यान रहे तुम कोई ऐसी चीज़ नहीं खाना जो यह बिल्ली न खाती हो। अपने हर खाने में से उसको एक छोटा सा टुकड़ा जरूर देना। हम लोग अब सात दिन के बाद आयेंगे।"

"ठीक है।" कह कर उसने किले का दरवाजा बन्द कर लिया और वह बिल्ली के साथ ही रहने लगी।

आठवें दिन उसके भाई लौट कर घर आ गये तो उन्होंने उससे पूछा कि वह कैसी थी और उसको ज़्यादा चिन्ता तो नहीं हुई।

उडीया बोली — "नहीं मुझे ज्यादा चिन्ता नहीं हुई क्योंकि किले के दरवाजे का ताला ठीक से बन्द था। इसके अलावा किले में भी सात दरवाजे हैं और सातवॉ दरवाजा तो लोहे का है। फिर मुझे किस बात का डर था।"

"हमें तो कोई भी नुकसान नहीं पहुॅचायेगा क्योंकि सब हमसे डरते हैं। पर हम तुम्हारे लिये चिन्तित हैं तुम बिल्ली से पूछे बिना कोई भी काम नहीं करना। यह बिल्ली यहीं इसी घर में बड़ी हुई है। ध्यान रहे कि उसकी सलाह को टालना नहीं।"

उडीया बोली — "ठीक है। जो कुछ मैं खाऊॅगी उसमें से आधा उसको पहले खिलाऊॅगी।"

भाई बोले — "ठीक। और अगर तुम किसी खतरे में होगी तो यह बिल्ली आ कर हमको बता देगी। केवल ऐल्व्ज और कबूतर जो तुम्हारी खिड़की के पास उड़ते रहते है वे जानते हैं कि हम कहॉ मिलेंगे।"

उडीया बोली — "यह तो कबूतरों के बारे में मैंने पहली बार सुना है। तुमने मुझे उनके बारे में पहले क्यों नहीं बताया?"

भाई फिर बोले — "हम लोग उनके लिये हमेशा ही सात दिन का खाना पीना छोड़ जाते हैं।"

लड़की बोली — "अरे, अगर मुझे पहले पता होता तो मैं रोज उनको ताजा खाना और पानी दे देती क्योंकि सात दिन बाद तो कोई

भी चीज़ खराब हो जाती है। क्या यह अच्छा नहीं होता अगर मैं उनको रोज दाना खिलाती और रोज पानी पिलाती?"

भाई बोले — "हॉ यह तो सचमुच ही बहुत अच्छा होता। तुम जो दया उन पर दिखा रही हो हमको लग रहा है कि वह दया तुम हमारे ऊपर कर रही हो।"

लड़की बोली — "कोई बात नहीं भैया तुम उनकी चिन्ता नहीं करना। मैं भी उनको ऐसे ही समझूॅगी जैसे वे मेरे भाई ही हों।" उस रात वे भाई किले में ही सोये पर अगली सुबह सुबह ही वे नाश्ता करने के बाद अपने अपने हथियार ले कर अपने अपने घोड़ों पर चढ़े और फिर से शिकार पर जाने के लिये तैयार हो गये।

जाते जाते उन्होंने अपनी बहिन से कहा — "ध्यान रखना कि कोई अन्दर न आने पाये जब तक हम घर न लौट आयें।"

लड़की ने ज़ोर से चिल्ला कर कहा "ठीक है।" और फिर उसने सात दिन के लिये किले के दरवाजे बन्द कर लिये।

आठवें दिन उसके भाई फिर पहले की तरह से वापस घर लौट आये। अगले दिन सुबह नाश्ते के बाद वे फिर पहले की तरह से अपने शिकार पर चले गये।

उनके जाने के बाद उसने घर की सफाई करनी शुरू की। सफाई करते समय उसको एक बीन मिल गयी तो वह उसने उठा कर खा ली।

तुरन्त ही वह बिल्ली वहॉ आ गयी और उसको कुछ खाते देख कर उससे पूछा — "क्या खा रही हो?"

"कुछ नहीं।"

"अपना मुॅह खोल कर दिखाओ। मैं देखूॅ तो।" लड़की ने अपना मुॅह खोल दिया।

बिल्ली फिर बोली — "पर तुमने इसमें से आधी बीन मुझे क्यों नहीं दी?"

"मैं भूल गयी। पर यहॉ तो बहुत सारी बीन्स हैं तुम चाहो तो चाहे जितनी खा लो।"

"नहीं, उससे मेरा काम नहीं बनता। मुझे उसी बीन में से आधी बीन चाहिये जो तुमने खायी है।"

उडीया बोली कि वह बीन तो अब वह उसको नहीं दे सकती थी क्योंकि वह तो उसने खा ली थी। पर बिल्ली उसी बीन के लिये जिद करती रही।

उडीया ने उसको समझाने की कोशिश की — "वह बीन अब मैं तुमको कैसे दे सकती हूॅ वह तो मैने खा ली। मैं तुमको सौ बीन्स और भून दूॅगी पर यह कैसे दूॅ।"

बिल्ली फिर बोली — "नहीं, मुझे तो वही बीन चाहिये।"

अबकी बार वह झल्ला कर बोली — "तुम जो चाहो सो करो पर मैं अब वह बीन तुम्हें कहॉ से दूॅ? अब तुम जाओ।"

सो बिल्ली तुरन्त रसोई में दौड़ी गयी और जा कर उसने वहॉ जलती हुई आग पर थूक दिया जिससे वह बुझ गयी। उडीया जब शाम का खाना बनाने के लिये रसाई में गयी तो उसने देखा कि वहॉ तो आग ही नहीं थी।

उसने बिल्ली से पूछा — "तुमने यह आग क्यों बुझायी?"
"तुमको यह बताने के लिये कि तुम कितना अच्छा खाना बनाती हो। तुम ही ने तो मुझसे कहा था कि मैं जो चाहे करूँ।"

लड़की रसोई से निकल कर किले की छत पर चढ़ गयी। वहॉ से उसको बहुत बहुत दूर एक आग जलती हुई दिखायी दी। उसने सोचा कि मैं अपनी आग जलाने के लिये वहीं से थोड़ी सी आग ले आती हूँ।

सो वह तुरन्त किले से नीचे उतरी और उस आग की तरफ चल दी। जब वह आग के पास पहुँची तो वहॉ उसने उस आग के पास एक बड़ी उम्र वाले आदमी को बैठा पाया। उसने उस आदमी से थोड़ी सी आग मॉगी — "बाबा मुझे थोड़ी सी आग चाहिये।"

इत्तफाक से वह आदमी एक आदमी खाने वाला आदमी था।

उस आदमी ने पूछा — "तुमको छोटा अंगारा चाहिये या बड़ा?"

"क्यों? इससे क्या फर्क पड़ता है?"

वह आदमी बोला — "अगर तुमको बड़ा अंगारा चाहिये तो तुमको अपने कान से ले कर अपने अँगूठे तक की खाल की पट्टी

देनी पड़ेगी। और अगर तुमको छोटा अंगारा चाहिये तो अपने कान से ले कर अपनी छोटी उॅगली तक की खाल की पट्टी देनी पड़ेगी।"

उडीया ने सोचा कि यह तो दोनों ही एक सी चीज़ें हैं सो उसने उस आदमी से बड़ा अंगारा मॉग लिया। जब उस आदमी ने उसकी खाल निकाल ली तो वह अंगारा ले कर घर आ गयी।

वह बेचारी आग लिये हुए किले तक के सारे रास्ते अपना खून बहाती किले में वापस आयी।

उसको यह पता ही नहीं चला कि किले तक के सारे रास्ते एक रैवन उसका पीछा करता चला आ रहा था। वह रैवन उस लड़की के पीछे गिरते हुए खून की धार को मिट्टी से ढकता हुआ चला आ रहा था।

वह तब तक उस लड़की के पीछे पीछे चलता रहा जब तक उसका घर नहीं आ गया। जब वह लड़की किले के दरवाजे में घुस गयी तो वह वहॉ से उड़ कर चला गया।

किले में घुसने से पहले जब उडीया ने रैवन को देखा तो वह डर गयी और उसने डर कर उससे कहा — "तुम भी ऐसे ही चौंको जैसे तुमने मुझे चौंकाया है।"

रैवन ने उससे पूछा कि उसने उसको इतना बुरा भला क्यों कहा जबकि उसका पीछा कर के उसने उसका कोई नुकसान नहीं किया बल्कि उसकी भलाई ही की है।"

लड़की ने पूछा — "तुमने मेरी क्या सेवा की है?"

रैवन बोला — "तुमको इस बात का जल्दी ही पता चल जायेगा।"

यह कह कर वह उड़ गया और उड़ते समय अपनी चोंच से उडीया के गिरे हुए खून पर से मिट्टी खुरचता चला गया जो उसने आते समय उस पर डाली थी।

रात को वह आदमी खाने वाला आदमी उडीया को पकड़ने और खाने के लिये उस गिरे हुए खून के निशानों के पीछे पीछे चलता हुआ किले की तरफ चल दिया। जब वह किले के पास आया तो किले के सात दरवाजों ने उसको रोक लिया।

उन सात दरवाजों में छह दरवाजे लकड़ी के थे और एक लोहे का था और सातों दरवाजे अच्छी तरह से बन्द थे। उसने बाहर से ही उडीया को पुकारा — "ओ उडीया। तुम क्या देखती हो कि तुम्हारे बाबा क्या कर रहे हैं?"

उडीया बोली — "मैंने उनको रेशम अपने नीचे बिछाते देखा और अपने ऊपर बिछाते देखा और एक चार डंडों वाले पलंग पर लेटते हुए देखा।"

जब उस आदमी ने यह सुना तो उसने किले का पहला दरवाजा तोड़ा और फिर हॅस कर वापस चला गया। अगली रात वह फिर आया और उसने फिर वही किया जो उसने पहली रात किया था। इस तरह उसने किले के छह दरवाजे छह रातों में तोड़ दिये।

आखिरी दिन अब किले का एक दरवाजा खोलने से रह गया था और वह था लोहे का दरवाजा।

उडीया ने अपने भाइयों को एक चिट्ठी लिखी और किले के कबूतर के गले में बॉध दी और बोली — "ओ कबूतर तूने मेरे पिता और बाबा की सेवा की है। जा यह चिट्ठी ले जा और इसको मेरे भाई को दे देना और तुरन्त ही वापस आना।" कबूतर तुरन्त ही उड़ गया।

उड़ते उड़ते वह वहॉ जा पहुॅचा जहॉ उडीया के भाई थे। सबसे बड़े भाई ने कबूतर की गरदन से चिट्ठी खोली और उसे पढ़ा।

उसकी बहिन ने उसमें लिखा था — "मैं बहुत परेशानी में हूॅ। अगर तुम मुझे आज रात को बचाने के लिये नहीं आये तो कल मैं तुमको ज़िन्दा नहीं मिलूॅगी। क्योंकि आदमी खाने वाले ने किले के छह दरवाजे तोड़ दिये हैं। अब केवल लोहे वाला दरवाजा ही बचा है। जल्दी से घर आ जाओ।"

बड़े भाई ने अपने भाइयों से कहा — "जल्दी करो जल्दी करो।"

"क्यों क्या हुआ?"

"अगर हम आज रात को घर नहीं पहुॅचे तो वह आदमी खाने वाला आदमी हमारी बहिन को खा जायेगा।"

और उन सबने अपने अपने घोड़े उठाये और घर की तरफ चल दिये। किले के बाहर से ही वे चिल्लाये कि "बहिन हम आ गये।"

पर बहिन तो इतनी डरी हुई थी कि वह डर के मारे बोल भी नहीं सकी।

किले के छह दरवाजे तो पहले से ही टूटे हुए थे सो वे भाई उनके अन्दर तो घुस गये पर सातवॉ लोहे का दरवाजा अभी भी बन्द था। वे वहॉ आ कर फिर चिल्लाये — "उडीया, दरवाजा खोलो, हम हैं तुम्हारे भाई।"

तब वह उठी और आ कर उसने दरवाजा खोला और भाई के कन्धे पर सिर रख कर रो पड़ी। भाई ने उसको सब्र बॅधाते हुए पूछा — "क्या हुआ कुछ बताओ तो। उस आदमी खाने वाले ने तुमको ढूॅढा कैसे?"

उडीया बोली — "यह सब उस बिल्ली की गलती है। उसने मेरी खाना बनाने वाली आग बुझा दी जिसकी वजह से मैं खाना नहीं बना सकी। और यह केवल एक बीन की वजह से हुआ। मैंने एक बीन खा ली थी और उसमें से आधी उसको देना भूल गयी।"

"पर हमने तो तुमसे यह बात खास कर के कही थी कि कोई भी चीज़ बिना बिल्ली को दिये मत खाना।"

उडीया बोली — "पर मैंने कहा न कि मैं भूल गयी थी।"

भाई ने फिर पूछा — "क्या वह आदमी खाने वाला आदमी यहॉ रोज आता है?"

उडीया बोली — "हॉ वह यहॉ रोज आता है। रोज वह एक दरवाजा तोड़ता है और चला जाता है।"

यह सुन कर सब भाई एक साथ बोले — "तब हम एक गड्ढा खोदते हैं और उसमें हम जलाने वाली लकड़ी डाल देते हैं। उसको हम ढक देंगे और जब वह आयेगा तो हम उसको उस गड्ढे में ढकेल देंगे।"

और वे सब भाई अपने अपने काम पर लग गये। गड्ढा खोद कर उन्होंने उसको लकड़ी से भर दिया और फिर उसमें आग लगा दी। उन्होंने तब तक इन्तजार किया जब तक वे लकड़ियॉ जल कर कोयला नहीं हो गयीं।

जब वह आदमी खाने वाला आदमी वहॉ आया और रोज की तरह से उडीया से पूछा — "ओ उडीया, तुम क्या देखती हो कि तुम्हारे बाबा क्या कर रहे हैं?"

तो उडीया ने जवाब दिया — "मैंने उनको गधे की खाल खींचते और उसको मारते देखा। वह आग में गिर गया और उसको आग ने जला दिया।"

यह सुन कर वह आदमी गुस्से में भर कर उस लोहे के दरवाजे पर कूद गया। दरवाजा टूट गया। दरवाजे के उस तरफ उडीया के सातों भाई खड़े थे। वे बोले — "आओ इस चटाई पर बैठ कर थोड़ा आराम कर लो।"

जैसे ही वह आदमी चटाई पर बैठा कि वह उस गड्ढे में गिर पड़ा जिसमें जलता हुआ कोयला भरा हुआ था। भाइयों ने उसके

ऊपर और लकड़ियॉ डाल दीं और वह उस आग में सारा का सारा जल गया।

जब वह आदमी जल रहा था उसकी एक उॅगली का नाखून नहीं जला। वह वहॉ से उछल कर ऊपर के कमरे में खड़ी उडीया के उॅगली के नाखून के ठीक नीचे जा लगा। उस नाखून के लगते ही उडिया मर गयी।

उसके भाई नीचे उसका इन्तजार कर रहे थे। जब उडीया देर तक नहीं आयी तो उन्होंने आपस में एक दूसरे से पूछा कि उडीया अभी तक नीचे क्यों नहीं आयी।

बड़ा भाई बोला — "क्या हो सकता है उसको? वह अभी तक नीचे क्यों नहीं आयी? कहीं ऐसा तो नहीं कि वह भी आग में गिर पड़ी हो?"

सो एक भाई ऊपर दौड़ा गया तो उसने देखा कि उडीया तो फर्श पर लेटी हुई है। उसने उडीया को आवाज भी लगायी पर उडीया न तो बोली और न हिली।

तब उसने देखा कि वह तो मरी पड़ी है। वह नीचे ऑगन में भागा गया और चिल्लाया — "ऊपर आओ हमारी बहिन तो मर गयी है।"

पल भर में ही वे सब ऊपर थे और उन्होंने देखा कि उनकी बहिन तो वाकई मर गयी थी।

उसके भाइयों ने उसके शरीर को एक काठी पर रखा और काठी को ऊॅट पर और ऊॅट से कहा कि इसको मॉ के पास ले जाओ।

उन्होंने अपने ऊॅट को बीच में रुकने और किसी से पकड़े जाने से मना किया और यह भी कहा कि वह किसी दूसरे के सामने घुटनों के बल न बैठे। ऐसा वह तब ही करे जब उसको कोई "स्ट्रिंग" कह कर पुकारे। सो वह ऊॅट चल दिया।

जब वह आधी दूर पहुॅच गया तो उसको तीन आदमी मिले जो उसको पकड़ने के लिये उसके पीछे दौड़े और बोले "रुक जाओ।" पर ऊॅट तो और तेज़ी से भाग लिया।

ऊॅट के तेज़ भागने पर वे आदमी भी उसके पीछे पीछे तेज़ भागे तो उनमें से एक आदमी के जूते की रस्सी खुल गयी तो वह चिल्लाया — "जरा रुक जाओ मेरे जूते की रस्सी खुल गयी है।"

ऊॅट ने जब "स्ट्रिंग"[55] शब्द सुना तो वह रुक गया और घुटनों के बल बैठ गया। जब वे आदमी उस ऊॅट के पास आये तो उन्होंने देखा कि उसमें तो एक लड़की पड़ी है और उसकी उॅगली में एक अॅगूठी चमक रही है।

एक आदमी ने उडीया का हाथ पकड़ा और उसके हाथ में से उसकी अॅगूठी उतारने की कोशिश की तो उडीया के नाखून के नीचे

[55] Shoelace is called "String" also in English.

से उस आदमी खाने वाले आदमी का नाखून निकल कर नीचे गिर पड़ा और वह ज़िन्दा हो गयी।

उसने उठते ही कहा — "वह जीता रहे जिसने मुझे ज़िन्दगी दी और उसको मार दे जिसने मुझे मारा।"

जब ऊॅट ने लड़की को बोलते हुए सुना तो वह पलटा और उस लड़की को उसके भाइयों के पास ले गया। उसके भाई अभी भी ऑगन में बैठे अपनी बहिन के लिये रो रहे थे। रोते रोते उनकी ऑखें धुॅधला गयीं थीं।।

इसलिये जब ऊॅट उनके सामने जा कर खड़ा हुआ तो वे बोले — "शायद ऊॅट हमारी बहिन को वापस ले आया है।" सो वे उसको पीटने के लिये उठ कर खड़े हो गये।

पर ऊॅट आ कर उनके सामने घुटनों के बल बैठ गया और उडीया उस पर से उतरी। बहिन को ज़िन्दा देख कर तो वे सब उससे लिपट गये और खुशी के मारे बहुत ज़ोर से रो पड़े।

जब वे कुछ सॅभले तो सबसे बड़े भाई ने पूछा — "बताओ तो यह सब कैसे हो गया और तुमको किसने मारा?"

उडीया बोली — "मैं ऊपर वाले कमरे में खड़ी थी कि उस आदमी खाने वाले आदमी का एक नाखून मेरे नाखून में आ कर लग गया और मैं मर कर जमीन पर गिर पड़ी। बस मुझे इतना ही मालूम है।"

उसने फिर पूछा — "पर वह नाखून निकाला किसने?"

"एक आदमी ने मेरे हाथ से अॅगूठी निकालने की कोशिश की तो वह नाखून छिटक कर बाहर आ गया और मैं वापस ज़िन्दा हो गयी।

और जब ऊॅट ने मुझे यह कहते हुए सुना कि "वह जीता रहे जिसने मुझे ज़िन्दगी दी और उसको मार दे जिसने मुझे मारा।" तब वह ऊॅट पलटा और मुझे यहॉ वापस ले आया। यही मेरी कहानी है।" इतना कह कर वह चुप हो गयी।

बड़ा भाई बोला — "भाइयो, क्या तुम लोग मेरी बात सुनोगे जो मैं कहूॅगा?"

"क्यों नहीं सुनेंगे। क्या तुम हमारे पिता और बड़े भाई दोनों ही नहीं हो?"

"तो मेरी सलाह यह है कि हमको अपनी बहिन को अपने माता पिता के पास ले चलना चाहिये ताकि हम उनको उनके मरने से पहले देख सकें।"

सब भाई इस बात पर राजी हो गये। सबने अपने अपने घोड़े तैयार किये। अपनी बहिन को ऊॅट पर बिठाया और अपने घर की तरफ चल दिये।

पॉच दिन के सफर के बाद वे अपने घर पहुॅचे जहॉ उनके माता पिता अकेले रह रहे थे। अपने बेटों को देख कर पिता बहुत खुश हुआ और बोला — "मेरे प्यारे बेटो तुम लोग हमें रात दिन के लिये रोता छोड़ कर यहॉ से क्यों चले गये?"

बड़ा बेटा बोला — "पिता जी अभी हम थोड़ा आराम कर लें फिर मैं आपको सारी कहानी शुरू से सुनाता हूँ।"

"ठीक है।" कह कर पिता ने तीन दिन तक इन्तजार किया। चौथे दिन बड़े भाई ने अपने माता पिता से पूछा — "क्या आप हमारे साथ क्या क्या हुआ यह सुनना चाहेंगे?"

"यकीनन।"

तब उसने उनको बताया कि वह उनकी चाची थी जिन्होंने उन सबको घर छोडने पर मजबूर किया। हम इस बात पर राजी हुए थे कि अगर हमारे बहिन होगी तो चाची सफेद रूमाल हिलायेगी और अगर भाई होगा तो वह हॅसिया हिलायेगी। क्योंकि फिर हमारे यहॉ आने का कोई मतलब नहीं था और हम दूर भी घूम सकते थे।

हमारी चाची हमको पसन्द नहीं करती थी और हमारे उसी घर में रहने से नफरत करती थी। सो जब हमारी यह बहिन हुई तो चाची ने सफेद रूमाल हिलाने की बजाय हॅसिया हिला दिया और हम वहॉ से चले गये।

और फिर उसी की वजह से हम शिकार पर से नहीं लौटे। और उसी की वजह से उन सबको जो कुछ भी उनके साथ हुआ वह सब उनको देखना पड़ा।

11 जादुई हंसिनी[56]

अपने भाई की परवाह करने वाली बहिन की यह कहानी हमने तुम्हारे लिये रूस देश की लोक कथाओं से ली है।

एक बार की बात है एक पति पत्नी अपनी एक बेटी और एक छोटे से बेटे के साथ रहते थे।

एक दिन मॉ ने अपनी बेटी से कहा — "बेटी देखो हम लोग काम करने जा रहे हैं। तुम यहॉ घर पर अपने भाई का ख्याल रखना। और देखो घर की चहारदीवारी के बाहर मत जाना। अच्छी बच्ची बन कर रहना। हम तुम्हारे लिये एक रूमाल ले कर आयेंगे।"

यह कह कर वे तो अपना काम करने चले गये और वह बच्ची तो वह सब भूल गयी जो उसकी मॉ उससे कह कर गयी थी। उसने तुरन्त ही अपने छोटे भाई को एक खिड़की के नीचे घास पर बिठाया और घर के कम्पाउंड में भाग गयी। वहॉ वह खेलती रही और खेल में इतनी डूब गयी कि उसको कुछ और याद ही नहीं रहा।

[56] The Magic Swan-Geese – a fairy tale from Russia, Asia. Taken from the Web Site : http://www.fdi.ucm.es/profesor/fpeinado/projects/kiids/apps/protopropp/swan-geese.html Collected by Afanasieve. Taken from the book "Russian Fairy Tales: The Afanasieve Collectin" (Tale No 113). .

इतने में एक हंसिनी आयी और उसके छोटे भाई को उठा कर ले गयी। जब लड़की अन्दर आयी तो उसने देखा कि उसका भाई तो वहॉ नहीं है। वह चिल्ला पड़ी — "ओह नहीं। कहॉ गया मेरा भाई?"

वह बेचारी इधर उधर दौड़ती फिरी पर वह तो उसको कहीं दिखायी नहीं दिया। उसने उसका नाम ले कर ज़ोर ज़ोर से पुकारा भी पर उसका तो कहीं पता ही नहीं था। वह रो पड़ी और रो रो कर कहने लगी कि उसके माता पिता अब उससे कितना गुस्सा होंगे।

पर उसके भाई ने तो कोई जवाब ही नहीं दिया। जवाब तो कोई तब देता जब वहॉ कोई होता। वह तो बेचारा वहॉ था ही नहीं तो वह जवाब कहॉ से देता।

उसको ढूँढने के लिये फिर वहॉ से वह खेतों के किनारे तक भागी भागी गयी तो उसको वह हंसिनी दिखायी दे गयी जो उसके भाई को उठा कर ले गयी थी। वह दूर और बहुत दूर जंगल की तरफ उड़ी चली जा रही थी और उसकी ऑखों से ओझल होती जा रही थी।

उसको लगा कि वे हंसिनियॉ उसके भाई को अपने साथ लिये चली जा रही थीं। हंसिनियॉ तो अपनी शैतानी और छोटे बच्चों को उठाने के लिये पहले से ही बहुत बदनाम थीं।

लड़की उन हंसिनियों के पीछे पीछे दौड़ चली। दौड़ते दौड़ते वह एक ओवन[57] के पास आ गयी। उसने ओवन से पूछा — "ओ छोटे ओवन ओ छोटे ओवऩ मुझे बता ये हंसिनियॉ उड़ कर कहॉ जा रही हैं?"

ओवन बोला — "पहले तुम मेरे राई के कुछ बन[58] खाओ तब मैं तुम्हें बताता हूॅ कि वे कहॉ जा रही हैं।"

"मैं तुम्हारे राई बन नहीं खा रही। मैं तो अपने घर में रखे गेहूॅ के बन भी नहीं खाती।" सो ओवन ने उसको नहीं बताया कि वे हंसिनियॉ कहॉ जा रही थीं और वह लड़की दौड़ती हुई और आगे चली गयी।

दौड़ते दौड़ते वह एक सेब के पेड़ के पास आयी। उसने सेब के पेड़ से पूछा — "ओ सेब के पेड़ ओ सेब के पेड़ मुझे बता ये हंसिनियॉ उड़ कर कहॉ जा रही हैं?"

सेब का पेड़ बोला — "तुम पहले मेरे जंगली सेब खाओ फिर मैं तुम्हें बताता हूॅ कि ये हंसिनियॉ उड़ कर कहॉ गयी हैं।"

---

[57] Oven – an oven is a thermally insulated chamber used for the heating, baking or drying of a substance, and most commonly used for cooking. Kilns and furnaces are special-purpose ovens, used in pottery and metalworking, respectively.

[58] Bun of Rye – Bun are a kind of small round shape of bread, and rye is a kind of grain like wheat, barley, millet etc. See their picture above.

"मैं तुम्हारे जंगली सेब नहीं खाती। मैं तो अपने घर में अपने घर के बागीचे के सेब भी नहीं खाती।" और सेब के पेड़ ने उसको यह नहीं बताया कि वे हंसिनियॉ उड़ कर कहॉ जा रही थीं।

वह फिर दौड़ती हुई आगे बढ़ी। दौड़ते दौड़ते वह एक दूध की नदी के पास आयी जिसके किनारे पुडिंग[59] के थे। उसने नदी से पूछा — "ओ दूध की नदी ओ पुडिंग के किनारों वाली नदी मुझे बता ये हंसिनियॉ उड़ कर कहॉ जा रही हैं?"

दूध की नदी बोली — "पहले तुम दूध के साथ मेरी थोड़ी सी पुडिंग खाओ तब मैं तुम्हें बताती हूॅ कि ये हंसिनियॉ उड़ कर कहॉ जा रही हैं।"

लड़की बोली — "मैं नहीं खाती दूध के साथ तुम्हारी पुडिंग। मैं तो अपने घर की बनी हुई पुडिंग भी नहीं खाती।" और दूध की नदी ने भी उसको नहीं बताया कि वे हंसिनियॉ उड़ कर कहॉ जा रही थीं।

इस तरह से वह काफी देर तक मैदानों में और जंगलों में भागती रही। इस तरह भागते भागते उसको शाम हो गयी। वह यही नहीं जान पायी कि वे हंसिनियॉ उड़ कर कहॉ गयीं।

इस तरह भागते भागते उसको शाम हो गयी अब वह कुछ नहीं कर सकती थी सो शाम होने पर उसको घर लौटना पड़ा।

[59] Pudding may mean "Rice Kheer" or "Porridge or Daliyaa", or even "Semolina Kheer", or even any kind of grain cooked in milk.

जैसे ही वह घर वापस आने के लिये पलटी तो उसने देखा कि उसके पीछे एक केबिन है जिसमें केवल एक छोटी सी खिड़की है। उस केबिन में तो एक जादूगरनी बैठी हुई थी – बाबा यागा। वह वहॉ बैठी बैठी रुई कात रही थी।

उसके पास ही चॉदी की एक बैन्च पर उसका अपना भाई बैठा था जो एक चॉदी के सेब से खेल रहा था। सो वह लड़की उस केबिन में भागी गयी और उस बुढ़िया से बोली — "ओ छोटी बुढ़िया ओ छोटी बुढ़िया।"

इससे पहले कि वह लड़की उससे आगे कुछ कहती या पूछती वह बुढ़िया बोली — "ओ लड़की तुम ऐसे मेरे घर में भागती हुई क्यों आयी हो?"

लड़की बोली — मैं जंगल और दलदल में से हो कर भागती चली आ रही हूॅ। मेरी पोशाक फट कर तार तार हो गयी है। मैं यहॉ थोड़ी सी गरमी लेने आयी हूॅ।"

"तुम यहॉ बैठो और लो यह रुई कातो। मैं अभी आती हूॅ।" कह कर बाबा यागा ने उसको एक तकली दी और उसको अकेला छोड़ कर वहॉ से चली गयी। लड़की उसका सूत कातने लगी।

अचानक स्टोव के नीचे से एक चूहा निकला और उसकी तरफ आ गया और बोला — "ओ लड़की ओ लड़की मुझे थोड़ा सा दलिया दे और मैं तुझको वह सब बताऊॅगा जो तू जानना चाहती है।"

लड़की ने उसको थोड़ा सा दलिया दे दिया तो वह चूहा बोला — "बाबा यागा आग लाने के लिये अपने नहाने वाले कमरे में गयी है। वह तुझे भाप में पकाने वाली है। फिर वह तुझे ओवन में रख कर भूनेगी और खा लेगी। उसके बाद वह तेरी दो हड्डियों पर चढ़ कर चली जायेगी।"

यह सुन कर तो वह लड़की तो सकते में आ गयी और रो पड़ी। पर चूहा आगे बोला — "बस अब तू किसी चीज़ का इन्तजार मत कर, अपने भाई को उठा और भाग जा। मैं तेरी जगह बैठ कर यह रुई कातता हूँ।"

लड़की ने तुरन्त ही अपने भाई को उठाया और वहॉ से भाग ली। जब वह वहॉ से चली गयी तो बाबा यागा खिड़की के पास आयी और लड़की से पूछा — "ओ लड़की क्या तुम अभी भी सूत कात रही हो?"

चूहा बोला — "ओ बुढ़िया हॉ मैं अभी भी सूत कात रही हूँ।" वह बूढ़ी जादूगरनी यह सुन कर सन्तुष्ट हो गयी और फिर से अपने नहाने वाले कमरे में चली गयी। जब उसकी आग काफी गरम हो गयी तो वह लड़की को लेने के लिये आयी। तो वहॉ तो उसको कोई दिखायी नहीं दिया।

वह चिल्लायी — "ओ हंसिनी उनके पीछे भाग। बहिन अपने भाई को चुरा कर भाग गयी है।"

उधर वह लड़की अपने भाई को अपनी बॉहों में लिये हुए भागते भागते दूध की नदी तक आ गयी। उसने देखा कि हंसिनियॉ उसके पीछे उड़ती हुई चली आ रही हैं।

"मॉ नदी मॉ नदी। मुझे छिपा लो।"

"तुम पहले मेरी थोड़ी सी पुडिंग खाओ।"

लड़की ने उसकी थोड़ी सी पुडिंग खायी और उसको धन्यवाद दिया। नदी ने उसको अपनी पुडिंग के किनारों में छिपा लिया। हंसिनियों ने उसको देखा नहीं और वे वहॉ से उड़ती चली गयीं।

लड़की ने अपने भाई को फिर अपनी बॉहों में उठाया और फिर वहॉ से भाग ली। पर वे हंसिनियॉ वापस आ गयीं और उसी की दिशा में उड़ने लगीं।

"देखो देखो वे रही वे हंसिनियॉ। अब मैं क्या करूँ?"

तभी उनको सेब का पेड़ दिखायी दिया तो उसको देख कर वह बोली — "ओ मॉ सेब के पेड़ ओ मॉ सेब के पेड़। मुझे छिपा लो।"

सेब का पेड़ फिर बोला — "मेरे थोड़े से सेब खा लो।"

लड़की ने तुरन्त ही उस पेड़ से तोड़ कर एक सेब खा लिया और उसे धन्यवाद दिया। पेड़ ने भी तुरन्त ही उसको अपनी शाखाओं में छिपा लिया। हंसिनियों ने उनको नहीं देखा और वे वहॉ से आगे उड़ गयीं।

लड़की ने फिर अपने भाई को अपनी बॉहों में उठाया और फिर भागना शुरू कर दिया। वह तब तक भागती रही जब तक वह बिल्कुल थक नहीं गयी। पर हंसिनियों ने उसका फिर से देख लिया तो वे फिर से लौट आयीं।

वे उसके ऊपर उड़ने लगीं और इस ताक में लगी रहीं कि जब भी उनको मौका मिले तो वह उसके भाई को उससे छीन लें। तभी उसको ओवन दिखायी दे गया।

वह बोली — "मॉ ओवन मॉ ओवन। मुझे कहीं छिपा लो।"

ओवन बोला — "पहले तुम मेरा राई बन खाओ।"

लड़की ने तुरन्त ही उसमें से निकाल कर एक बन खा लिया और ओवन को धन्यवाद दे कर अपने भाई को ले कर ओवन के अन्दर बैठ गयी।

हंसिनियॉ वहॉ उड़ती रहीं और उनको पुकारती रहीं पर कोई जवाब न मिलने पर फिर नाउम्मीद हो कर वहॉ से बाबा यागा के पास चली गयीं।

उनके जाने के बाद लड़की ने ओवन को एक बार फिर से धन्यवाद दिया और अपने भाई को ले कर अपने घर की तरफ भाग ली।

जैसे ही वह घर पहुॅची उसके कुछ देर बाद ही उसके माता पिता काम से वापस आ गये और उसकी यह लापरवाही दोनों में से किसी को पता नहीं चली।

12 सात फाख्ताऐं[60]

जो खुशी बॉटता है उसको भी खुशी मिलती है। दयालुता दोस्ती को बॉधती है और प्यार को पकड़ कर रखती है। जो बोता नहीं है वह फसल भी नहीं काटता। सियूला[61] ने इस बात की सच्चाई का सबूत चखा दिया है अब मैं आपको मिठाई देने जा रही हूॅ। अगर आप यह बात ध्यान में रखें कि कैटो[62] क्या कहता है "सबके सामने मत बोलो"।[63] इसलिये आप सब मेरे ऊपर दया कर के कुछ देर मुझे सुनें। और भगवान करे कि हम लोग खुश खुश आनन्ददायक बातें सुनते रहें।

एक बार अरज़ानो[64] शहर में एक बहुत भली सी स्त्री रहती थी जो हर साल एक बेटे को जन्म देती थी। आखिर उसने सात बेटों को जन्म दे दिया। वे किसी पैन के पाइप जैसे लगते थे जैसे सात रीड[65] हों एक दूसरे से बड़ा।

जब उन्होंने अपने दॉत पहली बार बदले तो उन्होंने अपनी मॉ जैनैटैला[66] से कहा — "अगर इतने बेटों के बाद इस बार तुमने एक बेटी नहीं पैदा की तो हम घर से बाहर चले जायेंगे और ब्लैकबर्ड के बेटों की तरह से इधर उधर घूमते फिरेंगे।"

जब मॉ ने यह दुखी बात सुनी तो उसने भगवान से प्रार्थना की कि वह अपने सात रत्नों को गॅवाने को बिल्कुल तैयार नहीं थी।

---

[60] The Seven Doves. A tale from "Il Pentamerone" by Giambattista Basile

[61] Ciulla – name of a person

[62] Cato

[63] Translated for the saying "Speak little at table"

[64] Arzano

[65] A reed is a thin strip of material that vibrates to produce a sound on a musical instrument

[66] Jannetella – name of the mother of the seven boys

जब बच्चे के जन्म का समय आया बेटों ने जैनैटैला से कहा — "हम लोग पास की पहाड़ी की चोटी पर जा रहे हैं। अगर तुम्हारे बेटा हो तो एक कलम और कलमदान खिड़की के ऊपर टॉग देना। अगर तुम्हारे बेटी हो तो तुम एक चम्मच और अटेरन खिड़की के ऊपर टॉग देना।

क्योंकि अगर हम बेटी का इशारा देखेंगे तो हम घर वापस आ जायेंगे और तुम्हारी छाया में अपनी ज़िन्दगी गुजारेंगे पर अगर हमने बेटे का इशारा देखा तो हमें भूल जाना और समझ लेना कि हम वहॉ से चले गये हैं।"

बेटों के जाने के जल्दी ही बाद भगवान खुश हुए और जैनैटैला के घर में एक बहुत सुन्दर बेटी ने जन्म लिया। उसने तुरन्त ही नर्स से खिड़की पर बेटी वाला इशारा टॉगने के लिये कहा पर वह बेवकूफ भूल गयी और उसने बेटा होने का इशारा कर दिया – एक कलम और कलमदान खिड़की पर टॉग दिया।

जैसे ही भाइयों ने बेटा होने का इशारा देखा तो वे वहॉ से चले गये। चलते रहे चलते रहे। तीन साल के आखीर में वे एक जंगल में आ पहुँचे जहॉ पेड़ पास में पड़े पत्थरों के ऊपर बहते पानी के संगीत पर तलवारों का नाच नाच रहे थे।

इसी जंगल में एक ओगरे भी रहता था। जब वह एक स्त्री के साथ था तो उस स्त्री ने उसे अन्धा कर दिया था तबसे जो कोई भी

लड़की उसकी पकड़ में आ जाती वह उसको मार देता था। जब ये नौजवान ओगरे के घर पहुॅचे तो चलने और भूख से थके हुए थे। उन्होंने उससे खाने के लिये थोड़ी सा खाना मॉगा।

ओगरे ने कहा कि अगर वे उसके घर में काम करेंगे तब वह उनको खाना देगा और उनको करना कुछ नहीं है सिवाय इसके कि उनको उस पर कड़ी निगाह रखनी है। यह काम हर बच्चा एक एक दिन बारी बॉध कर कर सकता है। बच्चों ने सोचा कि उनको उसमें माता पिता मिल गये सो वे राजी हो गये और ओगरे की सेवा में लग गये।

ओगरे ने उनके नाम जबानी याद कर लिये और एक बार उसने जियानग्रैज़ियो को पुकारा दूसरी बार सैकीटौलो को पुकारा फिर पास्केल को पुकारा फिर नूकियो पोन पैज़ीलो और कारकावेचिया को पुकारा।[67] उसने उनको अपने घर के निचले कमरे में रख दिया और ज़िन्दा रहने के लिये काफी कुछ दिया।

इस बीच उनकी बहिन बड़ी होती रही। जब उसको पता चला कि एक नर्स की बेवकूफी से उसके भाई घर छोड़ कर चले गये और तबसे उनकी कोई खबर नहीं मिली है। यह बात उसके दिमाग में घर कर गयी और वह उनको ढूॅढने के लिये निकल पड़ी। इस बात के लिये उसको अपनी मॉ की बहुत विनती करनी पड़ी।

[67] Giangrazio, Cecchitiello, Pascale, Nuccio, Pone, Pezillo and Carcavecchia – names of the seven brothers

बाद में मॉ को उसको जाने की इजाज़त देनी ही पड़ी। उसने उसको एक यात्री की तरह से तैयार कर दिया। लड़की चल पड़ी। चलती रही चलती रही। रास्ते में हर एक से अपने भाइयों के बारे में पूछती रही।

आखिर में एक सराय में जा कर उसको कुछ पता चला। वहॉ उसने रास्ता पूछा और जंगल की तरफ चल दी। एक सुबह जब सूरज अपनी किरनों की कलम से रात की स्याही से आसमान पर कुछ तस्वीरें खींच रहा था तब वह ओगरे के घर पहुॅच गयी।

उसके भाइयों ने उसको देखते ही पहचान लिया। उन्होंने उसका बड़ी खुशी से स्वागत किया। उसने इस बात के लिये बहुत अफसोस प्रगट किया कि कलम दवात खिड़की पर लटका कर नर्स ने बहुत बड़ी गलती की।

बहुत देर तक बहिन को सहलाने के बाद उन्होंने उससे कहा कि वह वहॉ चुपचाप रहे ताकि ओगरे यह बात न जानने पाये कि वह वहॉ थी। साथ में उन्होंने उससे यह भी कहा कि खाने से पहले वह उस बिल्ली को एक कौर चखा दे जो उसी कमरे में थी। नहीं तो वह बिल्ली उसको कुछ नुकसान पहुॅचा सकती थी।

सिओनाा[68] ने उनकी यह सलाह मान ली और अब वह जो कुछ भी खाती एक अच्छे साथी की तरह से उसमें से एक कौर पहले बिल्ली को खिला देती।

[68] Cionna was the name of the sister of those seven brothers

यह टुकड़ा तेरे लिये यह टुकड़ा मेरे लिये यह राजा की बेटी के लिये। आखिरी कौर बिल्ली का होता।

दिन निकलने लगे। एक दिन भाई लोग ओगरे के लिये शिकार करने के लिये गये। सिओना के लिये एक छोटी टोकरी में काबुली चना उबालने के लिये रख गये। जब वह उन्हें साफ कर रही थी बदकिस्मती से उसको उनमें एक हैज़ल नट मिल गया।

उस पत्थर ने तो वहॉ उसकी शान्ति से रहने के शीशे को तोड़ कर चूर चूर कर दिया। उसने उस नट को बिल्ली को बिना दिये हुए ही खा लिया। यह देख कर बिल्ली गुस्से से भर कर मेज पर कूदी और उस पर जल रही मोमबत्ती को बुझा दिया।

सिओना ने जब यह देखा ते उसकी समझ में नहीं आया कि वह क्या करे। अपने भाइयों की बात न मान कर वह कमरे में से चली गयी और ओगरे के कमरे में पहुॅच कर उससे आग मॉगी।

ओगरे ने एक लड़की की आवाज सुनी तो बोला — "आओ मैडम आओ। ज़रा रुको। तुम जो ढूॅढने आयी हो वह तुम्हें मिल गया है।" कह कर उसने एक जिनोआ पत्थर[69] उठाया उसको तेल में डुबोया और अपने दॉतों[70] पर मलने लगा।

सिओना ने देखा कि गाड़ी तो गलत रास्ते पर जा रही थी।

[69] Genoa stone. Genoa is a place in Italy.

[70] Translated for the word "Tusks"

उसने तुरन्त ही एक जलती हुई लकड़ी उठायी और वहॉ से भाग निकली। अपने कमरे में पहुॅच कर उसने दरवाजे का ताला लगा लिया। उसके पीछे लोहे के डंडे भी लगा दिये और मेजें कुर्सियॉ पलंग जो भी कुछ उसने अपने कमरे में देखा वह सब कुछ उसने दरवाजे के पीछे रख दिया।

जैसे ही ओगरे ने अपने दॉत तेज़ कर लिये वह भाइयों के कमरे की तरफ चल दिया। वहॉ पहुॅच कर उसने देखा कि दरवाजा तो बन्द है तो वह उसको खोलने के लिये उसमें ठोकर मारने लगा।

सातों भाइयों ने जब यह शोर सुना तो वह तुरन्त ही घर वापस आये। उन्होंने ओगरे के झूठे इलजाम की बात सुनी कि उन्होंने अपने कमरे में उसकी किसी स्त्री दुश्मन को छिपा रखा है।

तो जियानग्रैज़ियो ने जो भाइयों में सबसे बड़ा था और सबसे ज़्यादा समझदार था देखा कि बात तो हाथ से निकली जा रही थी तो बोला — "ओगरे। हमें इस बात का कुछ पता नहीं है। पर हॉ यह हो सकता है कि जब हम शिकार के लिये गये थे तब यह नीच स्त्री इत्तफाक से हमारे कमरे में आ गयी हो।

पर क्योंकि अब उसने अपने को कमरे में बन्द कर रखा है तो आप मेरे साथ आइये जहॉ से हम उसे पकड़ सकेंगे और वह अपनी रक्षा नहीं कर पायेगी।"

तब वे ओगरे को हाथ पकड़ कर एक तरफ को ले गये जहॉ एक बहुत ही गहरा गड्ढा था। वहॉ पहुॅच कर उन्होंने उसको उस

गड्ढे में धक्का दे दिया जिससे वह सिर के बल उसकी तली में जा गिरा। फिर वहीं से एक फावड़ा उठाया और उसको मिट्टी से ढक दिया।

तब उन्होंने अपनी बहिन को दरवाजा खोलने के लिये कहा और उसे उसकी गलती के लिये बहुत डॉटा। फिर उसे बताया कि उसने अपने आपको किस खतरे में डाल लिया था। आगे से उसे सावधान रहने के लिये कहा। उन्होंने उससे यह भी कहा कि वह जहॉ ओगरे को दफ़नाया गया था वहॉ की जमीन पर उगी हुई घास न तोड़े वरना वे सात फाख्ताओं में बदल जायेंगे।

सिओना बोली — "भगवान करे हमारे ऊपर ऐसी बदनसीबी कभी न आये।"

फिर उन्होंने ओगरे का सारा सामान और घर सब कब्जे में कर लिया और खुशी से रहने लगे। वे इस इन्तजार में थे कि जाड़ा निकल जाये धरती पर हरी हरी घास में सुन्दर फूल निकल आयें तब वे लोग अपने घर जायें।

ठंड दिन पर दिन बढ़ती जा रही थी सो एक दिन वे सब भाई लोग जलने वाली लकड़ी लेने के लिये पहाड़ के ऊपर गये हुए थे ताकि वे ठंड में गर्म रह सकें।

कि एक गरीब यात्री ओगरे के जंगल में आया और पास में एक पाइन के पेड़ पर बैठे बन्दर की तरफ देख कर मुॅह बनाने लगा। तो बन्दर ने भी पेड़ से तोड़ कर एक फ़रऐपिल उसके पेट पर फेंक

दिया। वह फल इतनी ज़ोर से उसके ऊपर लगा कि वह उसकी चोट से चीख पड़ा।

सिओना ने यह आवाज सुनी तो वह बाहर आयी और उस आदमी को देख कर उसको ऊपर दया आ गयी। तुरन्त ही उसने पास लगे हुए रोज़मैरी के पेड़ की एक टहनी तोड़ी और उसे रोटी और नमक के साथ पुल्टिस बना कर उसके ऊपर लगा दी। फिर उसने उसको कुछ खिलाया और वापस भेज दिया। अब यह रोज़मैरी का पेड़ ओगरे की कब्र पर लगा हुआ था।

जब सिओना कपड़ा बिछा रही थी और अपने भाइयों का इन्तजार कर रही थी लो उसने क्या देखा कि उसके भाइयों की जगह सात फाख्ताऐं उड़ी चली आ रही हैं।

उन्होंने आते ही कहा — "अच्छा होता अगर तुम्हारे हाथ कट गये होते। क्योंकि ये ही हमारे ऊपर यह बदकिस्मती ले कर आये हैं। अच्छा होता अगर तुम इन हाथों से रोज़मैरी न तोड़तीं तो हम पर यह मुसीबत न आती। क्या तुमने बिल्ली का दिमाग खाया है जो तुमने हमारी सलाह पर ध्यान नहीं दिया।

हमें देखो। अब हम चिड़िया बन गये हैं काइट चिड़िया बाज़ चील आदि के शिकार बन गये हैं। तुमने हमें जे उल्लू कठफोड़वा बुलबुल मुर्गी मुर्गे आदि का साथी बना दिया है। तुमने तो यह एक बड़ा खास काम किया है। अब हम अपने देश जा सकते हैं जहॉ हमारे पकड़ने के लिये जाल बिछे होंगे।

तुमने एक यात्री को ठीक करने के लिये हम सात भाइयों के सिर तोड़ दिये हैं। अब हमारी इस बदकिस्मती को दूर करने की कोई दवा भी नहीं है। जब तक कि तुम "समय की मॉ"[71] को नहीं पा लेतीं। वही तुम्हें बता सकती है कि हमारी परेशानी कैसे दूर होगी।"

सिओना तो अपने इस अपराध पर एक पंख नोची गयी चिड़िया की तरह से खड़ी रह गयी। उसने अपने भाइयों से माफी मॉगी और कहा कि वह सारी दुनियॉ में जायेगी जब तक वह समय की मॉ को नहीं ढूँढ लेती।

तब उसने उनसे विनती की कि वे घर के अन्दर ही रहें जब तक कि वह वापस न आ जाये कहीं ऐसा न हो कि कोई और मुसीबत गले पड़ जाये।

वह वहॉ से अपनी यात्रा पर निकल पड़ी। बिना थके वह चलती रही चलती रही। हालॉकि वह पैदल जा रही थी पर अपने भाइयों को वापस लाने की उसकी इच्छा उसे एक घंटे में तीन मील चलने की प्रेरणा देती रही।

चलते चलते आखिर वह समुद्र के किनारे आ गयी जहॉ तेज़ हवा पानी को चट्टानों से टकरा रही थी। यहॉ उसने एक बहुत बड़ी व्हेल मछली देखी। मछली उससे बोली — "मेरी प्यारी बच्ची तुम क्या ढूँढ रही हो।"

[71] Translated for the words "Mother of Time"

वह बोली — "मैं समय की मॉ का घर ढूँढ रही हूँ।"

मछली बोली — "सुनो उसके देखने के लिये तुमको यह करना चाहिये कि इस किनारे के साथ साथ सीधी चली जाओ और जब तुम पहली नदी पर आओ तो उसके स्रोत तक चलती चली जाना। वहॉ तुम्हें कोई मिलेगा वह तुम्हें बतायेगा कि तुम्हें क्या करना है।

पर तुम मेरे ऊपर एक मेहरबानी कर दो। जब तुम्हें वह बुढ़िया मिल जाये तो उससे विनती करना कि वह मुझे कोई ऐसी तरकीब बताये जिससे मैं आसानी से तैर सकूँ। मैं किसी चट्टान से न टकराऊँ जैसे कि मैं अक्सर टकरा जाती हूँ और फिर रेत पर जा कर गिर जाती हूँ।"

सिओना बोली — "मेरा विश्वास करो मैं जरूर पूछूँगी।"

फिर उसने उसको रास्ता बताने के लिये धन्यवाद दिया और अपने रास्ते चल दी। काफी देर चलने के बाद वह नदी के पास आ पहुँची जो अपने खजाने से चॉदी समुद्र में जमा कर रही थी। वहॉ से वह उसके स्रोत की तरफ चल दी।

वहॉ वह एक खुले से देश में आ पहुँची जहॉ घास के मैदान आसमान से मिल रहे थे। घास के मैदानों में फूल खिल रहे थे। वहॉ उसको एक चूहा मिल गया तो उसने लड़की से पूछा — "ओ प्यारी लड़की तुम इस तरह से अकेली कहॉ जा रही हो?"

सिओना बोली — "मैं समय की मॉ को ढूँढ रही हूँ।"

चूहा बोला — "उसके लिये तो तुम्हें बहुत दूर जाना पड़ेगा। पर तुम अपना दिल छोटा मत करो। हर चीज़ का अन्त होता है। तुम पहाड़ों की तरफ चली जाओ तो वहाँ तुमको इसके बारे में और खबर मिल जायेगी।

पर मेरे ऊपर एक मेहरबानी करना। जब तुम उस बुढ़िया के घर पहुँचो तो उससे पूछना कि हम बिल्लियों से कैसे बचें। फिर जो तुम कहोगी मैं वही करूँगा।"

सिओना ने उसको रास्ता बताने के लिये धन्यवाद दिया उसकी मुश्किल हल करने का वायदा किया और पहाड़ों की तरफ चल दी। पहाड़ हालाँकि पास ही दिखायी दे रहे थे पर ऐसा लग रहा था कि वह वहाँ तक कभी नहीं पहुँच पायेगी।

पर जब वह वहाँ तक आयी तो उसको बहुत सारी चींटियाँ मिलीं जो बहुत सारे दाने उठा कर ले जा रही थीं। उनमें से एक चींटी ने घूम कर देखा और बोली — "तू कौन है और कहाँ जा रही है?"

सिओना तो हर एक से बहुत प्यार से बोलती थी बोली — "मैं एक दुखी लड़की हूँ और अपने काम के लिये समय की माँ को ढूँढ रही हूँ।"

चींटी बोली — "यहाँ से और आगे चली जाओ और जहाँ ये पहाड़ खत्म होंगे और एक मैदान शुरू होगा वहाँ तुम्हें उसके बारे में और खबर मिलेगी। लेकिन मेरे ऊपर एक मेहरबानी करना। उस

बुढ़िया से यह पूछना कि हम कुछ समय तक और ज़िन्दा कैसे रह सकते हैं। क्योंकि मुझे तो इस दुनियॉ मे यह एक बहुत बड़ी बेवकूफी लगती है कि इतनी छोटी सी ज़िन्दगी के लिये हमें इतना सारा खाना इकट्ठा कर के रखना पड़ता है।

और यह ज़िन्दगी एक बेचने वाले की मोमबत्ती की तरह से जब उसके सामान की सबसे ऊॅची बोली लगने वाली होती है तभी बुझ जाती है।"

सिओना ने उसको भी रास्ता बताने के लिये धन्यवाद दिया और उसके सवाल का जवाब लाने का वायदा किया और आगे अपने रास्ते पर चल दी।

उसने पहाड़ पार किये और मैदान में आयी। थोड़ा आगे चलने पर वह एक बहुत बड़े ओक के पेड़ के पास आयी जो पुराने समय की याद दिला रहा था। उसने उसके फल खाये जो उसे बहुत मीठे लगे। उसके कुछ फल खा कर ही उसका पेट भर गया।

तब अपनी छाल को अपने होठ बना कर और अपने गूदे को अपनी जबान बना कर वह सिओना से बोला — "तुम इतनी दुखी हो कर कहॉ जा रही हो ओ लड़की। आओ मेरी छाया में बैठ कर थोड़ा सुस्ता लो।"

सिओना ने उसे बहुत धन्यवाद दिया पर सुस्ताने के लिये यह कह कर माफी मॉगी कि अभी उसे समय की मॉ को ढूॅढने जाना है।

ओक ने जब यह सुना तो उसे बताया कि वह अब उसके घर से ज़्यादा दूर नहीं है। उसने कहा — "पर इससे पहले कि तुम अपने अगले दिन की यात्रा शुरू करो मैं तुम्हें बता दूँ कि तुमको उस पहाड़ पर एक घर दिखायी देगा वह बुढ़िया जिसे तुम ढूँढ रही हो तुम्हें उसी में मिल जायेगी।

अगर तुम्हारे अन्दर उतनी ही दयालुता है जितनी कि तुम सुन्दर हो तो मेरा एक काम करना। जब तुम बुढ़िया से मिलो तो उससे पूछना कि मैं अपनी खोयी हुई इज़्ज़त वापस लेने के लिये क्या कर सकता हूँ। क्योंकि केवल बड़े आदमियों का खाना बनने की बजाय अब तो मैं सूअरों का खाना ही रह गया हूँ।"

सिओना बोली — "तुम चिन्ता मत करो। मैं तुम्हारी सेवा जरूर करूँगी।" इतना कह कर वह वहाँ से भी चल दी। चलते चलते वह एक पहाड़ के नीचे आ गयी जिसके सिर आसमान के बादलों में अड़ा जा रहा था।

वहाँ उसको एक बूढ़ा मिला जो बहुत थका हुआ और पतला दुबला सा लग रहा था। वह भूसे पर लेटा हुआ था। जैसे ही उसने सिओना को देखा तो वह उसको तुरन्त ही पहचान गया। यह तो वही लड़की है जिसने उसकी चोट ठीक की थी।

जब उस बूढ़े को पता चला कि वह लड़की क्या खोज रही थी तो उसने उसे बताया कि वह खुद उसके पास धरती के उस टुकड़े का किराया ले कर जा रहा था जो उसने बोया था। समय तो बहुत

ही अत्याचारी था जिसने दुनियॉ की हर चीज़ जबरदस्ती हड़प ली थी। वह उसके लिये कहता था कि यह सब वह अपनी तारीफ के बदले में पाता था खास तौर से उतने बूढ़े लोगों से जितना कि वह तारीफ के काबिल था।

बूढ़े ने आगे बताया कि क्योंकि उसने उसके ऊपर कृपा की थी इसलिये वह उसको सौ गुना कर के वापस करना चाहता है। वह उसे पहाड़ पर आने की अच्छी खबर देगा।

उसे बहुत अफसोस है कि वह उसके साथ वहॉ जा नहीं सकता। क्योंकि उसकी बूढ़ी उम्र को यह शाप था कि वह नीचे ही जायेगा ऊपर नहीं इसलिये वह वहीं पहाड़ की तलहटी में रहने के लिये मजबूर है।

यहॉ से वह समय के क्लर्कों को मजदूरों का लोगों के दुखों का ज़िन्दगी की कमजोरियों का हाल भेजेगा और प्रकृति का कर्जा चुकायेगा।

बूढ़ा आगे बोला — "इसलिये ओ अच्छी बेटी अब तू मेरी बात सुन। तुझको पता होना चाहिये कि इस पहाड़ के ऊपर एक टूटा फूटा घर है जो बहुत समय पहले बनाया गया था। इतना पहले कि उस समय को सोचा भी नहीं जा सकता।

अब तो इसकी दीवारों में दरारें पड़ गयी हैं। नीवें ढीली पड़ने लगी हैं। दरवाजों में दीमक लग गयी है और फर्नीचर भी सब टूट फूट गया है। थोड़े में कहो तो अब सब कुछ नष्ट सा हो गया है।

एक तरफ को टूटे फूटे खम्भे हैं। दूसरी तरफ टूटी हुई मूर्तियॉ हैं। कोई भी चीज़ अब अच्छी हालत में नहीं है सिवाय उस सरकारी निशान के जो दरवाजे पर लगा है। उस निशान के चार हिस्से हैं जिनमें से एक में तुझे एक सॉप दिखायी देगा जो अपनी पूँछ काट रहा है एक में बारहसिंगा एक में रैवन और एक में फ़ीनिक्स चिड़िया।

जब तू अन्दर घुसेगी तो वहॉ तुझे फर्श पर कुछ काटने वाले औजार जैसे आरी हॅसिये आदि पड़े मिलेंगे। और राख से भरे सैंकड़ों बर्तन जिन पर नाम लिखे होंगे। वहॉ तुझे कोरिन्थ, सैगन्टम, कार्थेज, ट्रौय[72] और हजारों दूसरे शहरों के नाम पढ़ने को मिलेंगे जिनकी राख समय ने ट्रौफी की तरह सॅभाल कर रखी हुई है।

जब तू घर के पास आयेगी तो तब तक के लिये अपने आपको छिपा कर रखना जब तक के लिये समय बाहर जाता है। और जैसे ही वह बाहर चला जाये तब तू उस घर में घुस जाना। वहॉ जा कर तुझे एक बुढ़िया मिलेगी जिसकी दाढ़ी फर्श को छू रही होगी और उसका एक कूबड़ होगा जो आसमान को छू रहा होगा।

उसके बाल घोड़े की पूँछ जैसे होंगे और उसकी एड़ी को ढके होंगे। उसका चेहरा एक सिकुड़े हुए कौलर की तरह होगा जिसकी सिकुड़नों में उम्र की वजह से कलफ़ लग गया होगा।

[72] Corinth, Saguntum, Carthage, Troy – all names of cities of Italy

वह बुढ़िया एक घड़ी पर बैठी है जो एक दीवार पर लगी है। उसकी भौंहें इतनी बड़ी हैं कि वे उसकी ऑखों को भी ढक लेतीं हैं। इसका मतलब यह है कि वह तुझे देख नहीं पायेगी।

जैसे ही तू अन्दर घुसेगी तो तुरन्त ही घड़ी के ऊपर रखे हुए बोझों को हटा देना तब उस बुढ़िया को पुकारना और उससे विनती करना कि वह तेरे सवालों के जवाब दे दे। यह सुन कर वह तुरन्त ही अपने बेटे को बुलायेगी और तुझे खाने के लिये कहेगी।

पर क्योंकि वह घड़ी जिस पर वह बुढ़िया बैठी है तूने उसके बोझ हटा दिये हैं उसका बेटा हिल भी नहीं सकता सो उसको तुझसे कहना पड़ेगा कि तू अपना सवाल पूछ।

पर वह कोई भी कसम खाये तू उस पर भरोसा मत करना जब तक कि वह अपने बेटे के पंखों की कसम न खा ले। जब वह ऐसा कर ले तब तू सुरक्षित है।"

इतना कहने के बाद वह बूढ़ा गिर गया और टूट कर बिखर गया जैसे कि कोई लाश तहखाने में से दिन की रोशनी में ला कर रख दी गयी हो। सिओना ने राख उठायी और उसे एक पौंड ऑसुओं में मिला कर यह प्रार्थना कर के वहीं गाड़ दिया कि भगवान उसकी आत्मा को शान्ति दे।

फिर वह पहाड़ पर चढ़ती चली गयी यहॉ तक कि वह बहुत बदहवास हो गयी। वह घर के पास बैठी समय के बाहर आने का इन्तजार करती रही। समय एक बहुत ही बूढ़ा आदमी था जिसकी

बहुत लम्बी दाढ़ी थी। उसने एक बहुत ही पुराना शाल ओढ़ रखा था जिस पर बहुत सारे छोटे छोटे कागज के टुकड़े लगे हुए थे। उन पर बहुत सारे लोगों के नाम लिखे हुए थे।

उसके बहुत बड़े पंख थे और वह इतनी तेज़ भागता था कि वह एक पल में ही ऑखों से ओझल हो जाता था।

जब सिओना उसकी मॉ के घर में घुसी तो पहले तो वह काली बुढ़िया को देखते ही डर गयी। पर हिम्मत कर के उसने घड़ी के बोझ हटा लिये। उसने बुढ़िया को बताया कि वह उससे क्या चाहती थी।

सुनते ही बुढ़िया ने अपने बेटे को चिल्ला कर बुलाया। पर सिओना ने उससे कहा — "तुम चाहे कितना भी दीवार से सिर पीट लो और कितनी भी देर तक पीट लो पर तुम तब तक अपने बेटे को नहीं देख पाओगी जब तक ये बोझे मेरे हाथ में हैं।"

यह सुन कर बुढ़िया ने देखा कि वह तो छली गयी। तो उसने सिओना से कहा — "उन बोझों को वापस रख दो। तुम मेरे बेटे का रास्ता मत रोको क्योंकि किसी ज़िन्दा आदमी ने अभी तक ऐसा नहीं किया।

उन्हें छोड़ दो भगवान तुम्हारी रक्षा करे। मैं अपने बेटे के उस तेज़ाब[73] की कसम खाती हूॅ जिससे वह हर चीज़ को खुरचता रहता है कि मैं तुम्हें कोई नुकसान नहीं पहुॅचाऊॅगी।"

[73] Translated for the word "Acid"

सिओना बोली — "इस तरह से तुम समय बरबाद कर रही हो। अगर तुम चाहती हो कि मैं ये बोझे छोड़ दूँ तो तुम्हें इससे कुछ ज़्यादा अच्छा कहना पड़ेगा।"

"मैं उसके उन दाँतों की कसम खाती हूँ जो हमेशा ही धरती की चीज़ों को काटते रहते हैं।"

सिओना बोली — "यह सब कुछ नहीं क्योंकि मैं जानती हूँ कि तुम मुझे धोखा दे रही हो।"

हार कर बुढ़िया ने कहा — "ठीक है मैं उसके उन पंखों की कसम खाती हूँ जो सब जगह उड़ते हैं कि मैं तुम्हें उससे भी ज़्यादा खुशी दूँगी जो तुम सोच भी नहीं सकतीं।"

यह सुन कर सिओना ने वे बोझ छोड़ दिये। बुढ़िया के हाथ चूमे जिनमें से सीलन की और कोई खराब सी बू आ रही थी।

लड़की का यह अच्छा व्यवहार देख कर बुढ़िया ने कहा — "तुम इस दरवाजे के पीछे छिप जाओ। जब समय आयेगा तब मैं उससे कहूँगी कि वह तुम्हें बताये जो तुम जानना चाहती हो। और जैसे ही वह बाहर चला जाता है – क्योंकि वह एक जगह पर शान्ति से नहीं बैठता, तुम जा सकती हो।

पर तुम न तो उसको अपने आपको दिखाना और न सुनाना क्योंकि वह इतना खराब है कि वह तो अपने बच्चों को भी नहीं छोड़ता। और जब सब फेल हो जाता है तब अपने आपको खा जाता है और एक नया समय जन्म लेता है।"

सिओना ने वैसा ही किया जैसा बुढ़िया ने उससे करने को कहा था। लो समय तो जल्दी ही उड़ता हुआ और रास्ते में जो कुछ मिला उसे कुतरते हुए वहॉ वापस आ गया।

वह फिर वापस जाने को था कि उसकी मॉ ने सिओना ने जो कुछ भी उससे कहा था वह सब समय से कह दिया और उसको अपने दूध की कसम दी कि वह उन सब सवालों के जवाब सही सही दे दे।

हजारों विनती करने के बाद उसके बेटे ने कहा — "पेड़ को यह कहना कि आदमी लोग उसको कभी भी उतनी ऊॅची जगह नहीं दे सकते जब तक कि उसकी जड़ में खजाना दबा हुआ है।

चूहे को बोलना कि वह बिल्ली से कभी भी सुरक्षित नहीं रह सकते जब तक कि वे उसके पैर में घंटी न बॉधें जिससे यह पता चल जाये कि वह आ रही है।

चींटियों से कहना कि वे **100** साल तक ज़िन्दा रहेंगी अगर वे उड़ने के बिना रह सकें – क्योंकि जब चींटी की मौत आती है तो उसके पर निकल आते हैं।

व्हेल को बोलना कि वह हमेशा खुश रहे और समुद्री चूहे से दोस्ती कर ले जो उसको रास्ता दिखाता रहेगा और फिर वह अपने रास्ते से भटकेगी नहीं।

फाख्ताओं से कहना कि जब वह धन के खम्भे पर बैठेंगे तब वे अपनी पुरानी शक्ल पा जायेंगे।"

ऐसा कह कर समय वहॉ से उड़ कर अपनी जगह चला गया। और सिओना अपने छिपने की जगह से निकल कर बुढ़िया को धन्यवाद दे कर उससे विदा ले कर पहाड़से नीचे उतरी।

उसी समय सातों फाख्ता भी जो अपनी बहिन के पीछे ही लगे हुए थे वहॉ आ पहुॅचे। इतनी दूर तक उड़ते उड़ते वे थक गये थे तो वे सुस्ताने के लिये एक मरे हुए बैल के सींग पर बैठ गये।

जैसे ही वे वहॉ बैठे तो वे तो सुन्दर नौजवान के रूप में आ गये जैसे कि वे पहले थे। पर जब वे इस जादू की तारीफ कर रहे थे तो उन्हें ध्यान आया जो समय ने कहा था। उन्होंने तुरन्त ही उस सींग की तरफ देखा जो बहुतायत की निशानी थी तो वह तो धन का खम्भा था जिसके बारे में समय ने कहा था।

उन सबने अपनी बहिन को खुशी से गले लगा लिया और उसी सड़क से वापस जाने लगे जिससे सिओना वहॉ तक आयी थी। जब वे ओक के पेड़ के पास आये तो सिओना ने ओक को वही जवाब दे दिया जो समय ने उससे कहा था। सो पेड़ ने उनसे विनती की कि वे उसकी जड़ में से खजाना निकाल लें। क्योंकि उसी की वजह से उसके फलों की इज़्ज़त कम हो गयी है।

सातों नौजवानों ने एक फावड़ा लिया और उसकी जड़ से खजाना निकाल लिया। उसको उन्होंने आठ हिस्सों में बॉटा और अपने और अपनी बहिन में बॉट लिया ताकि वे उसे आसानी से ले

जा सकें। पर यात्रा और बोझे की वजह से वे बहुत थक गये थे सो वे एक हैज के नीचे सो गये।

उसी समय कुछ डाकू उधर आ निकले और उनको वहॉ पैसों की गठरियों पर सिर रखे सोते हुए देख कर उनके हाथ पैर एक पेड़ से बॉध दिये और उनका पैसा ले कर उनको रोने के लिये छोड़ कर वहॉ से भाग गये। वह पैसा जैसे उन्होंने पाया था वैसे ही उनके हाथों से निकल गया था।

पर उनकी ज़िन्दगी। अब उसमें किसी मिठास की आशा नहीं थी। वह अब अपनी भूख से मरने के खतरे में थे या फिर किसी जंगली जानवर के भूखे होने की वजह से।

जब वे अपनी इस बदकिस्मती का दुख मना रहे थे कि चूहा उनके पास आया। जैसे ही उसने समय का जवाब सुना तो इस सेवा के बदले में उसने उस रस्सी को काट दिया जिससे वे बॅधे हुए थे। अब वे आजाद थे।

कुछ दूर जाने के बाद उनको चींटी मिली। उन्होंने उसको भी समय का जवाब बताया तो उसका चेहरा पीला पड़ गया। सिओना ने पूछा ऐसा क्या हो गया जो वह इस तरह से दुखी हो गयी और पीली पड़ गयी।

तब सिओना ने उसको अपनी परेशानी और डाकुओं की अपने साथ खेली हुई चाल बतायी तो चींटी बोली — "कोई बात नहीं

शान्त हो जाओ। तुमने मेरी सहायता की है मैं तुम्हारी सहायता जरूर करूँगी।

तुम्हें पता होगा कि जब मैं अपना सामान जमीन के नीचे ले कर जा रही थी तब मैंने एक जगह देखी जहॉ ये लोग अपनी चीज़ें छिपाते हैं। इन लोगों ने एक पुरानी इमारत के नीचे कुछ गड्ढे बनाये हुए हैं जहॉ वे ये सब चीज़ें छिपा कर रखते है। इस समय वे लोग लोगों को लूटने के लिये गये हुए हैं तुम मेरे साथ चलो मैं तुम्हें वह जगह दिखाती हूँ। वहॉ से तुम अपना पैसा वापस ले सकती हो।"

सो वे सब कुछ टूटे फूटे मकानों की तरफ चल दिये। वहॉ पहुँच कर उसने सातों भाइयों को उस गड्ढे का मुँह दिखाया। इस पर जियानग्रैज़ियो जो सब भाइयों में बहादुर भी था उस गड्ढे में घुसा और अपना सारा माल ढूँढ लिया।

वहॉ से उन्होंने वह सामान लिया और वे फिर आगे समुद्र के किनारे की तरफ चल दिये। वहॉ पहुँच कर उनको व्हेल मिली। उन्होंने व्हेल को समय का बताया हुआ सन्देशा दिया।

जब वे सब उनकी यात्रा के बारे में बात कर रहे थे उन्होंने अचानक देखा कि डाकू उन्हीं की तरफ चले आ रहे थे। वे पूरी तरह से हथियारों से लैस थे। असल में वे इनके पीछे पीछे ही चले आ रहे थे।

डाकुओं को देख कर वे बोले — "ओह हम तो बिल्कुल गये। ये डाकू तो हथियारबन्द यहॉ तक चले आये हैं अब ये हमको बिल्कुल नहीं छोड़ेंगे।"

व्हेल बोली — "तुम सब डरो नहीं क्योंकि मैं तुम्हें इन सबसे बचा सकती हूॅ और इस तरह से तुम्हारे ऐहसान का बदला भी चुका पाऊॅगी। मैं तुम सबको एक सुरक्षित जगह ले जाऊॅगी।"

सिओना और उसके भाई दुश्मन को आया देख कर और पानी गले तक आया देख कर व्हेल पर चढ़ गये। व्हेल चट्टानों से बचती बचाती उनको नैपिल्स[74] ले गयी। पर वहॉ वह समुद्र उथला होने की वजह से रुकने से डरती थी।

सो उसने पूछा — "तुम लोग कहॉ चाहते हो कि मैं तुम्हें कहॉ उतारूॅ। अमाल्फ़ी के किनारे पर।"

जियान गैज़ियो बोला — "देख लो अगर और कोई जगह न हो तो वहॉ उतार देना। मैं अपनी जगह पर उतरना नहीं चाहता क्योंकि मासा के लोग तो गुड डे भी नहीं कहते और सौरैन्टो में चोर बहुत हैं। विको में वे कहते हैं कि तुम अपने रास्ते जाओ। और कास्टल ए मेयर[75] में तो वे यह भी नहीं पूछते कि तुम कौन हो।"

[74] Naples is an historical port town of Italy situated on its South-West- coast.

[75] Massa, Sorrento, Vico, Castel a Mare

तब व्हेल उनको खुश करने के लिये पलटी और उनको साल्ट लेक ले जा कर छोड़ दिया। वहॉ से उन्होंने जो उनको पहली नाव मिली उन्होंने वही नाव ले ली।

वे लोग अपने देश तन्दुरुस्त ठीक और अमीर बन कर लौट आये थे। उनके माता पिता उन सबको देख कर बहुत खुश हुए। इस सबका इनाम तो सिओना को ही जाता है। यह कहावत सच्ची ही है —

सबका भला करो जो कर सकते हो और भूल जाओ[76]

[76] इस कहावत को हिन्दी में कहते है "नेकी कर कुँए में डाल"

List of Stories of Six Swans Like Stories

1. Six Swans
2. Seven Ravens
3. The Twelve Brothers
4. The Twelve Oxen
5. Silent for Seven Years
6. The Wild Swans
7. 12 Wild Swans
8. 12 Wild Ducks
9. The Curse of the Seven Children
10. Udea And Her Seven Brothers
11. Magical Swan-Geese
12. The Seven Doves

Books in "One Story Many Colors" Series

1. Cat and Rat Like Stories (20 stories)
2. Bluebeard Like Stories (8 stories)
3. Tom Thumb Like Stories (12 stories)
4. Six Swans Like Stories
5. Three Oranges Like Stories (9 stories)
6. Snow White Like Stories
7. Sleeping Beauty Like Stories
8. Ping King Like Stories – 3 parts
9. Puss in Boots Like Storie (15 stories)
10. Hansel and Gratel Like Stories (4 stories)
11. Red Riding Hood Like Stories
12. Cinderella Like Stories in Europe (14+11 stories)
12. Cinderella in the World (21 stories)
13. Rumplestiltuskin Like Stories (22 stories)
14. Ali Baba and Forty Thieves Like Stories (4 stories)
15. Crocodile and Monkey Like Stories
16. Lion and Man Like Stories (14 stories)
17. Pome and Peel Like Stories (6 stories)
18. Soldier and Death Like Stories
19. Tees Maar Kahan Like Stories (11 stories)
20. Lion and Rabbit like Stories
21. Frog Princess Like Stories (7 stories)

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। उसके बाद **1976** में भारत से नाइजीरिया पहुँच कर यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस कर के एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया। उसके बाद इथियोपिया की एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो की नेशनल यूनिवर्सिटी में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला।

तत्पश्चात **1995** में यू ऐस ए से फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स कर के **4** साल एक ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में सेवा निवृत्ति के पश्चात अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। सन **2021** तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से ये लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचायी जा सकेंगी।

विंडसर, कैनेडा
2022